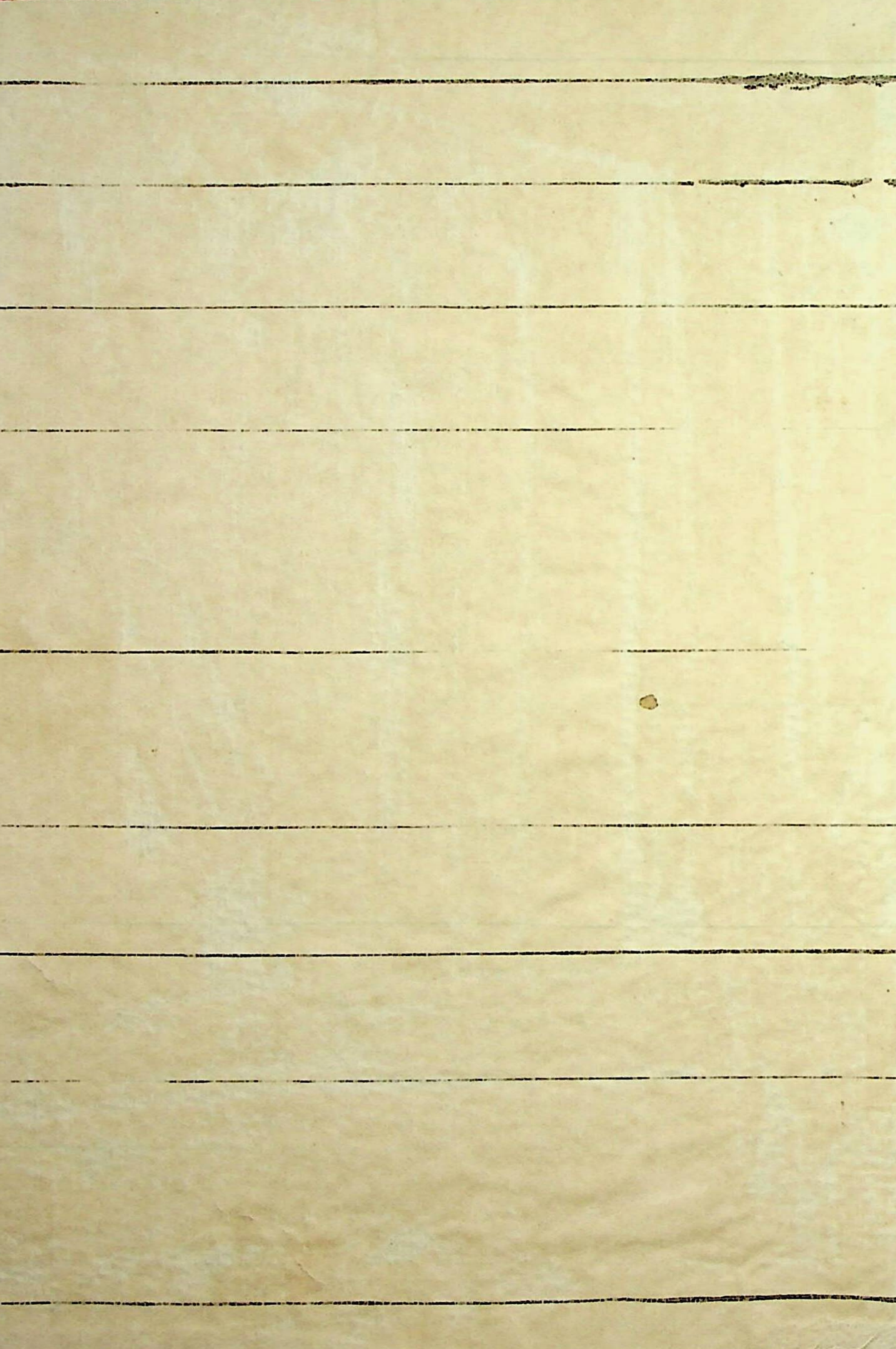
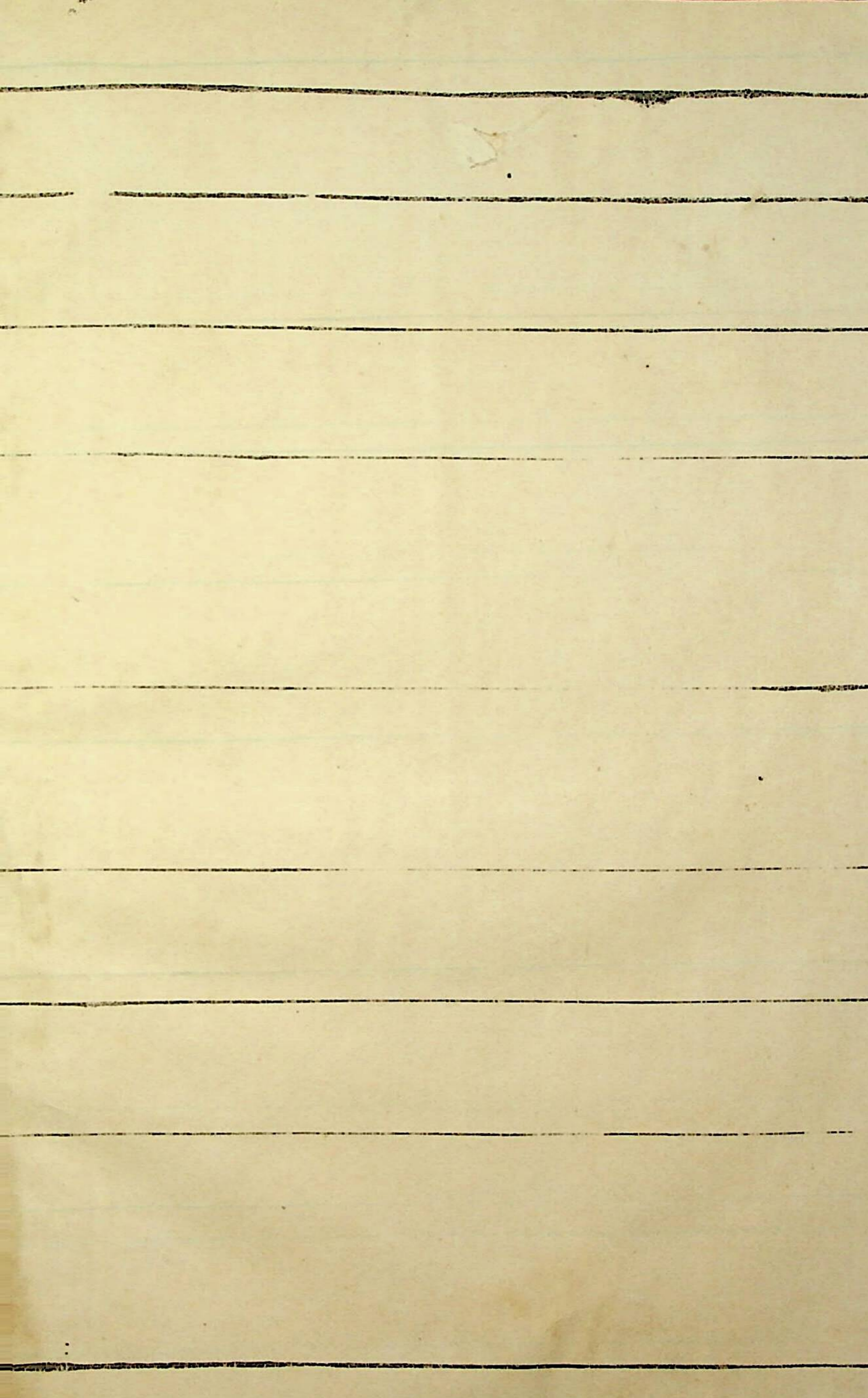
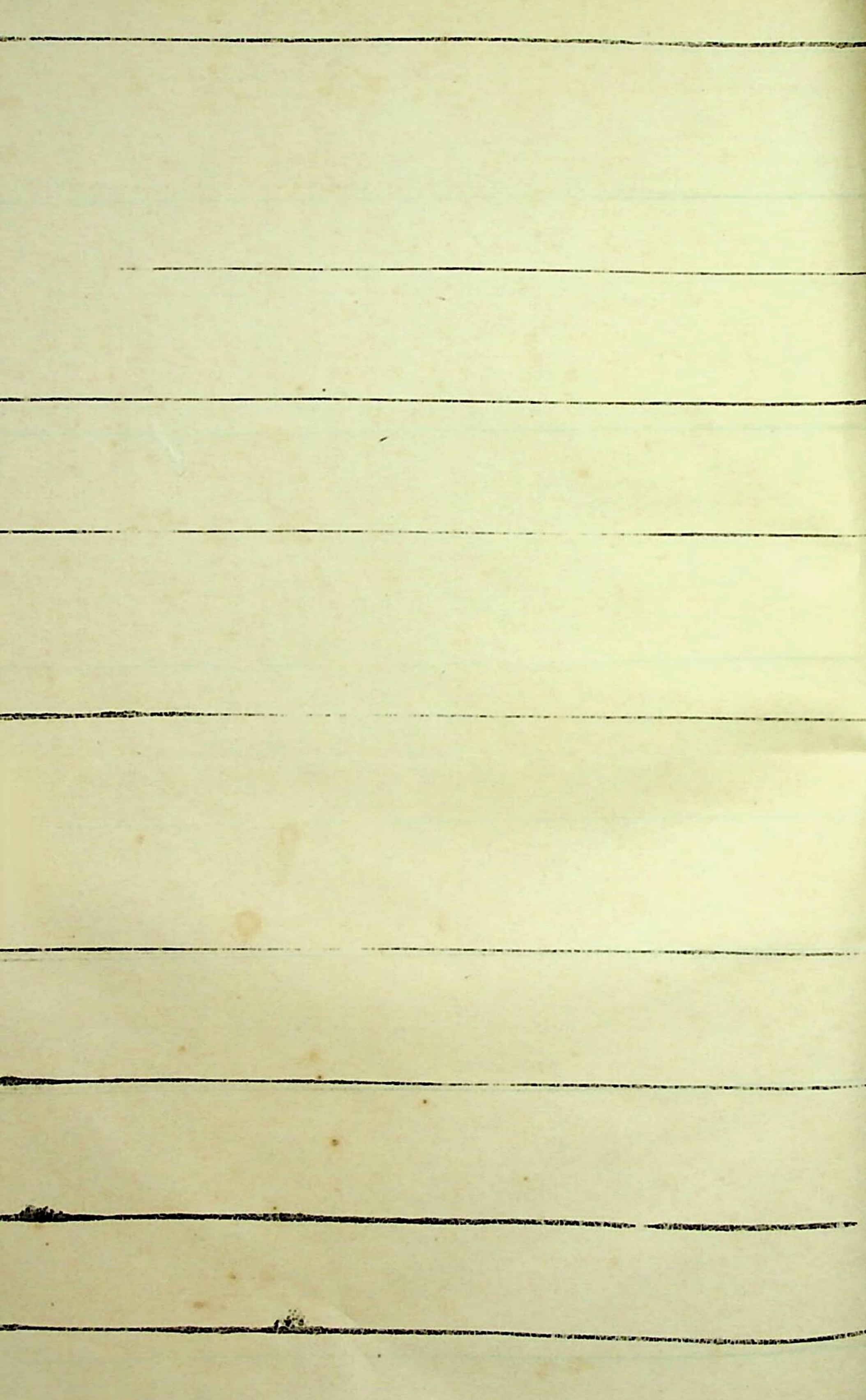
उ-3

महासिद्ध सावर तंत्र







अथ दिशाशूल ॥

सोम शनीचर पुरुब न जैये । गुरुदिन दखिण अवशि बरैये
रबि भृगु नहिं पछाँह पग धारै । उत्तर बुध मंगल निरवारै ॥

पूर्व
चन्द्रवार शनीचर

उत्तर
मंगल बुध

दो॰ दिशाशूलबाँयेंकरै
पीठयोगिनीराहु ।
सन्मुखचन्द्रहिकरिचलै
ताहिहोइबड़लाहु ॥

दक्षिण
बृहस्पति

शुक्रवार रविवार
पश्चिम

अथ नक्षत्र ज्ञानम् ॥

अश्विनी१ भरणी२ कृत्तिका३ रोहिणी४ मृगशिरा५ आर्द्रा६ पुनर्वसु७पुष्य८श्लेषा९ मघा१० पूर्वाफाल्गुनी११उत्तराफाल्गुनी १२ हस्त१३ चित्रा१४ स्वाती१५ विशाषा१६ अनुराधा१७ ज्येष्ठा१८ मूल१९ पूर्वाषाढ़२० उत्तराषाढ़२१ अभिजित२२ श्रवण२३ धनिष्ठा २४ शतभिष२५ पूर्वभाद्रपद्२६ उत्रभाद्रपद२७ रेवती२८ ॥

अथ योगचक्रम् ॥

विष्कुंभ १	प्रीति २	आयुष्मान ३	सौभाग्य ४	शोभन ५	अतिगंड ६	सुकर्मा ७
धृति ८	शूल ९	गंड १०	वृद्धि ११	ध्रुव १२	व्याघात १३	हर्षण १४
वज्र १५	सिद्ध १६	व्यतीपात १७	वरियान १८	परिघ १९	शिव २०	सिद्धि २१
साध्य २२	शुभ २३	शुक्र २४	ब्रह्म २५	ऐन्द्र २६	वैधृति २७	०

राशि	स्वामी	अक्षरों का स्वामी नक्षत्र		
मे०	मं०	अश्विनी के चारचरण चू चे चो ला	भरणी चार चरण ली लू ले लो	कृत्तिकाका एकचरण अ
वृ०	शु०	कृ० केशेषतीनचरण इ उ ए	रोहिणीकेचारिचरण ओ वा वि वू	मृगशिरा केदोचरण वे वो
मि०	बु०	मृ० के शेष दोचरण क की	आर्द्रा के चार चरण कु घ ङ छ	पुनर्वसुकेतीनचरण के को ह
क०	चं०	पुनर्वसु का १ चरण ही	पुष्य के चार चरण हु हे हो डा	श्लेषा के चारचरण डी डू डे डो
सिं	सू०	मघा के ४ चरण मा मी मु मे	पूर्वा के ४ चरण मो टा टी टू	उत्तरा को१ चरण टे
कं०	बु०	उत्तरा के ३ चरण टो प पि	हस्त के ४ चरण पू ष ण ठ	चित्रा के २ चरण पे पो
तु०	शु०	चित्रा के २ चरण र री	स्वाती के ४ चरण रु रे रो ता	विशाषा के३ चरण ती तू ते
वृ०	मं०	विशाखा का १ चरण तो	अनुराधा के ४ चरण न नी नू ने	ज्येष्ठा ४ चरण नो य यि यू
ध०	वृ०	मूल के ४ चरण ये यो भ भी	पूर्वाषाढ़ के ४ चरण भू ध फ ढ	उत्तराखाड़ को१च० भे
म०	श०	उत्राषाढ़ ३ चरण भो जा जी	श्रवण के ४ चरण खि खू खे खो	धनिष्ठाके २ चरण ग गी
कुं०	श०	धनिष्ठा के २ चरण गू गे	शतभिष के ४ चरण गो सा सी सू	पूर्वभाद्र ३ चरण से सो दा
मी०	वृ०	पूर्वभाद्र को १ चरण दी	उत्तरभाद्र के ४ चरण दू थ झ ञ	रेवती के ४ चरण दे दो च ची

अथ राशिगत चन्द्र दिशा वास॥

मेष सिंह धनु पूरब शशी। मिथुनतुला घट पश्चिम बसी॥
मकर सुता बृष दक्षिण रहै। कर्क मीन अलि उत्तर गहै॥

अथ योगिनी विचार॥

नौमि परेवा पूरब वासा। तीज एकादशि अनल कि आसा॥
पंचिमि त्यारसि दक्षिण रहै। चौथि दुवादसि नैऋत गहै॥
चतुर्दशी छवि पश्चिम आवै। सप्तमि पंद्रसि वायव्य जावै॥
दसमी द्वितिया उत्तर धाम। अमा आठ ईशान विराम॥

पू०	आ०	द०	नै०	प०	व०	उ०	ई०	दिशा.
९।१	३।११	१३।५	१२।४	१४।६	१५।७	१०।२	३०।८	तिथि

अथ शकुन बिचार॥

हंस बृक्षपर बैठा शब्द करै तोशुभ बृक्षके सिवाय और किसी चीज पर बैठा हो और बोलै तो भी शुभ जानिये जो पृथ्वीपर बैठि एक-बार बोलै तो चोर भयहो जो दूसरा शब्द करै तो धन मिलै जो तीसरा शब्द करै तो भयहो और जो चौथा शब्द करै तो संग्राम देखै पांचवां शब्द करै तो उत्तम है।

बगुला को शकुन॥

चलते समय ग्रामके किनारे किसी जलाशयमें बाईं ओर बैठाहोय और बावां पैर उठाकर बारे दहिने पैर पर खड़ा होय तो लक्ष्मी प्राप्तहोय आकाश में उड़ता हुआ शब्द करै तो कन्या लाभ होय जोभय से शब्द करै तो मार्ग में चोर लगैं—ग्राम से निकलते हुये सन्मुख अथवा दाहिने चकवा चकई देखिपड़ैं तो लाभ होय-ग्राम से निकलते दाहिने अथवा सामुहें सारस को जोटा

आमुहें सामुहें बैठा देख पड़े तो उत्तम है मित्र को दर्शन और लाभ होय अरु बायें शब्द करै तो लक्ष्मी मिलै और राजा प्रसन्न होय— दोनों सारस एकही साथ शब्द करैं तो कन्या या पुत्र लाभहो — चलते समय ढेंक बायें शब्द करे तो लाभ होय पीठ पीछे से आगे आनकर शब्द करे तो अच्छा नहीं—

चलते समय टिटिहरी दाहिनेहो तो शुभ है बायें अशुभ है चलते समय जल कुकरी पानी में बैठीहुई बोले तो बहुतकष्ट मिलेकिसी बृक्ष के ऊपर अथवा पृथ्वी पर बैठे हुई बोले तो शुभ संतोष होय—

चलते समय सुआ बाईं ओर बोले तो भय उपजावै दाहिने बोलै तो शुभहै सूखेहाड़ पर बैठा हुआ बोलै अथवा आगे बोलै तो महा भयंकर है--

चलते समय सारिका सामुहें बोलै तो लड़ाईहो पीठपीछे शब्द करे तो मित्र मिलै दाहिने बोलै तो स्त्री संगमहो सूखेकाठ पै बैठि बोलै तो कष्ट मिलै—

चलते समय मोर पहिला शब्दकरै तो लाभहोय दूसरे शब्द में स्त्री मिलाप तीसरे शब्द में रोजगार में लाभ होय चौथे शब्द में राजभय चोर भय और पांचवें शब्द में सर्व सिद्ध जानिये जो आनंद से दाहिने अथवा सन्मुख बैठे देखि परै तो महामङ्गलहोय—चलते समय बुलबुल दाहिने बोलै तो लाभ होय बायें अथवा पीठ पीछे बोलै तो महाभय जानिये—चलते समय चील्ह सन्मुख बोले अथवा देखपड़े तो धन लाभ होय जो सांप व मांस व खाल बृक्ष पर लिये बैठी हो तो सर्व सिद्धि जानिये

चलते समय घुघुवा बायें बोलै तो सिद्धिहोय दाहिने भय उपजावै पीठपीछे बोलै तो बैरी बश्य होय जो बरगद के बृक्षपर बैठा बोलै तो दुःख चिंताको नाशहो जो दरवाजे पर तीन दिनतक बोलै तो चोर द्रव्य लेय—

चलते समय कपोत दाहिने चुनत देखे तौ यात्रा सफल हो और जो बायें चुनत देखिपड़े तो बंधु या पुत्रका वियोगहोय धन हानि करे पीठ पीछे देखै तो सिद्धि होय—

चलते सयम मुर्गा बायें शब्दकरै तो धन लाभ हो दाहिने और सन्मुख अमंगलहै—

चलते समय हाथी सन्मुख देख पड़ै तो कार्य सिद्धि होय और जो दोनों दातों पर शूंड़ रक्खे होय तो महासिद्धि जानिये मस्तक पर शूंड़ धरे देखे तो संतोष जानिये और जो बायें दाँत पर शूंड़ धरे देख पड़ै तो लक्ष्मी प्राप्त होय—

चलते समय जो घोड़ा बायों पैर धरती में मारै तो सुख सिद्धिकरैं जो दाहिनी बाजू दाँतसे खुजलावे तो लाभ होय और सन्मुख हिहनावे तो महा मंगल करै ॥

चलते समय गदहा बायें शब्द करै तो अच्छे मिष्ठान्नादिक भोजन मिलै जो पीठ पीछे वा दाहिने बोलै तो धनहानि होय या रोग होय खूँटा से बँधा देख पड़ै तो बंधु मिलाप हो--जो इन्द्री काढ़े गदही पर चढ़ते देख पड़ै तो सर्व सिद्धि होय ॥

चलते समय बैल बायें पैर से या बायें सींग से मट्टी खोदता देख पड़ै तो सुख सिद्धि जानिये और जो बैल भैंसा लड़ते देख पड़ै तो रोग मृत्यु जानिये ॥

चलते समय गाई बछवा सहित देख पड़ै तो कार्य सिद्धि जानिये और जो बायें बाँ शब्द करै तो महालाभ होय जो सन्मुख देख पड़ै और बछवा को पियाती होय तो राज्य लाभ होय॥

यात्रामें ऊंटबायें शब्दकरै तो धनलाभहोय दाहिने बोलैतो भयहोय

चलते समय बिल्ली मुखमें माँस लिये देखपड़ै तो अधिक लाभ होय जो दो बिलाव लरते देखपड़ै तो महाक्लेश होय—

यात्रा में बाँदर आनन्द कौतुक करते बायें दिखाई पड़ै तो महा शुभ जानिये—

चलते समय हरणा दाहिने शुभ और बायें अशुभहै और जो करसायल बायें होय तो दुःख मृत्यु होय फिर जो छींके कांख खुजलावै लेंड़ी करै तो महा अशकुन है—

चलते समय कुत्ता बांईकोष चाटता होय तो बड़ो लाभ होय— जोमुखमें हाड़ मांस लिये सन्मुख आता देखपड़े तो लक्ष्मी प्राप्तहोय नख जीभ या दांतसे बावाँ अंग खुजलाता होय तो सर्व सिद्धिहोय- जो कुतिया से लुरखुरू करत देख पड़ै तो बैरी को भय उपजै-- ऊँचे चढ़िकै कोषि या माथा खजुआवै तोअच्छा है—गांव से निकलत बायें शुभहै--

चिरवा आधीरातके समय दाहिने बोले तो शुभहै और गो धूरि के समय बायें अच्छा है—

भौरा फूल पर बैठे देख पड़ैं तो सर्व कार्य सिद्धि होय सन्मुख होय तो भी शुभ है जो दो लड़ते हुएपास आजावैं तो बुराहै ॥

चलते समय नीलकंठ बांई ओर ते दाहिनी ओर को आवे तो शुभहै और जो दाहिने ते वायें जाय तो अच्छा नहीं हैजो फिरकिराय तो प्राण हानि होय —

गांव से निकल ते स्यार को शब्द वायें अच्छा है और पैठते समय दाहिने शुभहै- दक्षिण पश्चिम के कौने में बोलै तो निर्भय कल्याण हो- उत्तर के कोण में बोलै तो निष्फल जानिये-

कन्या, गाय, भैंस, जलती हुई अग्नि, पालकी, दो ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, बैल, दो घट भरे लिये स्त्री, घी, मछली, मांस, मुर्दा, फौज, चांदी, ये सब आते जाते समय शुभहैं-

तेल मट्ठा सांप चौगड़ा तेली ब्राह्मणी ब्रह्मचारी अकेली रांड़ स्त्री एक ब्राह्मण ये यात्रामें मिलैं तो अशुभ जानिये-

अथ काल बास ॥

दो० रवि उत्तर शशि बायु दिशि पश्चिम भौम कराल ।

बुध नैऋत दक्षिण गुरु अग्निदिशा भृगुकाल ॥
शनि वर्जित पूरुब सदा गये अमंगल होय ।
चलिये दिवस बराय ये सदा सुमंगल सोय ॥

आसनपरबैठनेकी बिधि ॥

मंत्र जपादि पूजा पाठ में बहुत प्रकार के आसनों का नियम है जिस काम के लिये जैसी क्रिया करना चाहै उसी के अनुसार आसन ग्रहण करै जैसे पुष्टि कर्म में पद्मासनसे बैठे, शान्ति कर्म स्वस्तिकासन विद्वेषण में कुक्कुटासन उच्चाटन में अर्द्धस्वस्तिक मारण और स्तम्भन करने को विकटासन और वशीकरण में भद्रासनसे बैठे॥

वशीकरण में मेढ़ा के चर्मका आसन, आकर्षणमें मृगचर्म—उच्चाटन में ऊंट चर्मासन—विद्वेषणमें गज चर्मासन—मारणमें काले कम्बलका आसन चाहिये शान्ति कर्म के लिये कुशासन श्रेष्ठहै काष्ठका आसन सब कामोंके लिये निष्फल है ॥

शुभ कर्म में पूरुब और उत्तर मुख करके बैठना शुभ है और दुष्ट कर्म में दक्षिण और पश्चिम शुभहै ॥

प्रयोग ॥

बन्धन, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण और संकीर्ण कर्मकी सिद्धि के लिये हुँपद का प्रयोग करै छेदन में फट् पद का जप करै, अरिष्ट और ग्रह निवारण में हुँफट्, पुष्टि आयन और बोधन में वौषट् अग्नि कर्म तथा देव कर्म में स्वाहा या नमः शब्द का जप करना चाहिये—

दिन और तिथि बिचार॥

मारण उच्चाटनादि कर्म कृष्णपक्ष में शनिश्चर मंगल या इतवार अष्टमी चतुर्दशी प्रतिपदादि में प्रारंभ करना श्रेष्ठ शीघ्र सिद्धिदायकहै और देव पूजन और शान्ति कर्मोंमें बृहस्पतिशुक्रवार और

सोमवार में पंचमी दशमी त्रयोदशी सहित प्रारंभकरना शुभ है ॥

मन्त्रों का लिंग निर्देश ॥

स्त्रीलिंग पुलिंग और नपुंसकलिंग से तीन प्रकार के मंत्र होतेहैं यथा वन्ही जायान्त मंत्र स्त्रीलिंग है जिसमंत्र के अन्त में नमःहै वे नपुंसक लिंग हैं और हुंफटवाले पुलिंग हैं इनमें से वशीकरण और शान्ति कर्म मे पुल्लिंग क्षुद्र क्रियाओंमे स्त्रीलिंग और इन से पृथक् कर्मों मे नपुंसक जाति के मंत्रो का प्रयोग करना चाहिये ॥

कुंभ विधान ॥

शान्ति कर्म में नवरत्न युक्त सुवर्ण का घट या ताँबे का घट स्थापित करे- मारणादि में लोहे का कलश, उच्चाटन, वशीकरणादि में मट्टी का घटऔर फिर सब कर्मों में ताँबेही काश्रेष्ठहै॥

माला निर्णय॥

वशीकरणादि मंत्रो को हीरे की माला से आकर्षण मे गजमुक्ता की माला से मारण उच्चाटनादि मंत्रो को कालीऊन की मालासे इनसे इतर सर्व कार्यों में रुद्राक्ष की माला उत्तम है अर्थ सिद्धि के लिये स्फटिक अथवा मूँगाओंकी माला श्रेष्ठ है।

माला गूँधने का नियम ॥

शान्ति और देवकर्म में कमल की तन्तु का डोरा बनाकरगूंधे मारणादि में ऊर्ण के डोरामें औ॰ २ सब कार्यों मे रुईकासूत्रश्रेष्ठ है

दानों की संख्या ॥

मोती और स्फटिक आदि की माला २७ या ५२ दानों की गूँधना चाहिये और मूँगा और रुद्राक्ष की मालामें १०८दानाश्रेष्ठ हैं

अँगुलियों का नियम ॥

शान्ति कर्म तथा स्तंभन और वशीकरण में तर्जनी से फेरे

आकर्षण में अँगूठे और अनामिका से विद्वेषण और उच्चाटन में अँगूठा और तर्जनी से और मारण में कनिष्ठा और अँगूठे से माला के दाने फेरना श्रेष्ठ है ॥

मंत्र भेद ॥

मंत्र तीन प्रकार अर्थात् वाचिक १ उपांशु२और३मानसहोते हैं जिसमंत्र के उच्चारण को लोग सुनते रहैं वह वाचिक होताहै जिस को कोई दूसरा न सुनै और ओठहिलते रहैं उसे उपांशु कहते हैं· और जिसके उच्चारण में दांतओंठ कुछ न हिलैं उसे मानस कहते हैं अभिचार में मंत्र को वाचिक रीति से जपना चाहिये-शान्ति और पुष्टि में उपांशु और मानस मंत्र का जप मोक्ष के लिये करना चाहिये ॥

हवन बिधान ॥

शान्ति कर्म में तिल घी दूध और आमकी लकड़ी से हवनकरना चाहिये—पुष्ट कर्म में घी और बिल्वपत्र का हवनकरै—लक्ष्मी बृद्धि के लिये तिल मिश्रित खीर और मेवा आदि का हवनकरै सुख संतान के लिये अमरफल तिल तंडुल और घी का होम करै आकर्षण में चिरौंजी और बिल्वफल का हवन करै बशीकरणमें राई और आकपत्र उच्चाटन में धतूरफल और मारण में पीले सरसों और तैल का हवन करना चाहिये ॥

होम मुद्रा ॥

मुद्राहीन आहुति को देवता ग्रहण नहीं करते इसलिये मुद्रायुक्त होमकरना चाहिये— मुद्राहीन हवन करने से कार्य की सिद्धि नष्टहोकर कर्त्ता स्वयम् भ्रष्टहोजाता है होममें १ शूकरी २ हंसी और ३ मृगी यह तीन प्रकार की मुद्रा होतीहैं—यथा·जोहाथको सकोड़ कर आहुति डाली जाती है उसे शूकरी मुद्रा कहते हैं जो कनिष्ठिका को छोड़कर तीन अँगुली और अँगुष्ठ सहित

आहुति डाली जाती है उसे हंसी मुद्रा कहते हैं जो कनिष्ठा और तर्जनी के योग से आहुति डाली जाती है उसे मृगी मुद्रा कहतेहैं

अथ हुदहुद पक्षी के गुण ॥

जो कोई हुदहुद की चुटिया और दोनो आँखें तावीज करके रक्खे तो जो कोई उसको देखै वह परममित्र समझै और हुदहुद की दाहिनी बाज़ू अपने पास रक्खे तो लड़केवालों से जुदा न होवै और जो कोई पुरुष लड़केवालों से जुदा हुआ चहै तो दोनों बाज़ू एकत्र कर रक्खे और जो कोई हुदहुद की जीभ अपने पास रक्खै तो दुश्मनों की जीभ बंद होजाय और जादूगर की जादू चुगुल की चुगली तथा किसी प्रकार का यंत्र मंत्रादि उपचार उसपर असर न करै और हुदहुद की जरासी जबान जिसको खिलादे वह हकलाने लगै जब भून के फिर खिलावै तो अच्छा होय- जिसकी दोस्ती में फरक डालना हो तो उन दोनों के दो दो नाम लिखकर एक दूसरे में मिलाकर और हुदहुद का पित्ता कागज में मलै फिर वही कागज दो नाम के आगमें जला देवै तो परस्पर विरोध होजावै—और जिससे दोस्ती कराना चाहै तो थोड़ासा हुदहुद का कलेजा पान में रखकर खिला देवै तो तुरंत वश होजावै और बिगड़े हुए स्नेहको फिर कराना चाहै तो हुदहुद के खून से दोनों के नाम लिखकर पहिले थोड़ासा इसबंद आगमें डाले उसके पीछे दोनों नाम डाल देवै तो फिर हित होजाय--हुदहुद के खून से उसी की खाल पर यह यंत्र लिखकर ताँबे के तावीज़ में मढ़ाकर कमर में बाँध कर स्त्री प्रसंग करै तो जब तक वह यंत्र न खोलैगा स्खलित न होगा दिवाली के दिन हुदहुद की आँखें

६३	६३	६३	६३
६	१	८	
६३ ७	५	३	६३
६३ २	९	४	६३
६३	६३	६३	६३

निकाल कर सुरमामें मिलाकर आँखमे लगावैतो सबदुनियाँउसीको देखे- अगर किसी का मित्र किसी बंद जगह में हो तो हुदहुद के पानी से यही यंत्र लिखकर तावीज में मढ़ाकर धोकर पिलाय देवे तो तुरंत निकल कर आमिलै- खेतमें कीड़ा या चौखरा लगा हो तो हुदहुद के खून से हिरन की खाल पर उपरोक्त यंत्र लिखकर खेत में गाड़ देवे तो कीड़ा दूर होजावे ॥

अगर किसी को दीवाने या विषहिले कूकुर ने काटा हो और पेट में पिल्ला पड़गये हों तो हुदहुद का थोड़ा मांस हर्दी में मिलाकर खिला देवे तो पिल्ले पेशाब की रस्ते बाहर गिर पड़ैं ॥

उपरोक्त यंत्र हुदहुद के खूनसे भोज पत्र पर लिखकर अपनी तलवार में बांधे तो दुश्मन की तलवार म्यान से नहीं निकलैगी और अगर निकलैगी तो लगैगी नहीं ॥

जो आदमी का या घोड़े का पेशाब बंद होगयाहो तो हुदहुद की हड्डी कलेजे के पास जलावे तत्काल पेशाब खुलजावे ॥

जो आदमी की या घोड़े की नाक से खून बहता होय तो हुदहुद की चुटिया का पर लैके जला कर धूनी देवै तत्काल खून बंद होजावे ॥

जो किसी के भूत लगा हो तो हुदहुद की चुटिया का एक पर जला कर शहद में मिलाकर चटा देवै तत्काल भूत उतर जावै ॥

किसी आदमी वा घोड़े के किसी जगह जख्म हो गया हो या नासूर होगया हो तो हुदहुद की चर्बी गर्म करके लगा देने से तत्काल अच्छा होजावे ॥

किसीने बहुत बड़ा अपराध अर्थात् किसी को मार भी डाला हो तो उपरोक्त यंत्र मृगचर्म पर हुदहुद के रक्त से लिखकर मोम के बीच लपेटकर अपने पास ले मालिक या हाकिम के सन्मुख जायगा उसी वक्त उसकी सजा मुआफ की जायगी ॥

किसी पुरुष या स्त्री को वश किया चाहै तो उसके शीशके सात

बार लेकर सातों में सात २ गाठी देय फिर हुदहुद के खून से कागज पर उपरोक्त यंत्र लिख उसी में सातौ बार धरकारे बकरे की खाल में मढ़ा कर अपने दाहिने भुजा पर बांधै तो तत्काल. बश होय ॥

इति ॥

अथ पंचदशीयंत्र विधान ॥

ब्राह्मन खाकी

८	१	६
३	५	७
४	९	२

क्षत्री बादी

८	३	४
१	५	९
६	७	२

बैश्य आबी

२	७	६
९	५	१
४	३	८

शूद्र आतसी

४	९	२
३	५	७
८	१	६

एतवार के दिन आकपत्र पर आक के दूध और स्मशान भस्म सों लिखि चितामें डारै जिसके नाम से मंत्र जपै सो विक्षिप्त होय

सोमवार को श्वेत दूर्बा के रससे भोजपत्र पर लिखकर दाहिने भुजा या कंठ में धारै जिस सभा में जाय वह सभा बश होय ॥

भौमवार को काक के रक्त और पंख से लिखै जाके द्वार गाड़ै तौ उच्चाटन होय ॥

बुधवार को नागकेसर गोरोचन सरसों के तेल में मिश्रित करि नरकपाल पर लिखि काजल पारै और नेत्रों में लगावै जगत मोहन होय ॥

गुरुवार को अगवारी हरदी दारुहरदी गोरोचन तगर गो घृत से लिख आसन के नीचे दाबै आकर्षण होय ॥

शुक्रवार को कपूर बच्च कूट मधु से लिखै तो स्त्री देखतेही वश्य होय ॥

शनिबार को चिता काष्ठ लेखनी से लिखै मुर्गा के रुधिर से स्मशान में गाड़ै जिसके नाम सहित उसकी मृत्यु होय ॥

धर्मार्थ काम मोक्ष के लिये बट बृक्षके नीचे पृथ्वी पर यंत्र लिखै षटसाला लेखनी से कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी में १०००० दश हजार तो सब कामना पूर्णहोय ॥

अनार की लेखनी से पृथ्वी पर दश हजार लिखै तो बंदी मोक्ष होय और पांच हजार नित्य नियम से लिखै तो दरिद्र दूर होय॥

बेलपत्र के रस हरतार मटसिल से विल्व लेखनी से पृथ्वी पर दो हजार नित्य लिखै तो बाचा सिद्ध होय ॥

आकपत्र पर आक की लेखनी से १०८ यंत्र प्रति दिन लिख कर बबूर की डार में बांधै शत्रु को नाश होय-

अजाझारे की लेखनी और उसी के रस से भोज पत्र लिखकर बांधै तो नित्य ज्वर इकतरा तिजारी चौथिया दूर होय

स्मशान भूमि में लोह लेखनी से शत्रु के नाम सहित लिखै तो शीघ्र नाश होय ॥

अथ मंत्र। ओं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा १ ओ ह्रीं पंचदशी सर्व्व सिद्धिं दर्शय स्वाहा २ ओं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं चामुंडा देव्यै नमः ॥

लोह की लेखनी से पृथ्वी पर प्रतिदिन१०८यंत्र लिखि मिटावै तो शत्रु नाश होय- अर्क पत्र में लिखकर शत्रु के नाम सहित दरियाव में डालै तो उच्चाटन होय- शुभ कार्य के लिये शुक्लपक्ष

और अशुभ कार्य के लिये कृष्णपक्ष में आरंभ करै—मेख सिंह धन राशिवाले को आतसी और बृष कन्या मकर वाले को खाकी और मिथुन तुला कुंभ राशि वाले को बादी और कर्क, बृश्चिक मीन राशिवाले को आबी यंत्र लिखना चाहिये जब तक लिखै तब तक ब्रह्मचर्य रहै मूंग की दाल चाँवल खाय ॥

लक्ष्मी प्राप्ति को २००० प्रति दिन रोग नाश होने को ६००० ईश्वर या देवता प्रसन्न करने को ४००० विद्वेष को २००० बशीकरण को ३००० गई बस्तु मिलने को ५००० सुख मिलने को २००० उद्योग लगने को ४००० बंदीमोचन को६०००बिदेशी घर आने को २००० बंध्या के पुत्र होने को ५००० मित्र मिलाप को ३००० राजा प्रसन्न करने को ४००० शुभ कार्य को उत्तर ओर और अशुभ कार्य को दक्षिण ओर मुख करके बैठै खाकी अष्टगंध से बादी लाल चंदन से आबी स्याही से आतसी नील और भीमसेनी कपूर से लिखना चाहिये-

अथ बांदावली ॥

अश्वनी नक्षत्र में आंवरा को बांदालावै ऋतुवती स्त्री को देय तो गर्भ रहै इतवार के दिन ऊंटकटीला की जर लेकर बालक के हाथ में बांधै तो रोउनी दूर हो — पुनर्बसु नक्षत्र में अनार को बांदा पावै तो बैपार में बृद्धि हो—भरणी नक्षत्र में कांस को बांदा लाकर अपने भंडार में राखै तो कोई पदार्थ खाली न हो पुनर्वसु नक्षत्र में कचनार को बांदा लाकर अपने हाथ में बांधे तो जो देखै सो बश हो रेवती नक्षत्र में धव का बांदा लाकर कंठ में धारण करे तो राजा सन्मान करै अनुराधा नक्षत्र में बेरी को बांदा पावै और बैरी के मकान में खोंस देवै तो मकान जल जाय हस्त नक्षत्र में श्वेत कटाई की जर लेकर पाग में रखकर जिस सभा में जाय वह मोहित हो पुनर्बसु में इमिली का बांदा बाँधकर संग्राम में जाय तो जीत हो अनुराधा नक्षत्र में नीम को

बाँदा लेकर घर में राखै तो संपतिबढ़ै--बिशाखा नक्षत्र में मुंडी की जर लाकर पासरक्खे तो सबकोई प्रीतिकरै रेवती नक्षत्र में महुवा का बाँदालाकर दूधमें पिआवै तो प्रेतछुटै- श्लेषा नक्षत्र में महुवा का बाँदा लेकर दूध में बाँटकर स्त्रीको पिलावै तो पुत्रहोय और खेतमें गाड़ै तो कीरा न लगै- पुष्यनक्षत्र में पलासको बाँदा पावै तो कंठमें धारण करने से शास्त्रबाद में जीतै—स्वाती नक्षत्र में चमेली का बांदा लेकर दाहिने भुजा पर बांधकर जुआ खेलै तो जीतै—

अथ स्वरोदय ॥

दो० । नमो नमो शुकदेवजी करौं प्रणाम अनन्त ।
तुम प्रसाद स्वरभेद को चरणदास बरणन्त ॥ १ ॥
पुरुषोत्तम परमातमा पूरण विस्वा वीस ।
आदि पुरुष अविचल तुहीं तोहिं नवाऊं शीस ॥ २ ॥

कुण्डलिया

क्षर अक्षर सों कहत हैं अक्षर सोहं जान ।
निर अक्षर आशा रहित ताही को मन मान ॥
ताही को मन आन रात दिन सुरति लगावै ।
आपा आप बिचारि और नहिं शीश नवावै ॥
चरणदास माथि कहत हैं अगम निगम की सीख ।
यही बचन ब्रह्म ज्ञान को मानो विस्वा बीस ॥ ३ ॥
ओं वं सों काया भई सोहं सोमन होय ।
निर अक्षर श्वासाभई चरणदास भल जोय ॥
चरणदास भल जोय खैंचि मन अंतह राखै ।
क्षर अक्षर है स्वई भेद सो दुबिधा नाखै ॥ ४ ॥
दरशै एकहि एक भेष यह सबै तिहारो ।
डार पात फल फूल मूल सो सबै निहारो ॥ ५ ॥
श्वासासे सोहं भयो सोहं सो ओंकार ।
ओंकार से रस भयो साधो करो बिचार ॥

साधो करो विचार उलटि क्षर अपनै आवै ।
घट घट ब्रह्मस्वरूप समिटि के तहां समावै ।
चारि बेद को भेद यह अरु गीता को जीव ॥
चरणदास लख आपको तो मैं तेरा पीव ॥ ५ ॥
दो० । सब योगन को योग है सब ज्ञानन को ज्ञान ।
सब सिद्धिन की सिद्धिहै तत्व सुरन को ध्यान ॥ ६ ॥
ब्रह्म ज्ञान को जाप है अजपा सोहं साध ।
परमहंस कोइ जानि है जाको मतो अगाध ॥ ७ ॥
भेद स्वरोदय सो लहै समझै श्वास उश्वास ।
भली बुरी तामें लखै भेद सुरन मन गांस ॥ ८ ॥
गुरु शुकदेव कृपा करी दियो स्वरोदय ज्ञान ।
जबते यह जानी परी लाभ होय कै हान ॥ ९ ॥
इड़ा पिंगला सुषमना नाड़ी तीन विचार ।
दहिने बायें सुख चलै लखै धारणा धार ॥ १० ॥
इड़ा सुबाँयें अंग है पिंगल दहिने होय ।
सुषमन इनके बीच है जबचालैं स्वरदोय ॥ ११ ॥
जब चालै स्वर पिंगला ता महँ सूरज बास ।
इड़ा सुबाँयें अंग है चन्द्र करत परकास ॥ १२ ॥
उदय अस्त तिनको लखै निरगम सुर गम विद्ध ।
अरु पावै तत्ववार को जब वह होवे सिद्ध ॥ १३ ॥
शुकदेवकही चरण दाससों थिरचर स्वर पहिचान ।
थिर कारजको चन्द्रमा चर कारज को भान ॥ १४ ॥
कृष्णपक्ष जबहीं लगै जाहि मिलत है भान ।
शुक्लपक्षहै चन्द्रको यह निश्चय करिजान ॥ १५ ॥
मंगल अरु इतवार दिन और शनीचर लीन ।
शुभ कारज को मिलत हैं सूरजके दिनतीन ॥ १६ ॥
सोमबार अरु शुक्र पुनि बुद्ध बृहस्पति देख ।

चन्द्रयोग में सुफल है चरणदास सुबिशेख ॥ १७ ॥
तिथि अरु वार बिचार करि दहिनों बायों अंग।
चरणदास सुर जो मिलै शुभकारज परसंग ॥ १८ ॥
कृष्णपक्ष के आदिमें तीन तिथिन लगभान।
फिरचंदा फिरभान है यहि क्रम गहैं सुजान ॥ १९ ॥
शुक्लपक्ष के आदि में तीन तिथिन लौं चन्द।
फिरसूरज फिरचन्द है फिर सूरज फिर चन्द ॥ २० ॥
सूरज की तिथि में चलै जो सूरज परकास।
सुखदेही को करत है लाभा लाभ हुलास ॥ २१ ॥
शुक्लपक्ष चन्दा चलै परिवालेय निहार।
फल अनन्द मंगल करै देही को सुखसार ॥ २२ ॥
शुक्ल पक्ष तिथि में चलै जो परमाकौ भान।
होय क्लेशपीड़ा कछू कै दुख कै कछु हान ॥ २३ ॥
सूरज की तिथि मे चलै जोपरमा को चन्द।
कलह करै पीड़ा करै हानि ताप दुखदन्द ॥ २४ ॥
ऊपर बायें साम्हने स्वर बायें के संग।
जो पूछैशशि योग में तो नीको परसंग ॥ २५ ॥
नीचे पीछे दाहिने स्वर सूरज को राज।
जो पूँछे कोउ आय कै तो समझो समकाज ॥ २६ ॥
दहिने स्वर जब चलत है पूँछैं बायें अंग।
शुक्लपक्ष नहिं बार है तो निष्फल परसंग ॥ २७ ॥
जो पूँछे कोउ आय कर बैठि दाहिनी ओर।
चन्द्र चलै सूरज नहीं नहिं कारज विधि कोर ॥ २८ ॥
जो सूरज में स्वर चलै कहै दाहिने आय।
लगन वार अरु तिथिमिलै कहु कारज है जाय ॥ २९
जो चन्दा मे स्वर चलै बायें पूछै काज।
तिथि अरु अक्षर चार मिति शुभ कारज को साज ॥३०॥

सात पांच नौ तीनि गुनि पन्द्रह अरु पच्चीस।
काज बचन अक्षर गुनै भान योग को ईश ॥ ३१ ॥
चार आठ द्वादश गिनै चौदह सोरह मीत।
चन्द्र योग में संग है चरण दास रण जीत ॥ ३२ ॥
तुला मकर औ कर्क अज चारौं चरती राश।
सूरज को चारो मिलत चर कारज परकाश ॥ ३३ ॥
मीन मिथुन कन्या कही और चौथि धन मीत।
दुस्स्वभावको सुषमना मुरलीसुत रण जीत ॥३४॥
बृश्चिक घट बृष सिंह पुनि बायें स्वर के अंग।
चन्द्र योग को मिलत है थिर कारज परसंग ॥ ३५ ॥
चित अपनो स्थिर करै नाशा आगे नैन।
श्वासा देखै द्रष्टि सों जब पावै स्वर बैन ॥ ३६ ॥
पांच घड़ी पांचौ चलत अपनी अपनी बार।
पांच तत्त्व चालै मिलै स्वर बिच लेहु निहारि ॥३७॥
धरती अरु आकाश है और तीसरो पौन।
पानी पावक पांच यों करत श्वास में गौन ॥ ३८ ॥
धरती तो सोहीं चलै यों पीरो रंग देख।
बारह अंगुल श्वास में सुरत निरत कर पेख ॥ ३९ ॥
ऊपर को पावक चलै लाल रंग है भेख।
चार सुअंगुल श्वास में चरण दास अब रेख ॥ ४० ॥
नीचे को पानी चलै श्वेत रंग है तासु।
सोलह अंगुल श्वाश में चरण दास कहभासु ॥ ४१ ॥
हरो रंग है वायु को तिरछी चालै सोय।
आठहि अंगुल श्वास में रण जीत मीत कह जोय ॥ ४२ ॥
स्वर दोनों पूरण चलैं बाहर नहिं परकास।
श्याम रंग है तासु को सोई तत्त्व अकाश ॥ ४३ ॥
जल पृथ्वी के योग में जो कोइ पूछै बात।

शशि घर में जो स्वर चलै कहु कारज ह्वै जात ॥ ४४ ॥
पावक और आकश पुनि बायु कभी जो होय ।
जो कोइ पूछै आय कर शुभ कारज नहिं होय ॥४५ ॥
जल पृथ्वी थिर काज को चर कारज को नाहिं ।
अग्नि बायु चर काज को दाहिने स्वर के माहिं ॥४६॥
रोगी को पूछै कोई बैठि दाहिनी ओर ।
धरती बायें स्वर चलै मरै नहीं विधि कोर ॥ ४७ ॥
रोगी को परसंग जो बांये पूछै आन ।
चन्द बन्द सूरज चलै जीवै नहिं यह जान ॥ ४८ ॥
बहते स्वर सों आयकर शून्य ओर ह्वै जाय ।
जो पूँछै परसंग वह रोगी नहिं ठहराय ॥ ४९ ॥
शून्य ओर सों आय कर पूँछै बहती श्वास ।
यह निश्चय कर जानिये रोगी को नहिं नास ॥ ५० ॥
शून्य ओर सों आयकै पूँछै बहती श्वास ।
जेते कारज जगत के सुफल होयँ सब आस ५१ ॥
बहते स्वर सों आय कर जो पूँछै शुन ओर ।
जेते कारज जगत के उलट होयँ विधि कोर ५२ ॥
कै बायें कै दाहिने पूँछै पूरण होय ।
पूँछै पूरण ओरही कारज पूरण सोय ५३ ॥
बरष एक को फल कहत तामति मानै सोय ।
काल समय सोई लखै बुरो भलो जग होय ५४ ॥

चौपाई ॥

संक्राइत पुनि मेख बिचारै । तादिन लगै सुवरी निहारै ॥
तबहीं स्वर में करै बिचार । चलै कौन सो तत्व निहार ५५ ॥
जो बायें स्वर पृथिवी होय । नीको तत्व कहावै सोय ॥
देय बृद्धि अरु समय बतावै । परजा सुखी मेघ बरषावै ॥ ५६ ॥
चारो बहुत ढेरको उपजै । नरदेही को अन बहु निपजै ॥

सलिल चलै बायें स्वर माहीं । धरती फूल मेघ बरषाहीं ॥५७॥
आनन्द मंगल से जग रहै । आप तत्त्व चन्दा में बहै ॥
जल पृथ्वी दोनों शुभ भाई । चरण दास शुकदेव बताई ॥५८॥
तीन तत्त्व को यहै विचार । स्वर में जाको भेद निहार ॥
लगै मेख संक्राइत जबहीं । लाग न घरी विचारै तबहीं । ५९॥
अग्नि तत्त्व स्वर में जब चालै । रोग दोष में परजा हालै ॥
काल परै जल थोरो बरसै । देश भंग जो पावक दरसै ॥६०॥
बायें तत्त्व चलै स्वर संगा । जग भयमान होय कछु दंगा ॥
अर्धकाल थोरो सो बरसै । बायु तत्त्व जो स्वरमें दरसै ॥६१॥
तत्त्व अकास चलैं स्वर दोई । मेह न बरसै अन्न न होई ॥
काल परै तिन उपजै नाहीं । तत्त्व अकास होय स्वर माहीं॥६२॥

दो० चैत महीना मध्य में जबहीं परमा होय ।
शुक्ल पक्ष तादिन लगै प्रात श्वास लख जोय ॥६३॥
भोरहिं परमा को लखै पृथिवी होय सुथान ।
होय समय परजा सुखी राजा सुखी निदान ॥६४॥
नीर चलै जो चन्द्र में यहि समय की जीत ।
घन बरसै परजा सुखी संबत नीको मीत ॥ ६५ ॥
पृथिवी पानी सम बहै जो चन्दा अस्थान ।
दहिने स्वर में जो चलै समय सुमध्यम जान ॥६६॥
भोरहिं जो सुखमन चलै राज होय उतपात ।
देखन वारो विनशि है और काल परजात ॥ ६७ ॥
राजहोय उतपात पुनि परै काल बिश्वास ।
मेह नहीं परजा दुखी होय तत्त्व आकास ॥ ६८ ॥
दाहिने स्वर पावक चलै परै काल जब जान ।
रोग होय परजा दुखी घटै राज को मान ॥ ६९ ॥
होय क्लेश भय देश में विग्रह फैलै आत्ति ।
परै काल परजा दुखी चलै बायु को तत्त्व ॥ ७० ॥

संक्राइत अरु चैत्र को दीनो भेद बताय ।
जगत काज अब कहत हौं चन्दा स्वर को न्याय ॥ ७१ ॥

चौपाई ॥

ब्याह दान तीरथ जो करै । बस्तर भूषण घर पग धरै ॥
बायें स्वर में ये सब कीजै । पोथी पुस्तक जोलिखिलीजै ७२
योगाभ्यास सुकीजै जीत । औषधि बारी कीजै प्रीत ॥
दीक्षा मंत्र अरु बोवै नाज । चन्द्र योग थिर बैठे राज ॥७३॥
चन्द्र योग में ये थिर जानो । थिर कारज सबही पहिंचानो ॥
करै हवेली छप्पर छावै । बाग बगीचा गुफा बनावै ७४
हाकिम जाय कोट में बारै । चन्द्र योग आसन पग धारै ॥
चरणदास शुकदेव बतायो । चन्द्र योगथिर काजकहायो ७५
दो० बायें स्वर के काज ये सो मैं दिये बताय ।
दहिने स्वर के कहत हौं ज्ञान स्वरोदय गाय ॥ ७६ ॥

चौपाई ॥

जो खांड़ो कर लीनो चाहै । जापर बैरी ऊपर बाहै ॥
युद्ध बाद रण जीतै कोई । दहिने स्वर में चालै सोई ॥
भोजन करै करै अस्नान । मैथुन कर्म सुभाय प्रधान ॥
बही लिखै कीजै ब्योहार । गज घोड़ा बाहन हथियार ॥
बिद्या पढ़ै यही जो साधै । मंत्र सिद्धि अरु ध्यान अराधै ॥
बैरी भवन गवन जो कीजै । अरु काहू को ऋण जो दीजै ॥
ऋण काहू से जो तुम मांगौ । बिष अरु भूत उतारन लागौ ॥
चरणदास शुकदेव बिचारी । ये शुभ कर्म भानुकी नारी ८०॥
दो० चर कारज को भानु है थिर कारज को चन्द ।
सुषमन चलत न चालिये तहां होय कछु दन्द ॥ ८१ ॥
गावँ परगने खेत पुनि ईधर ऊधर मीत ।
सुषमन चलत न चालिये बरजत हैं रण जीत ॥ ८२ ॥

क्षण बायें क्षण दाहिने सोई सुषमन जात ।
ढील लगै कै ना मिलै कै कारज की हानि ॥ ८३ ॥
होय क्लेश पीड़ा कछू कोऊ कहूँ को जाय ।
सुषमन चलत न चालिये दीन्हों ताहि बताय ॥ ८४ ॥
योग करौ सुषमन चलत कै आतम को ध्यान ।
और काज कोऊ करे तो कछु आवै हानि ॥ ८५ ॥
पूरब उत्तर मति चलो बायें स्वर परकाश ।
हानि होय बहुरै नहीं आवन की नहिं आश ॥ ८६ ॥
दहिने चलत न चालिये दक्षिण पश्चिम जान ।
जोरजाय बहुरै नहीं तहां होय कछु हानि ॥ ८७ ॥
दाहिने स्वर में जाइये पूरब उत्तर राज ।
सुख सम्पति आनँद करै सभी होय सुखसाज ॥८८॥
बायें स्वरमें जाइये दक्षिण पश्चिम देश ।
सुख सम्पति आनँद करै जोरजाय परदेश ॥८९॥
दहिने सेती आय कर बायें पूँछे कोय ।
जो बायें स्वर बंद है सुफल काज नहिं होय ॥९०॥
बायें सेती आय कर दहिने पूँछे धाय ।
जो दहिनो स्वर बंद है कारज अफल बताय ॥९१॥
जब स्वर भीतर को चलै कारज पूँछे कोय ।
पैज बांधि तासों कहै मनशा पूरण होय ॥ ९२ ॥
जब स्वर बाहर को चलै तब कोइ पूँछे तोहिं ।
वासों ऐसो भाषिये नहिं कारज सिधि कोहि ॥ ९३
बायें करवट सोइये जल बायें स्वर पीव ।
दहिने स्वर भोजन करै तौ सुख पावै जीव ॥ ९४॥
बायें स्वर भोजन करै दहिने पीवै नीर ।
दश दिन भूलो यों करै आवै रोग शरीर ॥ ९५ ॥
दहिने स्वर झाड़े फिरै बायें लघुशंकाइ ।

यही युक्ति सों साधिये दीन्हों भेद बताइ ९६॥
चन्द चलावै दिवस को रात चलावैसूर।
नित साधन ऐसे करै होय उमिरि भरपूर ॥ ९७ ॥
पांच घरी बायों चलै स्वई दाहिनो होय।
दशश्वासा सुषमन्न चलै नहीं विचारै सोय ॥ ९८॥
आठ पहर दाहिनो चलै बदलै नहीं जु पौन।
तीन बरस कायारहै जीव करै फिर गौन ॥९९ ॥
सोरह पहर चलै जबै श्वासा पिंगल माहिं।
युगुल बरष काया रहै अधिकी रहनो नाहिं ॥ १००॥
तीन रात अरु तीन दिन चलै दाहिनी श्वास।
संबत भर काया रहै पाछे होय बिनास ॥ १ ॥
सोरह दिन निशि दिन चलै श्वास भानु की ओर।
अवधि जान इकमास की जीव जाय तन छोर ॥ २॥
नैना भृकुटी सप्त श्रवण पांच तरीका जान।
तीन नाक जिआय कै कालभेद पहिंचान ॥ ३ ॥
एकमास जो रैनि दिन भानु दाहिने होय।
चरणदास यों कहत है नर जीवै दिन दोय ॥
भेद गुरू सों पाइये गुरु बिन लहै न ज्ञान ॥
चरणदास यों कहत है गुरु पर वारौंप्रान ॥ ५ ॥
नारी जो सुषमन चलै पांच घरी ठहराय।
पांच घरी सुषमन चलै तबहीं नर मर जाय ॥
नहीं चन्द नहिं सूर है नहीं सुषमना बाल।
मुख सेती श्वासा चलै घरी चारि में काल ॥
चारि दिना कै आठ दिन बारह दिन कै बीस।
ऐसे जो चन्दा चलै आयु जान बड़ ईस ॥
तीन रात अरु तीन दिन चलै तत्त्व आकास।
एक बरष काया रहै फेर काल विश्वास ॥

दिन को तौ चन्दा चलै चलै रात को सूर ।
यह निश्चय कर जानिये प्राण गमनहै दूर १० ॥
रात चलै स्वर चन्द में दिनमें सूरज बाल ।
एक महीना जो चलै छठे महीना काल ॥
जब साधू ऐसे लखै छठे महीना काल ।
आगेही साधनकरै बैठि गुफा ततकाल ॥
ऊपर खैंचि अपान को प्रान अपान मिलाय ।
उत्तम करै समाधि को ताको काल न खाय ॥
पवन पियै ज्वाला पचै नाभि तरे करि राह ।
मेरु दण्ड को तोरि कै खसै अमर पुरजाह ॥
जहाँ कालपहुचै नहीं यम की होय न त्रास ।
नभ मंदिरको जायकै करै उनमुनीवास ॥ १५ ॥
जहाँ काल नहिं ज्वाल है छुटै सकल संताप ।
होय उनमुनी लीन मन बिसरै आपा आप ॥
तीनों बंद लगायकै पाँचश्वास को साध ।
सुषमन मारग ह्वैचलै देखै खेल अगाध ॥
शक्तिजाय शिवको मिलै जहाँ होयमन लीन ।
महा खेचरी यों लगै जानै जान प्रबीन ॥
आसन पद्म लगाय कै मूलबंध को बाँधि ।
मेरुदंड सूधो करै सुरति गगन को साधि ॥
चन्द्र सूर्ज दोउसमकरै ठोड़ीहिये लगाय ।
षटचक्कर कोबेधिकै शून्य शिखर कोजाय२० ॥
इड़ा पिंगला साधकर सुषमनहीं कर बास ।
ब्रह्मज्योति झिलमिल तहाँ पूजै मन बिश्वास ॥
जिनसाधन आगेकरो तिनसों सबकछु होय ।
जबचाहैं जबहीं तभी काल बचावै सोय ॥
मरण अवस्था योगकर बैठिरहै मनजीत ।

काल बचावै साधुवह अन्त समय रणजीत ॥
सदा आपमें लीन रहि करिकै योगाभ्यास।
आवत देखै कालजब नभमंदिर करबास ॥
शून्य सनै साधन करै राखै प्राण चढ़ाय।
पूरेयोगी जानिये ताको काल न खाय २५॥
पहिले साधन नहिंकियो नभमंडल कोजान।
आवत देखै कालजब कहाकरै अज्ञान ॥
योगध्यान कीन्हों नहीं ज्वान अवस्था मीत।
आवत देखै कालको कहासकै रणजीत ॥
काल जीतिहरि सों मिलै शून्य महल अस्थान।
आगेजिन साधन करो तरुण अवस्था जान २८
काल अवधि बीतै तबहिं समैबीति जबजाय।
योगी प्राण उतारिये लेयसमाधि जगाय ॥
काल जीति जगमें रहै मृत्यु न ब्यापै ताहि।
दशौद्वार को फोरिकै जबचाहै तबजाहि ३० ॥
सूरज मण्डल भेदिकै योगी त्यागै प्रान।
सायुज मुक्ती सो लहै पावै पद निर्वान ॥
कृष्णपक्ष के मध्यही दक्षिण होय जु भान।
योगी प्राण न छाँड़ही राज होय फिरिआन ॥
राजपाय हरिभक्ति कर पूरबली पहिचान।
योगयुक्ति पावै बहुरि दुसरे मुक्ति निदान ॥
उतरायण सूरज लखै शुक्लपक्ष के माहिं।
योगीकाया छाँड़िये यामें संशय नाहिं ॥
मुक्तिहोय बहुरै नहीं जीवखोज मिटिजाय।
बुन्दसमुद्रहि मिलिगई नाहिं द्वितीय ठहराय ३५॥
दछिणायन जो होय रवि रहैमास षटजान।
फिर उतरायण आयकर रहै मासषट मान ॥

दोनों स्वर को साधकर श्वासा में मन राखि ।
भेद स्वरोदय या कहत तब काहू सों भाखि ॥
जो रण ऊपर जाइये दहिने स्वरै प्रकास ।
जीति होय हारै नहीं करै शत्रु को नाश ॥
दुर्जन को स्वर दाहिनो तेरो दहिनो होय ।
जो कोऊ पहिले चढ़ै खेत जीति है सोय ॥
सुषमन चलत न चालिये युद्ध करन सुनमीत ।
शीश कटावैके फँसै होय शत्रु की जीत ४० ॥
जो बायें पृथ्वी चलै चढ़ि आवै कोउ भूप ।
आप पैठि दल पेलिये बात कहत हैं गूप ४३॥
जल पृथ्वी सुरमें चलै सुनो कान दै बीर ।
सुफल काज दोनों करै कै धरणी कै नीर ॥
पावक और अकास तत बायु तत्त्व जो होय ।
कछू काज नहिं कीजिये इन में बरजो तोय ॥
दहिनो स्वर जब चलत है कहूं जाय जो कोय ।
तीन पांव आगे धरै सूरज को दिन होय ॥
बायें स्वर में जाइये बाईं डग धर चार ।
बाईं डग पहिले धरै होय चन्द्र को बार ॥ ४५ ॥
दहिने स्वर में जो चलै दहिनी डग धरि तीनि ।
बायें स्वर में चार डग बायें कर परबीन ॥
गर्भवती के गर्भ को जो कोउ पूँछै आय ।
बालक होय कै बालकी जीवै कै मरि जाय ॥
प्रच्छा बालक होन की जो कोउ पूँछै तोहि ।
बायें कहिये छोकरी दहिने बेटा होहि ॥
दाहिने स्वर के चलत ही जो पूँछै वह बैन ।
वाहूको दहिनो चलै बाल होय सुख चैन ॥
दहिने स्वरके चलत ही जो वह पूँछै आय ।

वाको बायों स्वर चलै बेटा हो मरजाय ॥ ५० ॥
बायेँ स्वरके चलतही आय कहै जो कोय ।
बेटी है जीवै नहीं वाको दहिनो होय ॥
बायें स्वर के चलतही जो वह पूँछे आय ।
वाको बायों स्वर चलै बेटी हो सुख पाय ॥
तत्त्व अकाश के चलतही कहै गर्भ की आय ।
होय नपुंसक कै जिये कै सतवां से जाय ॥
लेन परीक्षा गर्भ की जो कोउ पूँछे आय ।
अग्नि तत्व हो तासमे ओछाही गिरिजाय ॥
क्षण बायें क्षण दाहिने द्वै सुर सुषमन होय ।
पूँछनवारे सों कहै बालक उपजैं दोय ॥
वायु तत्व के चलतही जो कोउ पूँछे आय ।
छाया है बाढ़ै नहीं पेटहि गर्भ बिलाय ॥
जो कोइ पूँछे आय कर याके गर्भ कि नाहिं ।
दहिनो बायों स्वर लखै साधि श्वास के माहिं ॥
बंद ओर जो आय कर बहु पूँछे जो कोय ।
बंद ओर ते गर्भ है बहुते नाहीं होय ॥
इड़ा पिंगला सुषमना नाड़ी कहिये तीन ।
सूरज चंद बिचारिकै रहै श्वास लवलीन ॥
जैसे कछुआ सिमिटिकै आपहि माहिं समाय ।
तैसे ज्ञानी श्वास में रहै सुरति लवलाय ॥
श्वास बान बेक्रोर की आप जान नर लोय ।
बीति जाय श्वासा सबै तबहीं मृत्यु जु होय ॥
इकइस सहस छसै चलै राति दिना जो श्वास ।
बीसा सौ जीवै बरष होय असन को नास ॥
अकाल मृत्यु कोई मरै है कर भुग तै भूत ।
श्वासा जब बीतै सभी तब आवै यमदुत ॥

चारौ संयम साध कर श्वासा युक्ति चलाव ।
अकाल मृत्यु आवै नहीं जीवै पूरी आव ॥
सूक्षम भोजन कीजिये रहिये नापरसोय ।
जलथोरेसोपीजिये बहुतबोलमतिखोय ॥१६५॥

कुंडलिया ॥

मोक्ष मुक्ति तुम चहत हौ तजौ कामनाकाम।
मन की इच्छा मेटिकै भजौ निरंजन नाम ॥
भजौ निरंजन नाम देह अध्यास मिटावो ।
पांचौ को तजि स्वाद आपमें आप मिलावो॥
छूटै झूठी देह जैस के तैसे रहिया।
चरणदास वह मुक्ति गुरूने हमसे कहिया १६६॥
देह मिटत देही अमर पारब्रह्म है सोय ।
अज्ञानी भटकत फिरै लखै सुज्ञानी लोय ॥
देह नहीं तू ब्रह्महै अविनाशी निर्वान ।
नित न्यारो है देह से देह कर्म बशजान ॥
डोलन बोलन सोवनो भोजन परन अहार ।
दुख सुख मैथुन रोग सब गरमी शीत निहार ॥
जाति बरण कुल देह अरु मूरति सूरति नाव ।
उपजै बिनशै देह यह न्यारो न्यारो भाव १७०॥
पावक पानी वायु है धरणी और अकास ।
पांच तत्व के कोट में आय कियो तू बास ॥
पांच पचीसौ देह सँग गुन तीनौ हैं सात ।
षट उपाधि सों जानिये करत रहत उतपात ॥
जिह्वा इन्द्री नीर की नभ की इन्द्री कान ।
नाशा इन्द्री धरणि की कर बिचार पहिंचान ॥
त्वचा सो इन्द्री बायु की पावक इन्द्री नैन ।
इनको साधै साधु सो पद पावै सुख चैन ॥

नींद जम्हाई आलकस भूँख प्यास जो होय ।
चरणदास पांचौकही अग्नि तत्वते जोय१७५॥
रक्त पित्त कफ तीसरे बुन्द पसीना जान ।
चरणदासयह प्रकृतिसो सलिल तत्व पहिचान ॥
चाम हाड़ नारी कहो जान रोम अरु मास ।
पृथिवी तत्वकि प्रकृतिये अन्त सबनको नास ॥
चल करना अरु धावना पसरना अरु संकोच ।
देह बढ़े सो जानिये वायु तत्त्व सो सोच ॥
लोभ मोह अहँकार है दोष कहो अनुराग ।
तत्व अकास प्रतीत ये नित न्यारो तू जाग ॥
पांच पचीसो एकही इनके सकल सुभाव ।
निर्विकार तू ब्रह्म है आप आप में पाव १८०॥
निराकार निर्लिप्त तू देह जुदे आकार ।
आपनहो मनमति यही पावक सकै न जार ॥
शस्त्र सु छेदिसकै नहीं अग्नि सकै नहिं बार ।
मरे मिटै सो तू नहीं गुरुमति भेद निहार ॥
जलै कटै काया वही बनै मिटै फिरि होय ।
जिय अविनाशी नित्य है जानै बिरला कोय ॥
आंख नाक जिह्वा कहो त्वचा जान अरु कान ।
पांचौं इन्द्री ज्ञान की जानै जान सुजान ।
गुदा लिंग मुख तीसरो हाथ पांव लखि लेहि ।
पांचौ इन्द्री कर्म है उर विचारि कहि देहि १८५॥
पृथिवी उमर थान है गुदा जानिये द्वार ।
पीरे रँग है जानिये पीवन खान अहार ॥
पित्ते में पावक रहै नैन नजर यों द्वार ।
लाल रंग है अग्नि को मोहरु लोभ अहार ॥
जल का बासा भाल है लिंग जानिये द्वार ।

मैथुन कर्म अहार है धौलो रंग निहार ॥
पवन नाभि में रहत है नासा जानौ द्वार ।
हरो रंग है बायु को गंध सुगंध अहार ॥
शीश माहिं नभ बसत है श्रवण द्वार है जान ।
शब्द कुशब्द अहारहै ताहिश्यामपहिंचान१९०
कारणसूक्षम लिंगहै अरुकहियतु अस्थूल ।
चार शरीर सो जानिये मैं मेरी जड़ मूल ॥
चित बुधि मन अहँकार है अतष्करण सुचार ।
ज्ञान अग्नि सों जारि है करकर मीत विचार ॥
शब्द स्पर्श सुगंध है अरु कहियत रस रूप ।
देह कर्म तिहि बासुना तू कहियतु निह रूप ॥
निराकार अक्षय अचल निरबासी तू जीव ।
निरालंब निर्बैर सो अज अबिनासी सीव ॥
बायों कोठा अग्नि को दहिनो जल परकास ।
मन हिरदय अस्थान है पवन नाभिमें बास ॥
मूल कमल दल चार को चार पांखुरी रंग ।
गोरी सूत वासों कियो छैसे जाय इक अंग ॥
षटदल कमल सुपीयरो नाभि तरे सम भाल ।
षट सहस्र जप जाप लै ब्रह्म सवित्री बाल ॥
दश पँखरी को कमल है नील बरण है नाल ।
रमा विष्णु तहँ बास किय षटसहस्र जप जाल ॥
अनहद चक्र हृदैरहै द्वादश दल अरु श्वेत ।
षटसहस्र जप जाप लै शिव शक्ती जहँ हेत ॥
षोड़श दलको कमल है कंठ बास शशि रूप ।
जाप सहस्र जहां जपै भेद लहै अतिगूर २०० ॥
अग्नि चक्र दोदल कमल त्रिकुटी धाम अनूप ।
जाप सहस्र जहां जपै पावै ज्योति स्वरूप ॥

दल हजार को कमल है नभ मंदिर में बास ।
जाप सहस्र जहां जपै तेज पुंज परकास ॥
योग युक्ति कर खोजले सुरति निरतिकर चीन्ह ।
दश प्रकार अनहद बजे होय जहां लौ लीन्ह ॥

कुंडलिया ॥

एकभ्रमर गुंजारसी द्वितिय शंखध्वनि होय ।
तीजे शब्द मृदंग को चौथि ताल है सोय ॥
चौथि ताल है सोय पांचयें घंटा बाजै ।
छँठे सुमुरली नाद सातयें भैरवँ गाजै ॥
अठयें बाजे दुंदभी सिंह गर्जना जान ।
दशयें बाजे घूंघरी चरण दास पहिंचान ॥

दोहा ॥

दश प्रकार अनहद बजै जित योगी होलीन ।
इन्द्री थकि मनुआं थकै चरण दास कहि दीन ॥
तीन बदन नव तारिका दश वाई को जान ।
प्राण अपान समान है अरु कहिये उद्दान ॥
थान वाई अरु किरकिरा कूरम वाई जीत ।
नाग धनंजय वे बदन नव वाई रण जीत ॥
नवो द्वार को बन्द करि उत्तम नाड़ी तीन ।
इड़ा पिंगला सुषुमना को निकरै परवीन ॥
करते प्राणायाम को तरिगये पतित अनेक ।
अनहद धुनिके बीच में देखै शब्द अलेख ॥
पूरक करि कुंभक करै रेचक पवन उतार ।
ऐसे प्राणायाम करि सूक्षम करै अहार २१० ॥
तीनोबंद लगायकै दशौ बायु को रोंक ।
मस्तक प्राण चढ़ायकै करै अमरपुर भोग ॥

पांचौ मुद्रा साधिकै पावै घट को भेद ।
नाड़ी शक्ति चढ़ायकै षट चक्र को छेद ॥
योग युक्ति सों कीजिये कै अजपाको ध्यान ।
आपा आप बिचारिये परमतत्त्व को ज्ञान ॥
शूद्र वैश्य शरीर है ब्राह्मण औ रजपूत ।
बूढ़ा बाला तू नहीं चरणदास यों धूत ॥
काया माया जानिये जीव ब्रह्म है मित्त ।
काया छूटै सुरत मिटै तू परमातम नित्त ॥
पाप पुण्य आशा तजौ तजौमान अरु थाप ॥
काया मोह बिकार तजि जपै सु अजपा जाप ॥
आप भुलानो आप में बँधो आपही आप ।
जाको ढूंढ़त फिरत है सो तू आपहि आप ॥
इच्छा सबही छोंड़कर क्यों न करै निरबास ।
तू तो जीवन मुक्त है तजौ मुक्ति की आस ॥
पवन भई अकास सों अग्नि पवन सों होय ।
पावक सों पानी भयो पानी धरती सोय ॥
धरती मीठो स्वाद है खारी स्वाद सुनीर ।
अग्नि चिरचिरो स्वादहै खाटो स्वाद समीर ॥
खाटो मीठो चरफरो खारी पर मन होय ।
जबहीं तत्त्व बिचारिये पांच तत्त्व में कोय ॥
स्वाद नाम अरु रंग है और बताई चाल ।
पांच तत्त्व की परख यह साधिपाव ततकाल ॥
तिरकोनी पावक चलै धरती तौ चौगोल ॥
शून्य भाव आकाश को पानी लायो गोल ॥
अग्नि तत्त्व गुण तामसी कही रजोगुण बाय ।
पृथ्वी नीर सतोगुणी नभहै अस्थिर भाय ॥
नीर चलै जो श्वास में रण ऊपर चढ़ मीत ।

बैरी को शिर काटिके घर आवै रण जीत २२५॥
पृथ्वी के परकाश में युद्ध करै जो कोय।
द्वउ दल रहैं बराबरी हारि बायु में होय॥
अग्नि तत्व के चलतही युद्ध करन मति जाउ।
हारि होय जीतै नहीं अरु आवै तन घाउ॥
तत्व अकाश में जो चलै तौ रण मांझ हिराय।
रण माहीं काया छुटै घर नहिं देखै आय॥
जल पृथ्वी के तत्व में गर्भ रहै सो पूत।
बायु तत्व में छोकड़ी और स तत्व कुपूत॥
पृथ्वी तत्व में जन्म जो बालक होवै भूप।
धनवन्तो सो जानिये सुन्दर होय स्वरूप २३०॥
अग्नि तत्व के चलतही जबहिं गर्भ रहिजाय।
गर्भ गिरै माता दुखी होत मात मरिजाय॥
बायु तत्व स्वर दाहिनों पुरुष करै जब भोग।
रहै गर्भ जो ता समय देहीं आवै रोग॥
आसन संयम साध कर एकवती नित साध।
बैठे डोलै सोवतै श्वासाही आराध॥
नाभि नाशिका माहिं कर सोहं सोहं जाप।
सोई अजपा जाप है छुटै पुण्य अरु पाप॥
भेद स्वरोदय बहुत है सूक्षम कहो बनाय।
ताको समझ विचारिले अपनेमन चितलाय२३५
धरणि टरै गिरिवर टरै ध्रुवहु टरै सुन मीत।
बचन स्वरोदय ना टरै मुरली सुत रणजीत २३६
गुरुशुकदेव दयासों साधु दया सों जान।
चरणदास रणजीतने कहो स्वरोदय ज्ञान २३७॥

इति॥

इति महासिद्धसावरतंत्रे प्रथमो क्रियावर्गः॥ १॥



श्रीगणेशायनमः ॥

अथ महासिद्धसावर तंत्रः ॥

यंत्रवर्गः ॥

१ गर्भधारण यंत्र ॥

ह्रां	≡	ह्रीं
॥।	ओं	॥।
ह्रः	≡	ह्रू

जिस स्त्रीके गर्भ की स्थिती न होती हो वह ऋतुकाल के अनंतर शुद्ध होकर रबिवार पुष्य नक्षत्र में सेवती की लेखनी और अर्कपुष्पी के रससे भोजपत्र में लिखाकर कटि में बाँधै तो अवश्य गर्भ धारण करै ॥

२ गर्भ न गिरने का यंत्र ॥

क्षः	ठः	क्षः
ठः	ओं	ठः
क्षः	ठः	क्षः

इस यंत्र को सोमवती अमावस के दिन अनार की लेखनी और कुंकुमसेपीपरपत्र पर लिखा कर कटि में बांधने से गर्भ गिरै नहीं ॥

३ गर्भरक्षा यंत्र॥

१	९	५	१
६	२	८	४
२	७	३	१

गर्भवती स्त्री इस यंत्र को इतवार मंगल के दिन चमेली की लेखनी गोरोचनसे भोजपत्र पर लिखाकर कटि में बाँधै तो गर्भ की पूर्ण रक्षाहो ॥

४ सूतिकागृहरक्षा यंत्र

ओं	ओं
ओं	ओं

इस यंत्रको चन्द्रपर्व के दिन ताँबे के पत्रपर खुदाकर सूतिका गृह में रखने से किसी प्रकार की बाधा नहीं आती ॥

५ जमोगा निवारण यं० ॥

ओं देवदत्तायहुँ ठः ठः ठः

चमेलीकी लेखनी और केशर से भोजपत्र पर लिखकर बांधने से बालक को जमोगादिकी बाधा नहीं होती ॥

६ शिशुरोदन निवारण यं० ॥

ओं		ओं
	क्लीं	
ओं		ओं

अनार की लेखनी और श्वेत पुष्पी के रससे भोजपत्र पर लिखकर बालक के कंठमें बाँध देवै तो बहुत रोवै नहीं ॥

७ बयारी निवारण यं० ॥

	२	
१		४
	५	
६		७
	८	

गुड़हर की लेखनी और केशर से अश्वत्थ पत्र में लिखकर बालकके कंठमें बाँध देनेसे बयारी का भयनहीं होता ॥

८ भूतबाधानिवारण यं० ॥

क्लीं	एँ
ह्रीं	ओं

चमेली की लेखनी और केशर से कमल की पांखुरी पर लिख, कर बालक के कंठ में बाँधै तो भूतबाधा न हो ॥

९ चौंकनिवारण यं० ॥

नारसिंहाय हुँ
ओं सिद्धसागराय हां

चमेली की लेखनी और चमेली के रससे गुरुपूर्णा योगमें अश्वत्थपत्र पर लिखकर बालक के कंठमें बाँधदेवै तो रात्रि को सोते समय चौंके नहीं ॥

१० दीठिनिवारण यं० ॥

९	९	९	९
९	९	९	९

अनार की लेखनी और शंखाहुली के रससे कमलपत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बाँध देने से दीठि का भय नहीं रहता

११ टोना निवारण यं० ॥

ठः	ठः
ठः	ठः

इतवार मंगल के दिन अनार की कलम और कस्तूरी से भोज पत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बाँध देने से टोना का भय नहीं रहता ॥

१२ नजर निवारण यं० ॥

औं	औं
औं	औं

सूर्य पर्व के दिन अर्क पत्रपर अर्क के रससे अर्क की लेखनी से लिखकर बालक को दिखा कर आग में जलाने से नजर बाधा दूरहो ॥

१३ टोना नाशक यंत्र ॥

भ्रां	भ्रीं
भ्रौं	भ्रः

इस यंत्र को इतवार के दिन सायंकाल अर्क को की लेखनी से अर्कपत्र पर लिख कर बालक के ऊपर उतारकर चौराहे में गाड़ देने से लगा हुआ टोना दूर हो ॥

१४ प्रेतबाधा निवारण यंत्र ॥

		१		
	२	९	८	
३	१२	१०	१३	७
	४	११	६	
		५		

कमलिनी पत्रपर चमेली की लेखनी और उसी के रस से लिखकर मंगल के दिन बालक के

कंठ में बाँध देवै तो प्रेत बाधा न हो ॥

१५ पूतना निवारण यंत्र ॥

प्रे	त	ग	णा
नि	द्रा	य	य
भी	म	मू	र्तें

शनि प्रदोष में रुद्रवंती के रस से श्वेत कमल पत्र पर केतकी की लेखनी से लिखकर बालक के कंठ में बाँध देने से पूतना की बाधा नहीं होती ॥

१६ चुरैल निवारण यंत्र ॥

भै	र	वा
य	न	मः

मंगल के दिन लालकमल पत्र पर लाल चंदन और लाल अनार की लेखनी से लिख कर बालक के कंठमें बाँध देने से चुरैल की बाधा नहीं होती ॥

१७ नेत्रबाधा निवारण यंत्र ॥



मंगल के दिन लालचंदन और गुड़हर की लेखनी से ताम्रपत्र पर लिखाकर बालक को पहिना देवै तो नेत्र बाधा न हो ॥

१८ कंठ बाधा वारण यंत्र ॥

क्रां	क्रीं
क्रूं	क्रः

रविबार पुष्यनक्षत्र में लज्जावंती के रस से लाल कमलपत्र पर गुड़हर की लेखनी से लिख कर बालक के कंठ में बाँध देने से कंठ बाधा नहीं होती ॥

१९ कर्ण शोथ नाशन यंत्र ॥

ओं हनुमते नमः

श्याम कनक के रस से उसी के पत्र पर कामिनी की लेखनी से लिख कर शनि प्रदोष में बालक के कर्ण समीप बाँध देवे तो कर्णशोथ दूर हो ॥

२० कर्णबाधा निवारण यंत्र ॥

१७	२७
५७	७७

अभिजित् नक्षत्र और चंद्र पर्व में कस्तूरी और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिख कर बालक के दाहिने हाथ में बाँध देवे तो कर्ण बाधा न हो ॥

२१ मुखबाधा वारण यंत्र ॥

ॐ

सूर्य पर्व अभिजित् नक्षत्र में श्वेत दूर्वा के रस से श्वेत कमल पत्र पर स्वर्ण लेखनी से लिख कर बालक के कंठ में पहिना देने से मुख बाधा न हो ॥

२२ मुखबाधा नाशन यंत्र ॥

३	६	६	१
९	१२	१३	८
२	७	७	४

सोमवती अमावास्या में ब्राह्मी के रससे देशी पान पर उदुम्बरी की लेखनी से लिखकर फिर यंत्र को पीसकर वह रस पिला देने से बालक की मुख बाधा दूरहो ॥

२३ सूखा निवारण यंत्र ॥

ऐं	ह्रीं	क्लीं
चा	मु	ण्डा
यै	वि	च्चे

दीप मालिका स्वाती नक्षत्र में श्वेत शंख पुष्पी के रस और सेवती की लेखनी से श्वेत कमल पत्र पर लिख कर बालक के कण्ठ में बाँध देवे तो झुरहा अर्थात् सूखा का रोग न हो ॥

२४ सूखानाशन यंत्र ॥

१ कालिकायै नमः	२ कालिकायै नमः
५ कालिकायै नमः	६ कालिकायै नमः

सूर्य पर्व रविदिन सांप की बाँबी की माटी से पृथ्वी में अनार की लेखनी से लिखकर उसी में बालक को लोटावे तो बालक सूखे के रोग से मुक्तहो ॥

२७ पेट बाधा निवारण यंत्र ॥

ध्रां	ध्रीं	ध्रुं
ध्रैं	ध्रौं	ध्रः

चन्द्र पर्व अभिजित् नक्षत्र में कमलपत्रपर कस्तूरी गोरोचन और कामिनी की लेखनीसे लिखकर बालक के कण्ठ में बाँध देवै तो बालक को पेटबाधा न हो

२६ गुदा रोग निवारण यंत्र ॥

१०	५०	३०
७०	२५	१००
४०	८०	२०

रविदिन मेखकी संक्रांति में गोरोचन कुंकुम रक्तचंदन केशर कस्तूरी और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बालक की कटि में बांध देवे तो गुदा रोग न होवे ॥

२७ ज्वर निवारण यंत्र ॥

श्री	ऐं	श्री
ध्रीं	श्री	क्लीं
श्री	ह्री	श्री

श्याम कमल दल पर स्वर्ण छीरी के रस व स्वर्णपुष्पी की लेखनीसे लिखकरइतवार के दिन बालक के भुजापर बाँधने से ज्वर बाधा न हो ॥

२८ शीतज्वर निवारण यंत्र ॥

१०	११
११	१०

सुवर्ण के पत्र पर केशर और सुवर्ण की लेखनी से लिखकर दिवामणि योग में बालक को पहिना देने से शीतज्वर की बाधा नहो ॥

२९ अन्तरज्वर निवारण यंत्र ॥

८०	११	२०
७७	९९	७७
५५	४०	५०
६६	१०	२७
१२	१७	३०

पीपल के पत्र पर गंधब्रहा के रस व कांचनीकी लेखनीसे लिख कर मंगल के दिन बांध लेने से अंतरा की बाधा न हो ॥

३० तिजारी निवारण यंत्र ॥

१	भूतेश्वरायह्रां	५
२	सावरायहूं	४
४	प्रमथायह्रीं	२
५	भैरवायहूं	१

तुलसी पत्र पर नागपुष्पी के रस और हंस के परकी लेखनी से लिख कर भुजापरबांध लेवै तो तिजारि का भय न हो ॥

३१ चौथिया निवारण यंत्र

१७	२७
३१	३१

दीपमालिका की अमावस और मंगल जब पड़े तब अर्द्धरात्र को अवँरा का बांदा लाकर उस के रस व चंपा की लेखनीसे भोज पत्रपर लिखकर बांधलेवै तो चातुर्थिक ज्वर दूरहो ॥

३२ भूतज्वर निवारण यंत्र ॥

९९	७७	२२	११
६६	५५	४४	३३

चमेली के बांदा के रस से चमेली की लेखनी से पीतशंख पुष्पी के पत्रपर लिखकर इतवार मंगल को दाहिने भुजापर बांध लेवे तो भूत ज्वर दूर होवै ॥

३३ मूठि निवारण यंत्र ॥

१	७	६	२	८	९	७
२	१	७	६	२	७	४
३	६	१	७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
५	८	१०	११	१	१२	१३

पीतकमलपत्रपर सहदईकीजड़ केरस और पीत चमेलीकी लेखनी से लिखकर दाहिने भुजापर बांधे तो मूठिका भय न हो ॥

३४ विषमज्वर नाशन यंत्र ॥

यक्षिण्यै नमः	नभश्चारिण्यै नमः
त्रिपुरेश्वर्य्यैनमः-	दुर्गायै नमः

शाल बृक्षके बांदाके रस व अर्जुन की लेखनी से कनक सुंदरी के पत्रपर लिखकर इतवार मंगल को बांधै तो विषम ज्वर दूरहो ॥

३५ भूतोन्माद निवारण यंत्र

	१	१	१	१	१
१	कः	कः	कः	कः	
					१
१	ठः	ठः	ठः	ठः	
					१
	यः	यः	यः	यः	
	१	१	१	१	१

अगस्त्य के रस व बासंती की लेखनी से चन्द्रपर्व में लिखकर बाँधे तो भूतोन्माद दूरहो ॥

३६ पिशाचिनी उन्माद निवारण यंत्र ॥

२	४	२
७	३	५
६	८	१

इस यंत्रको शीतलाष्टमी के दिन श्वेत अर्क की जड़के रस व कर्पूर बृक्षकी लेखनी से अर्द्ध रात्रि में लिख कर बाँध तो चुरैल आदि से हुआ उन्माद दूर हो ॥

३७ दृष्टिज्वर निवारण यंत्र ॥

क्रूं	क्रीं
क्रां	क्रः

चन्द्रावती के रस व बकुलकी लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर इतवार कोबांधै तो दृष्टिज्वर दूरहो

३८ चलावा निवारण यंत्र

ळं	कं	खं	गं	घं
ङं	चं	छं	जं	झं
ञं	टं	ठं	डं	ढं

दिवाली की रात्रि में अँवरा के बांदा और कामिनीकी लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बाँधै तो चलावे की बाधा दूरहो ॥

३९ सर्वग्रह बाधा निवारण यंत्र ॥

रुद्र	त्रिपुर मर्दन	चंडिका पति
भैरव	त्रिशूलधर	ओं त्रिपुरां त काफल
सर्व	असुकशत्रु हनुर	ईशान

जब कभी रविवार और अनुराधा नक्षत्र में सूर्यग्रहण पड़ै तो उस समय इस मंत्र को रुद्रवंती के रस व श्वेत दाड़िम की लेखनी से श्वेत कमल पत्रपर लिख कर बाँधै तो सर्वग्रह बाधा दूरहो॥

४० ब्रह्मराक्षस निवारण यंत्र ॥

६	७	६
७	४	७
५	३	५
९	९	९

इसयंत्र को दिवाली अमावस के दिन अर्द्ध रात्रि में अष्टगंध और अरुणकुन्द की लेखनी से ताम्र पात्रपर लिखकर स्मशान में अकेले जाकर धूपदीप नैवेद्यादि से अच्छे प्रकार पूजन करै मार्ग में आते जाते किसी से बोलै नहीं फिर लाकर जिस स्थान में बहुत दिन की भी ब्रह्म राक्षस की बाधा हो वहां रक्खे और नित्तप्रति पूजन करै तो ब्रह्मराक्षस आदि की सब बाधा दूर हो ॥

४१ अरिष्ट ग्रह निवारण यंत्र ॥

३	३	३
ऐं	ह्रीं	क्लीं
चा	मु	ण्डा
यै	वि	च्चे
३	३	३

चन्दन प्रदोष में गऊ के दही और सुवर्ण की लेखनी से ग्यारह सौ बिल्वपत्रों पर लिख कर अग्नि में हवन करै तो अरिष्ट स्थान स्थित सर्व ग्रह बाधा दूर हो ॥

४२ सर्वबाधा शमन यंत्र ॥

११	१३	१५
१७	१९	२१
२३	२५	५९

इस यंत्र को मृगशिरा नक्षत्र में और मृगशिरा नक्षत्र के सूर्यों में मृगमद और सुवर्ण की लेखनी से मृगछाल पर लिखकर अष्टगंध और गूगल की धूनी देकर और पूप आदि की नैवेद्य से विधि सहित पूजन कर गृह के मध्य भाग अंगन में गाड़ देवै तो किसी प्रकार की बाधा उसके घरमें न आवै ॥

४३ देवबाधा निवारण यंत्र ॥

श०	ॐ	स०
दू०	न०	फ०

कस्तूरी व सुवर्ण की लेखनी से चांदी के पत्र पर लिख कर प्रति दिन नियम से पूजन करैतो सब प्रकार की देवबाधा दूर हो ॥

४४ उन्माद निवारण यंत्र ॥

औं ह्रीं	मथ हन	ठः घः	ऐं क्लीं

दिवाली को अर्द्ध रात्रि में नग्न होकर अकेला स्मशान में जावै और स्मशान भूमि में चिता के कोयले से १०८ बार इस यंत्र को लिखै मुखसे बोलै नहीं अन्त में धूप दीपादिसे पूजनकर यन्त्र के ऊपर त्रिकोण लोहे का दीपक तिलके तेल से जलाकर रखदे और घर में आकर फिर शुद्ध हो वस्त्र पहिन कर अनार की कलम व अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर बांधदे तो बहुत दिन की भी मृगी रोग की बाधा दूर हो और इसी यंत्र को फिर श्वेत दूर्वा के रस और उसी की कलम से श्वेत कमल पत्र पर लिख कर तांबे के यंत्र में मढ़ाकर धारण करै तो सब प्रकार का उन्माद दूरहो ॥

४५ उपद्रव निवारण यंत्र ॥

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
१९	२४	१८	१
४	६	१५	१८

पहिले एक बर्ष तक प्रदोष ब्रत कर नित्यप्रति १०८ बिल्व

पत्र पर श्वेत दूर्वा के रस व श्वेत दूर्वा की लेखनी से लिख कर शिव पर चढ़ावे पीछे एक यंत्र अधिक लिख कर बिधान सहित पूजन कर सुवर्ण के यंत्र में धर दहिने भुजा पर बाँध लेवै तो शत्रुका किया हुआ किसीप्रकार का उपद्रव उस पुरुष पर न हो

४६ शत्रुनाशन यंत्र ॥

अमुकं मारय २

लोहे की लेखनी और चिता क्षार की स्याही से ११०० नित्य प्रति अर्क यंत्र पर लिख कर अग्नि में जलावे तो शत्रु का नाश हो—(अमुक की जगह शत्रु का नाम होगा)॥

४७ पशुबाधा निवारण यंत्र ॥

१०	१०
१०	१०

इस यंत्र को श्वेत दूर्वा के रस और गंगापुत्र की लेखनी से पीपलपत्र पर लिख कर पशुवों के स्थान में रखने से पशुवों को किसी प्रकार की बीमारी न हो

४८ शिर दर्द निवारण यंत्र ॥

४	७	८
६	५	९

सहदेई के रस और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिख कर कंठ में धारण करै तो कंठ माला रोग दूरहो और अर्जुन की लेखनी और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर बांधै तो आधाशीशी व संपूर्णमाथ का दुखना बंदहो ॥

४९ कामना पूर्ण करण यंत्र ॥

श्री	क्लीं
ह्रां	ह्रीं

मोर पर की लेखनी और रुद्रवंती के रस से भोजपत्र पर लिखकर बिधि सहित पूजन कर सुवर्ण में मढ़ाकर पास रक्खे जिसकाम को जाय यंत्र भुजा पर बांध कर जाय तो काम जरूर सिद्ध हो ॥

५० अकाल गर्भ पतन निवारण यंत्र

		९		
	१	४	१	
१	४	श्री	४	९
	१	४	२	
		९		

इस यंत्र को सुवर्ण के पत्रपर हंस पर की लेखनी और रुद्रवंती के रससे लिखकर एक वर्ष तक विधान सहित धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन करै और मार्गशीर्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भकर कार्तिक की पूर्णिमा को विसर्जन करै उस दिन किसी सुपात्र विद्वान ब्राह्मण का निमंत्रण कर इच्छानुसार भोजन करवाय पीछे एक गऊ सफेद सर्व अलंकारों से युक्त कर इसयंत्र के साथ ब्राह्मण को दे देवे तो अवश्य बंध्या स्त्री बड़ा उत्तम पुत्र पावै और मृतवत्सा स्त्री भी इसी युक्ति से सर्व कार्य करै तो निश्चय पुत्र चिरायु हो और जिस स्त्री का गर्भ अकाल में किसी उपद्रव से पतित हो जाता हो तो उसका गर्भ स्थिर हो ॥

५१ शत्रु उच्चाटन यंत्र ॥

कः	कः	कः	कः
ठः	ठः	ठः	ठः
यः	यः	यः	यः

इस यंत्र को यदि काली अष्टमी को श्यामा बृक्ष की लेखनी और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर दाहिने भुजापर बांधै तो किसी जंगली जीव व भूत प्रेतादि से भय न हो और यदि सुन्दरी की लेखनी और लाजवंती के रससे कमल पत्र पर लिख कर सुवर्ण से मढ़ा कर पास रक्खे तो सिंहरी सर्प आदि जीवों से भय न हो और यदि लाल चंदन और अनार की लेखनी से ताम्र पत्र पर लिखकर प्रतिदिन पूजन करै तो महामारी आदि बीमारियों का उसके घर में कभी भय न हो और यदि लोहकी लेखनी और चिताक्षार से कूर्मपृष्ठ पर लिखकर दीप-मालिका की रात्रिमें शत्रुके द्वारपर गाड़ देवै तो शत्रु का उच्चाटन होजाय घरमें परस्पर विग्रह होजाय॥

५२ राज सन्मान दातृ यंत्र॥

१०	६०	६०	१०
९०	१२	१३	८०
२०	७०	७०	४०

इस यंत्र को अष्टगंध और तुलसी की लेखनी से श्वेत पीपल पत्र पर लिखकर सुवर्ण से मढ़ाकर भुजा पर बांध कर राज दरबारमें जावे तो राजा सन्मानकरै॥

५३ कामिनीकुचबाधानिवारणयंत्र

९	९	९	९
९	९	९	९

इस यंत्र को कामिनी के रस और उसीकी लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर सुवर्ण या चांदी में मढ़ा कर स्त्री हृदय में धारण करै तो कभी कुच पकै नहीं और जिस के दुग्ध न होता हो तो उसके दूध उतरै॥

५४ प्रीति वर्द्धन यंत्र॥

ओं	ऐं
ह्रीं	ओं

इस यंत्र को दाड़िम की लेखनी और अष्टगंध से श्वेत अश्वत्थ

पत्र पर लिखाकर स्त्री अपनेपास र रक्खे तो पति अधिक स्नेह करै और पुरुष अपने पास रक्खे तो स्त्री अधिक स्नेह करै

५५ बवासीर निवारण यंत्र ॥

ओं	भ्रां
भ्रीं	भ्रः

श्वेत दूर्वारस और अनार की लेखनी से भोज पत्र पर लिखकर तांबे के यंत्र में मढ़ाकर कटि में धारण करै तो बवासीर रोग से मुक्त हो ॥

५६ कटि पीड़ा निवारण यंत्र ॥

ओं	क्रां
क्रीं	क्रः

इसमंत्र को लाक्षा रस औरलवंग की लेखनी से भोजपत्र पर लिख कर कटि में धारण करै तो कटि पीड़ा न हो ॥

५७ मूकता निवारण यंत्र ॥

श्री शारदायै हुँ फट्

इस यंत्र को श्वेत दाड़िम की लेखनी और ब्राह्मी के रससे भोजपत्र पर नाभि पर्यंत नदी में खड़ा हो कर लिखै फिर तट पर धर कर विधि सहित धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन कर कंठ में धारण करै तो सर्व विद्यानिधान हो और शास्त्र वाद में जीतै और जिस की जबान से स्पष्ट अक्षर न निकलता हो वह कंठ में धारण करै तो शुद्ध अक्षर निकलने लगैं

५८ नकसीर रोग निवारण यंत्र॥

८	२	६	४
१	७	३	५

इस यंत्र को श्यामा तुलसी की लेखनी और उसी के रस से उसी के पत्र पर लिख कर इतवार के दिन कंठ में धारण करै तो नकसीर रोग से मुक्त हो

जिसके न हो वह धारण करै तो उसके कभीनकसीर रोग न हो ॥

५८ समय मे पुत्र प्रसव यं०

८ कालिकायै नमः	८ कालिकायै नमः
४४	
४४	
८ कालिकायै नमः	८ कालिकायैनमः

इस यंत्रको अष्टगंध और अनार की लेखनी से भोजपत्र पर लिखा कर ताँबे के या सुवर्ण के यंत्र में मढ़ा कर गर्भिणी स्त्री कटि में धारण करै तो अकाल में बालक न हो अर्थात् पूरण नौ मास मेंही बालक पैदा हो ॥

५९ बिदेशी बुलाने का यं०

यक्षिण्यै नमः	नभचारिण्यै नमः
त्रिपुरेश्वर्य्यैनमः	दुर्गायै नमः

इस यं० को जो पुरुष परदेश चलागया हो और कुछ भी पता निशान न हो उसके किसी कपड़ेपर लालचंदन और मरालपंखकी लेखनी से लिखकर २१ दिन तक बराबर नित्य पूजन करै तो निश्चय वह पुरुष शीघ्र घरको लौटि आवै ॥

६० शीघ्र शत्रु मारण यंत्र ॥

हन अमुक पुरुषं

इस यं० को काकपर की लेखनी और काकके रक्तसे लोह पत्र पर बराबर २१ दिन तक प्रति दिन ग्यारह सौ यंत्र लिखि मिटावै तो शत्रु का नाश हो अमुक पुरुष के स्थान में शत्रु का नाम होगा।

६१ बर्रावना निवारण यं०

१०	५०	३०
७०	२५	१००
४०	८०	२०

इस यं० को मोरपंखकी लेखनी और कस्तूरी से भोजपत्रपर लिखाकर इतवार मंगल को तांबे से मढ़ाकर शिखा में धारण करे तो रात्रि को सोते मे बर्रावे नहीं ॥

६२ सर्प विष निवारण यं०

क्षः	श्रीं	क्षः
श्रीं	ओं	ठः
क्षः	श्रीं	क्षः

इस यंत्र को शिवक्रांता के रस व चमेली की लेखनी से काले सांप की केंचुली पर लिखकर सर्प को देखावे तो सर्प निर्विष हो और जो पुरुष सदैव भुजापर बांधेरहै तो उसे सर्प न काटै और जिसको सर्प ने काटाहो तत्काल इस यंत्र को बाँध देवे अच्छा हो

६३ दंत किर्राना निवारण यं०

१०	९०	५०	१०
६०	२०	८०	४०
२०	७०	३०	१०

इसयंत्रको मालकांगनी के रस व मोर पंखकी लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर दीपमालिका स्वाती नक्षत्र और हर्षण योगमें सुबर्ण से मढ़ाकर कंठमें धारण करै तो सोते समय दांतों का किरकिरानाबंदहो

६४बावलेश्वानकाबिषनिवारणयं०

ओं	ओं
ओं	ओं

रविवार या मंगल वारको मन्म थी के रस और अनार की लेखनी से पलाश पत्र पर लिख कर भुजापर बाँधे तो उसे बावला कुत्ता और शृगाल कभी न काटै और जिसे काटा हो उसके बाँध देवै तो बिष न चढ़ै ॥

६५ गंजा निवारण यं०

क्लीं	पं
पं	ओं

कचनार की लेखनी और कुंकुम से भोजपत्र पर लिख कर शिखा में बाँधे तो बहुतकाल का भी गंजा अर्थात् शिर में फोड़ा होना अच्छा हो ॥

६६ पीड़ा निवारण यं०

ओं देवदत्तायहुँ ठः ठः ठः

इस यंत्र को लाल अनार की लेखनी और लाल चंदनसे लाल रेशमी बस्त्र पर लिख कर कंठमें

बाँधे तो दांतों की पीड़ा न हो और कृमि सब आप से आप गिर पड़ें और दन्त पुष्ट हों ॥

६७ कर्ण पीड़ा निवारण यंत्र

ऍं	११	क्लीं
११	ह्रीं	११
श्री	११	ओं

इस यंत्रको हलदी और दतूना की लेखनी से बहेर पत्र पर लिख कर और फिर उसे जलाकर कान के समीप धुआं दे तो कान का दर्द तथा बहना बंदहो ॥

६८ शत्रुंजय यंत्र ॥

ऍं	ऍं
ऍं	ऍं

सूर्य उदय होनेसे पहिले नित्य नदी में जाकर स्नान करे और किनारे बैठ कर अष्टगंध और अनार की लेखनी से एक सौ एक यंत्र भोजपत्र पर लिख कर आटे में भिन्न २ गोली बना कर जल जीवों को चुनावे एकसौ एक दिन नित्ययही साधना करे कभी अंतर नपरै पश्चात् पूजन कर सुवर्ण में मढ़ाकर दहिनी भुजापर धारण करै तो युद्ध में जीतै सन्मुख से शत्रुभाग जावे

६९ नेत्र पीड़ा निवारण यं०

५१	५५	३२
७७	२२	१११
४७	८८	२५

इसयंत्र को कचनार की लेखनी और हरिद्रा से कचनार के पत्रपर लिखकर कंठमें धारण करे तो नेत्र कभी दूखैं नहीं और जिसके नेत्र उठि आये हों अथवा लाल रहते हों उसे यह यंत्र ताम्रपत्रपर लिखकर दिखलावे तो बहुत शीघ्र अच्छा हो ॥

७० शास्त्राभ्यास वर्द्धन यं०

ओं सरस्वति हुं फट

अष्टगंध और बज्रदंती की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर

सूर्यपर्व या सोमावती अमावास्या में कंठमें धारणकरै तो पढ़ा हुआ विस्मरण न हो यदि बालक के कंठमें बांधे तो शीघ्र शास्त्राभ्यास हो ॥

७१ भ्रमी निवारण यं० ॥

६६	७७	६६
८७	९४	७८
९	९	९

कर्पूर, अगरु मृगमद और श्वेत चंदन से चमेली की लेखनी से भोजपत्र लिखकर अष्टधातु के यंत्र में मढ़ाकर कंठ में धारण करे तो भ्रमी अर्थात् घुमनी रोग शीघ्र शांत हो और जो साधारण सदैव धारण करै तो उसे कभी भी यह रोग न हो ॥

७२ पीनस रोग निवारण ॥

११	९१	५१	४८
६१	२१	८१	४१
२७	७१	३१	१८

हरिद्री और कचनारकी लेखनी से काले धतूरे के पत्र पर लिख कर जिस पुरुषके पीनस का रोग हो उसे जलाकर सुंघावै तौ बहुत शीघ्र अच्छा हो कृमि तत्काल गिरजावैं

७३ उदर रोग निवारण यंत्र ॥

अ	ग	स्त्य	क्ष
ष	ये	न	मः
प	च	प	च

इस यंत्रको प्रातःकाल स्नानकर प्रतिदिन लोहपत्रपर घीकुवार के रस और मधूककी लेखनी से लिखकर सविधि पूजन कर पश्चात् यंत्रको धोकर पी लेवै तो ग्यारह दिनमें गुल्म यकृत् प्लीहा वायु गोला आदि उदर रोग दूर हों ॥

७४ संग्रहणी निवारण यंत्र

२	५	८
९	७	६
४	३	१

इस यं० को कचनार की लेखनीऔर मृगमद से भोज प० पर लिखकर कटि में धारण करै तो पुराना भी अतीसार व संग्रहणी रोग शांतहो और यदि बालक के कटिबंध में बांधदेवे तो उदर विकार कभी न हो ॥

७५ शूल निवारण यं०

शूलपाणिनेनमः

संजीवनीके रस और हरदुआकी लेखनी से ककना० पर लिखकर बांध देनेसे जलोदर रोग मुक्तहो और जो सदैव कटिमें धारण करै तो जलोदर की बाधा तथा शूल की बाधा न हो ॥

७६ विस्फोट निवारण यंत्र ॥

शीतलायैनमः

चन्द्रपर्व में नाभिपर्य्यंत जलमें खड़ा होकर अष्टगंध व चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बांध देवै तो विस्फोटक रोग से भय न हो ॥

७७ हेरुहा निवारण यंत्र ॥

१०	कृ	मी	९०
९०	न्ना	श	८०
२०	य	हुं	४०

इस यं० को करवीरकी लेखनी और अष्टगंध से नागवेलि पर लिखकर जिसके पेटसे कृमि या हेरुहा गिरतेहों मंगलके दिन विधान सहित पूजन कर कंठमें बांध देवै तो अवश्य उसरोग से मुक्तहो ॥

७८ शत्रु उदर छेदन यं० ॥

१	९	९	१
१	९	९	१

इस यं०कोसहदेईकीजड़केरस से और श्वेत कनैर की लेखनी से कूष्मांड के फल पर दीपमालिका मंगल के दिन लिखे प्रथम धूप दीप नैवेद्यादिसे पूजन कर पश्चात् उस फलको जिसका नाम लेकर चिकवा की छुरीसे काट देवै तो वह पुरुष रक्त हगने लगै ॥

७९ जादू निवारण यंत्र ॥

कालभैरवाय
बटुकाय
हं

इस यं०को प्रथम एक सौ एक दिन तक सांप की बांबी की मृत्तिका और अनार की लेखनी से ११०० प्रतिदिन पृथ्वी पर लिखा करै तत्पश्चात् सिद्धहुआ जान रुद्रवंती के रस और अनार की लेखनी से भोजपत्र लिखकर भुजा पर बांध ले फिर चाहे जिस जगह चलाजावै दूसरे की जादू या यंत्र मंत्र उस पर असर न करैगा ॥

८० अखाड़ा वंधन यंत्र ॥

हनुमतये
ह्रां

इस यंत्रको करँजुआ की लेखनी और मृगमद से भोजपत्रपर लिख कर दाहिने भुजापर बांधे तो कुश्तीमें अवश्य जीतै और जिस अखाड़े में गाड़ देवै वह अखाड़ा बँध जावै ॥

८१स्वासरोग निवारण यंत्र ॥

११	११
११	११

इस यंत्रको नागार्जुन की लेखनी और हरिद्रा से पद्मपत्र पर लिखकर प्रति मंगल को पूजन कर फिर उस यंत्र को जल मे धोकर उसी से कुल्ला करै तो बहुत दिन का हुआ भी श्वास रोग मुक्त हो ॥

८२ आसेबजाने का यंत्र ॥

बटुकभैरव
भूतान्विद्रावय

शुद्ध माटीका चौका लगा कर रक्तचंदन और अनार की लेखनी से कोरे कागजपर लिख कर रुई में लपेट कर बत्ती बनावे और कोरे दीपक में करुआ तेल भर कर उस बत्ती को डाल कर जलावे और चौकामें धरै फिर

जिस पर आसेबहो उसको सन्मुख बैठाले और कहदे कि दीपकी ओर देख थोड़ी देरके बाद वह दीपक को बुझाने दौड़ेगा या अकस्मात् चिल्ला उठैगा तब निश्चय करलेवै कि इसे आसेब को दोषहै ॥

८३ गर्भ मोचन यंत्र ॥

॥	॥	॥	॥
॥	॥	॥	॥

इस यंत्रको माटीके कोरे खपरा पर लाक्षारस तथा अनार कीलेखनी से लिखकर उस स्त्री को दिखलावै जिसके लड़का होने वाला हो और न होताहोतो बालकतुरंत पैदाहो ॥

८४ भूत देख पड़नेका यंत्र ॥

१५	१५
१५	१५

इस यंत्रको कच्छपकी पृष्टि पर स्याही के कांटे और गेरूसे लिखकर अर्द्धरात्रि में बिधानसे पूजन करै फिर जिसके घरमें गाड़ देवै वहांसब भूत दिखालाई पड़ैं और जिस पुरुष को दिखलादेवै उसे चारों ओर भूतही देख पड़ैं ॥

८५ दृष्टि बंद करण यंत्र ॥

कः	भः	जः	खः
प्रः	ऐंह्रीं	क्लीं	रः
गः	यः	नः	घः

इस यंत्रको दीप मालिका की अर्द्धरात्रिमें अश्वत्थ बृक्षके नीचे बैठकर कुंकुम और कचनार की लेखनी से ताम्रपत्र लिखकर धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन कर फिर सिद्ध हुआ जान जबचाहे जिसे लिखकरदिखादेतोदृष्टिबंदहोजावै

८६ राज वशी करण यं०

वश	भू	मानय
श्री	प	शारदे
ह्रीं	तिं	क्लीं

इसयंत्रकोश्वेतगऊके दुग्धऔर लाजवंती के रससे सारस पंखकी लेखनी से श्याम कमल पत्रपर

लिखकर प्रदोष व्रतकर बारहमही ने तक एकसौ ग्यारह यंत्र शिव पर चढ़ावै फिर सिद्ध हुआ जान तांबे के यंत्रमें मढ़ाकर भुजापर बांधै तो राजावश हो ॥

८७ स्वर बंधन यं० ॥

गन्धर्वेभ्यो-नमः हुंफट

इस यंत्रको मंगलकेदिनसरस्वती बृक्षकी लेखनी तथा उसी के रससे श्वेत कमल पत्रपरलिखकर एक सौ इक्कइस दिन तक नित्य १०८ यंत्र लिखकर सिद्ध करै पश्चात् बिधान से पूजन कर कंठमें धारण करै तो नाद विद्या में एकही हो उसके सन्मुख और कोई गान न कर सकै ॥

८८ सर्प निवारण यं० ॥

४४	७७	८८
६६	५५	९९

इस यंत्रको माटीके कोरेखपर पर प्राचीन अर्थात पांचसौ बर्षकी इमारत के कोइला की स्याही और लाल कनैर की लेखनी से लिखकर जिसघरमें सर्पका बास हो वहां रखदेवे तो सर्प उस स्थान में फिर कदापि न आवै और यदि यही यंत्र सर्प को दिखला देवै तोसर्पअंधा होजावै॥

८९ गृह उपद्रव निवारण यं० ॥

११ कालिकायै नमः श्री	११ कालिकायै नमः श्री
श्री ११ कालिकायै नमः	श्री ११ कालिकायैनमः

इसयंत्र को लालवस्त्र पर उदालक की लेखनी और केशर से लिखकर बांस मे बँधाकर सोमवती अमावास्या या सूर्यपर्व में स्थान के ऊपर लगादेवै तो उस स्थान पर शत्रु का कियाहुआ किसी प्रकारकाउपद्रवन होसकै॥

९० स्वामी बशीकरण यंत्र ॥

१	१
यं	रं
मं	यं
१	१

इस यंत्र को श्वेत कचनार की

लेखनी और हरिद्रा से मंगलके दिन भोजपत्र पर लिख कर दाहिने भुजापर बाँधे तो स्वामी सदैव बश में रहै और उसी का कहा हुआ मानै ॥

९१ जुआं जीतने का यं० ॥

ऐं यक्षिरायै नमः	मं नभश्चारि- ण्यै नमः
रं त्रिपुरेश्व र्य्यैनमः-	यं दुर्गायै नमः

इस यंत्र को परेवा के पंख की लेखनी और हरिद्रा से भोजपत्र पर लिख कर दाहिने भुजा पर बाँधकर जुआँ खेलै तो अवश्य जीतै ॥

९२ वाद्यस्फोट न यं० ॥

१५	२५	१५
२५	९	२५
१५	२५	१५

इस यंत्र को मंगल के दिन स्मशान के कोइला और लोहे की लेखनी से भेड़िया के चर्मपर लिख कर उसकी ढोल मढ़ाकर बजावै तो जहां तक उसकाशब्द जावे वहांतक सब ढोलैं फट जावैं

९३ मूषक निवारण यं० ॥

रा०	क्लीं	म०
ह्रूीं	न०	फ०

इस यंत्रको माटी के कोरेखपरा पर लाख की स्याही और अनार की लेखनी से इतवार मंगल को लिख कर जिस घर में या जिस खेत में चूहा लगते हों गाड़ देवे तो चूहा निकल जावें ॥

९४ चोरी मिलने का यं० ॥

१	श्री	श्री	१
१	श्री	श्री	१

इसयंत्रको अर्कपत्र पर चिनाचैनाकी लेखनी और नीमके रससे इतवार के दिन लिखकर एकसौ ग्यारह अग्नि में जलावै तो चोरी का गया हुआ धन मिलै और चोर आपसे आप आकरहाजिरहों

९५ धन प्राप्ति करण यं० ॥

१	७	६	२	८	९	९
५	१	७	६	२	७	४
७	६	१	७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
१	२	४	५	७	९	१

इस यंत्र को जैतून की लेखनी और श्वेत गुंजा मूलके रससे भोजपत्र पर प्रति मंगल को अन्त की संख्या तक लिखै लिखते समय किसी से बोले नहीं इकइसयें मंगल को सिद्ध हुआ जान अष्टगंधादि से धूप दीप करके फिर उस यंत्र को दाहिनेभुजापरबांधै तो अकस्मात् आपसेआप धनप्राप्ति हो ॥

९६ मुकद्दमा जीतने का यं०

श्रीरा०	श्रील०
श्रीह०	श्रीसी०

इस यंत्रको हंसपरकी लेखनी और शिवकान्ता के रससे पीत कमल पत्रपर लिखकर रबिवार के दिन बिधान से पूजन कर दाहिने भुजापर बांधकर जिस हाकिम के सन्मुख जावे वह बशमें हो और मुकद्दमा जीते ॥

९७ महा मोहन यं० ॥

मोहनी
अमुकं मोहय

प्रथमतः इस यंत्रको चांदी के पात्रपर श्वेतमाधवी की लेखनी और अष्टगंध से लिखकर छःमास तक प्रतिदिन बिधान से पूजन करै(अमुकके स्थान में नाम होगा) अनंतर केशर और अनार की लेखनी भोजपत्र पर लिखकर कंठमेंधारण करै तोवह पुरुषयास्त्री शीघ्र बश हो जिसका नाम लिखा है ॥

९८ सर्ब कष्ट निवारण यं० ॥

	२	
१		७
	अजितां जपामः	
५		९
	८	

गोरोचन और सुगंधा की लेखनी से भोज पत्रपर लिखकर रबिवार को बिधि सहित पूजन कर दाहिने भुजा पर बांध लेवै तो सबकष्ट दूरहो॥

९९ बन्दीमोचन यंत्र॥

आकर्षय	आकर्षय
आकर्षय	आकर्षय

इस यंत्रको चमेली के बांदा के रस और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर इकइस मंगल के ब्रत कर प्रति मंगल को सवासेर गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर इकइस पुआ घी में बनाकर पांच पुआ लाली गऊ को औ पांच पुआ बांदरों को और पांच पुआ कुमारियों को खिलावे यंत्र की धूप दीप कर छः पुआवों का भोगलगावै सायंकाल को खाय पृथ्वी में ऊर्ण बिछाकर शयन करै फिर सिद्ध हुआ जान सुबर्ण में मढ़ा कर भुजा में धारण करै तो उसे कभी राजदण्ड नहीं मिलेगा जो पुरुष कैद में हो उस के पास यह यंत्र पहुँचे जावै तत्काल छूटजावै॥

१०० आकर्षण यंत्र॥

क्रीं	क	क्रीं
आ	२२	र्ष
क्रीं	य	क्रीं

अमुकमाकर्षयाकर्षय॥

इसयंत्रको सुबर्णपत्र पर हरिद्रा और जैतून की लेखनी से लिख कर प्रति दिन पूजन कर अमुक के स्थान पर जिसका नाम लिखै वह शीघ्र आ प्राप्तहो॥

१०१ स्तंभन यंत्र॥

देवदत्तं स्तंभय
ओं ह्रीं ऐं क्लीं

इसयंत्र को ढालपर लोह लेखनी और लाख रससे दिवाली की अर्द्धरात्रिमें लिखकर बिधान-सहित पूजन करै फिर उस ढाल के देखतेही शत्रुका सर्बांगस्तंभन होजाय उठै नहीं और जिसके सन्मुख वह यंत्र पड़ेगा उसी के अंगस्तंभित होजावैंगे॥

१०२ व्यापार वर्द्धक यंत्र ॥

वर्द्धय	ऐं	वर्द्धय
ऐं	अन्न पूर्णे	ऐं
वर्द्धय	ऐं	वर्द्धय

इस यंत्रको ताम्र पात्रपर गोरोचन और हंस पंखकी लेखनी से प्रतिदिन प्रातःकाल लिखकर धूप दीपादि से पूजा करै तो अवश्य व्यापार की वृद्धि हो ॥

१०३ यात्रा निवारण यंत्र ॥

क्लीं	क्लीं	क्लीं	क्लीं
क्लीं	अमुकं	निवारयतु	क्लीं
क्लीं	क्लीं	क्लीं	क्लीं

इस यंत्रको अर्कपत्र पर क्षीरीकी लेखनी और हरिद्रासे लिखकर (अमुक स्थान में यात्रा करनेवाले का नाम होगा) किसी पत्थर के नीचे दबादे तो यात्रा रुकजावै ॥

१०४ दल बिचलन यंत्र ॥

मोहय	श्री	श्री	मोहय
१	शत्रुदलंचालय		१
मोहय	श्री	श्री	मोहय

इस यंत्र को इन्द्रायणी की लेखनी और लाजवंती के रसमें मृगमद मिश्रित करि नगारे के ऊपरलिखकरविधान सहित पूजन कर शत्रुदल केसन्मुख बजावै तो शब्दसुनकर शत्रुदल भागजाय

१०५ अग्नि निवारण यंत्र ॥

८	९	७
११	अग्निशमय	१६
११	४	१०

इस यंत्र को ताम्र पत्रपर अष्टगंध और पीतक्षीरी की लेखनी से लिखकर पानी में डुबो देवै और यह मंत्र पढ़ता जावे- (ओं हुताशने ज्वालानले शान्त शान्त शान्त) अग्नि तत्काल शान्त हो जावे॥

१०६ जिह्वा कीलन यंत्र ॥

जिह्वामरेः कीलय कीलय कालिके

इस यंत्र को लोह की लेखनी और शमी के कोयला की स्याही से सफेद पत्थर पर लिख कर रख लेवै फिर इस मंत्र से जिसका नाम लेकर पीत सरसों यंत्रपर छोड़े उसकी जिह्वा कीलन होजाय (ह्रीं उच्छिष्ट गणपतये हां अमुकं रसनां कीलयेति)

१०७ जल स्तंभन यंत्र ॥

स्तंभयस्तंभय वं

इस यंत्र को शीशा पर हीरे की लेखनी और अष्ट गंध से लिख कर विधान सहित पूजन करै और जल के सहस्र घट चढ़ावै अनन्तर जहां से जल लौटाना हो वहां पृथ्वी पर रख दे तो फिर जल आगे नहीं बढ़ेगा ॥

१०८ जल पर चलने का यंत्र ॥

६१	५	२५	४५
७५	१५	३५	५५

नरक चतुर्दशी के संध्या समय शीशम के बृक्ष के नीचे जाकर गूगल की धूप दे और दही भात की नैवेद्य धर कर चला आवे फिर दीपमालिका की अर्द्ध रात्रि में नग्नहोकर बृक्ष की शाखा या बृक्ष आवश्यकतानुसार काटै घर से कोरे सरवा में कड़ये तेल का दीपक जलाये लेता जावै वह बृक्ष के नीचे रख दे बृक्ष को काट कर लेआवे प्रतिपदा में उसकी पादुका बनवाकर उन में यह यंत्र लोह कील से खोदै फिर पहिन कर अथाह जल में चला जावे पादुका न डूबै ॥

१०९ बनहाइनि बुलाने का यंत्र

१	१	१	१
१	आकर्षय		१
१	१	१	१

इस यंत्र को पुराने जूता पर चिता क्षार और काकपर से लिख कर इतवार मंगल को पृथ्वी पर पटकै बनहाइनि तत्काल आवै और नग्न हो जाय ॥

११० चुरैल या भूत प्रेत बकुरानेका यंत्र ॥

ओं
कालभैरवाय
वटुकाय
यं

गीध पंखकी लेखनी और कढ़ां के कोइला की स्याही से काल वस्त्र पर लिख कर उसका पलीता बनाकर नीम की मींगनी के तेल से डुबोकर उस पलीता को जलावे और नीचे पानीका बर्तन रख लेवे उसमें टपकताजावे और जिसके भूतप्रेत लगाहो उसेसन्मुख बैठालेवपलीताकीओर देखतेही वह आपसे आप बकुरनेलगैगा ॥

१११ शत्रुतापन यंत्र ॥

ओं
हनुमते
महा मर्कटाय
ह्रूं

इसयंत्रको अपने बांयेपैरकी धूर पानीमें डालकर लोहशलाका से अर्कपत्र परलिखकर (ह्रींछिन्नमस्ति के अमुकंतापनं कुरु२) इस मंत्रको पढ़कर आगमें जलावे शत्रुके ताप चढ़आवे अमुक के स्थानमें शत्रुका नाम होगा ॥

११२ नौका स्तंभन यंत्र ॥

ध्रीं	ध्रीं
ध्रीं	ध्रीं

इस यंत्रको लोहपत्रपर शमी कीलिखनी और नीलकी स्याहीमें घुघुआ का रक्तमिलाकर मंगलके दिन ठीक अर्द्धरात्रि में लिखकर धूपदीपसे पूजन करयंत्रके सन्मुख श्वेत छागका बलिप्रदान कर देवै फिर जिस नौकापर वह यंत्र रखदे अथवा नदीकेकिनारे नौका से कुछ आगे यंत्र लेकर खड़ाहो नौका आगे न चलैगी ॥

११३परस्पर विरोध करानेका यंत्र

विद्वेषकारिणी
विद्वेष्टारं
विद्वेषय २

इसयंत्रको मंगल या रबिवारको काकरक्त और लोह लेखनी से काक पंख पर लिखकरअर्द्धरात्रि के समय द्वार देहलीके नीचे गाड़ देवै परस्पर बिरोध होजावैगा ॥

११४ पति बशी करण यं० ॥

औं यक्षिणि पतिं बशमानय

इस यंत्रको रजककी कन्या प्रथम रजस्वला के रजोरक्त मार्जितबस्त्र पर छछूंदरके रक्त और काक पंख लेखनी से लिखकर प्रति मंगल संध्या समय पतिका नाम लेकर स्त्री अग्नि में जलावे पांच मंगल यहकर्तब्य करनेसे पति अवश्य बश होवे और फिर कभी स्त्री के बिपरीत न होवे ॥

११५ स्त्री बशी करण यंत्र ॥

औं	औं	औं
औं	अमुकीं	औं
औं	वश	औं
औं	मानय	औं

इस यंत्र को किसी ऊनी बस्त्र पर कमलाक्ष की लेखनी और अष्टगंध से मंगल या रविबार को बिधि सहित पूजन कर एकादश आहुति खीर की अग्नि में देवे मंत्र यह कहै (अमुकीं बश मानय) (अमुक स्थान पर बर्ण व गोत्र सहित स्त्री का नाम उच्चारणहोगा) एकादश मंगलों तक यही नियम करता जावे बीच में बन्द न करैं अवश्यमेव स्त्री बश होकर पीछे लगी फिरै ॥

११६ कराही बाँधनेका यंत्र ॥

८८	९९	९९	८८
पँ	पँ	पँ	पँ
८८	९९	९९	८८

नकुल की लेखनी और नकुल के रक्त से लोहपत्र पर लिख कर क़राही के नीचे गाड़देवे कराही न तपैगी ॥

११७ बरसातीपत्थरबराइवेका यंत्र

१५	१५	१५
१५	१५	१५
१५	११	१५

इसयंत्र को कदम्ब की लेखनी और मृगमद से भोजपत्र पर लिखकर जिसजगह रखदे उस जगह फिर पत्थर न गिरेंगे ॥

११८ दामिनी निवारण यंत्र ॥

व्रजभीतिं शमय

इस यंत्रको करबीर की लेखनी और गेरू से मृगछाला पर लिखकर सदैव विधानसहित पूजन करै जिस स्थान पर यह यंत्र होगा एक योजनपर्यन्ततक बिजली न गिरैगी ॥

११९ चलताकोल्हूबंदकरनेकायं०

का	क्लीं	हा
म	दा	थै

इसयंत्र को मंगल या रविवार को चमगादर के रक्त और स्याही की लेखनी से भैंसा के चर्म पर लिखे और अर्द्धरात्रि के समय पूजन कर करंज की धुनी देकर कोल्हू के नीचे गाड़ देवै तो कोल्हू बन्द होजावेगा ॥

१२० पशु का दूधरोंकदेनेकायं०

१	७	६	२	८	९	९
५	१	७	६	२	७	४
७	६	१	७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
१	२	३	५	७	९	१

स्याहीके रक्त व कांटेसे ऊंट के चर्म पर लिखकर इतवार को अर्द्धरात्र मे निंबपत्र की धूनी देकर फिर पशु के स्थान में गाड़ देवै पशु का दुग्ध न उतरैगा ॥

१२१कुम्हारकाचाकबंदकरन यं०

रा	क्लीं	म
ह्रीं	न	फ

खरगोसकेरक्त और लोहेकी लेखनी से गोहके चर्म पर इतवार को अर्द्धरात्रि में लिखे कुम्हारकेचाक के नीचे की मिट्टी योजितकर सरसों के तेल व सरसों की धूनी

देकर कुम्हारके चक्रके नीचे गाड़ देवै चक्र न चलैगा ॥

१२२ बरहा बाँधने का यंत्र ॥

ह्रीं हूँ ह्रां	ह्रीं हूँ ह्रां
ह्रीं हूँ ह्रां	ह्रीं हूँ ह्रां

इसयंत्रको कर्णिकार की लेखनी और चिन्तामणि के रससे अर्कपत्र पर लिखकर जिस जगह बरहा में गाड़देवैवहांसेआगेपानी न बढ़ैगा।

१२३ कुम्हारकाआवाँनपके यंत्र

७७७	९९९
८८८	६६६

इसयंत्रको मंगल के दिन कच्छप की पीठी पर बकराके कानके रक्त व लोह लेखनीसे लिखकर आंवा में डाल देवै तो आंवा न पकैगा॥

१२४ अन्तर्द्धान होजाने का यं०

ह्रीं यक्षिण्यै	ह्रीं नभचारिण्यै
ह्रीं त्रिपुरेश्वर्य्यै	ह्रीं दुर्गायै

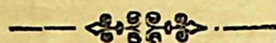
इस यंत्रको दालभ्य की लेखनी और अष्टगंधसे भोजपत्र लिख कर मंगल या रविवारको सिद्धकर ले यंत्र नदी के मध्यभाग में रात्रिके समय नौकापर बैठकर लिखै फिर जो पुरुष इस यंत्रको पास रक्खेज हांसेचोहवहांसेअन्तर्ध्याहोजावै ॥

१२५ सिद्ध होने का यंत्र ॥

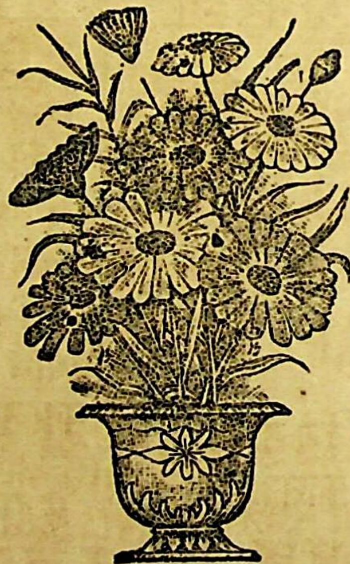
हं	श्रीं	श्रीं	हं
हं	श्रीं	श्रीं	हं

इसयंत्रको ब्रह्मचर्य होकर पृथ्वी पर मृगचर्मासनपर बैठकर प्रतिदिन ११०० यंत्र अनार की लेखनी और अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखै और विधान सहित धूपदीप नैवेद्यादि से पूजन कर नदी के प्रवाह में छोंड़ि आवै एकवर्ष पर्यंत्र यही क्रिया करने से निश्चय वह पुरुष सिद्ध हो सक्ताहै जो बचन मुख से करै वह सत्य होवै जो इच्छाकरै वह प्राप्त हो ॥ इति ॥

सूचना ॥



प्रकटहो कि यह यंत्र बहुतही प्राचीन पुस्तक से उद्धृत हैं और प्रायः परीक्षा किये हुये हैं इस कारण यह अवश्य तत्क्षण फल देने वाले हैं पर प्रयोग करनेवालेको ध्यानरखना चाहिये कि विधि पूर्वक और निश्चय व श्रद्धा तथा शुद्धता से प्रयोग करै यदि थोड़ी सी भी असावधानी होगी तो निष्फल हो जायगा ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

महासिद्धसाबरतंत्रः

तृतीयो मंत्र वर्गः ॥

गर्भ धारण मंत्र ॥ :

ओं ह्रीं जलज्जाजलयं ठः ठः ओं ह्रीं

जिस समय स्त्रीको ऋतुकाल होवे उसके अनंतर शुद्ध होकर पृथ्वी में मृत्तिका से लीपकर उसपर स्त्री को बैठा देवै और पति यदि पढ़ा हो नहीं तो अन्य पुरुष स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध हो मृगशिरा नक्षत्र में एकहाथ से मारे हुए काले मृग के चर्म पर बैठकर एक सौ आठमंत्र धीरे धीरे स्त्रीके कर्णमें सुनादेवै तदनंतर सवा सेर का रोट बनाकर पंचमुखी हनुमान की नैवेद्य लगाकर बानरों को खिलादेवै अवश्य मेव गर्भ धारण होगा—

गर्भ न गिरने का मंत्र ॥

ओं ठं ठं ठिं ठिं ठुं ठुं ठें ठें ठौं ठौं ठः ठः ओं

चन्द्र बार अनुराधा नक्षत्र हर्षण योग में इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर प्रथम स्त्री को झार देवे पश्चात् अनार की कलम अष्टगंध से भोजपत्र में लिखकर कुमारी कन्या के काते हुए सूत्रसे आवेष्टित कर स्त्री के कटिमें बांध देवैतो गर्भ गिरै नहीं—

गर्भ रक्षा मंत्र ॥

ओं रुं द्रां भीं द्रू व ह्रीं हा हः हः ओं क्लीं

इतवार या मंगलवार को सायंकाल गूगल की धूप देकर स्त्री गर्भवती के समीप एक सौ इक्कइस बार इस मंत्र को पढ़ देवै तो किसी प्रकार की बाधा न हो ॥

सूतिका गृह रक्षा मंत्र ॥

ओं विद्दज्जल ह्वान वान वान वाय ओं क्लीं

चन्द्रपर्व में कुमारी कन्या के काते हुये सूत्र को एक सौ एक बार इस मंत्र से पढ़कर फूँक देवै पश्चात् एक सौ तार का डोरा बटकर सूति का गृहके चारों ओर आवेष्ठितकर देने से सूतिका गृह में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती ॥

जमोगा निवारण मंत्र ॥

ओं कटकटक्किटउत्कट ओंफट ओंफट ओंफट

जिस बालक को जमोगाने पकड़ा हो उसको अग्नि के समीप माता सहित बैठाल कर लोबान की धूनी देकर इक्कइस बार इस मंत्र को पढ़कर झार देवै जमोगा तत्काल दूरहो ॥

शिशुरोदन निवारण मंत्र ॥

ओंविद्युद्दव दहनाय स्फ्रें स्फ्रें स्फ्रें क्रां क्रां ह्रीं ओं

सूर्योदय के पहले पवित्र स्थान की कोरी सींकै ग्यारह ले आवे और इतवार मंगल को इस मंत्र से पढ़कर उन्ही सींकों से झार देवै बालक का रोना वंद होजावे॥

बयारी निवारण मंत्र ॥

ॐ कलतू कलां कांकिणि हां हां हुं हुं ठः ठः

इस मंत्र को इकइस बार पढ़कर नीम की पत्ती और आककी सूखी लकड़ी की धूनी दे बयारी की बाधा दूर हो, झारने का

दिन इतवार या मंगल और मोर पंख से झारै तीन दिन बराबर एक सीधा ब्राह्मण को देवै—

भूत प्रेत बाधा निवारण मंत्र ॥

ओं ह्रां वज्रका कोठा लोह की शृंखला हांकदेतआवै मर्कटाननवीर बजरंग भूत प्रेत पिशाच राक्षस मर्दय मर्दय विद्रावय विद्रावय ओं ठः ठः॥

मंगल के दिन अर्द्धरात्रि में लाल वस्त्र पहिनकर पृथ्वी में मृगचर्म पर बैठकर प्रथम ग्यारह सहस्र मंत्र जपै पश्चात् सवा मनके इकइस रोट बना कर वानरों को खिलावै तत्पश्चात् जहां जिस स्थान में भूत प्रेत बाधा हो वहां पर मोर पंख से इकइस बार पढ़कर झार देने से शांत होजावै ॥

टोना निवारण मंत्र ॥

ओं कां कलक कपाट वज्र पहारलंका अलकपलंका फलक फलांगयतीकी वाचा सत्यहूं ॥

वस्त्र का पलीता बनाकर अलसी के तेलमें भिजो कर जला लेवै फिर नीचे एक कांस के बर्तन में पानी भरकर धर लेवै उसमें पलीता का तेल टपकावै इकइस बार मंत्र पढ़कर बालक के फूँक डाल देने से टोना दूर होता है ॥

दीठि निवारण मंत्र ॥

ओं क्लीं कलमत काली कंकाली विकट कला कां कां कपाली ओं क्लीं ॥

इतवार मंगल को सायंकाल इस मंत्र को इकइस बार पढ़कर फूँक डाले पीछे मिलावें के ५ फल उतार कर जलते हुए चूल्हेमें झोंक देवै तो बालक के लगी हुई दीठि निवारण हो ॥

पूतना निवारण मंत्र ॥

ओंप्रस्फुलिंगप्रस्फुलिंग हुंकार फुंकारज्वलज्जल जलबिकटयक्षिणी हुं हुं आवेहि आवेहि मुंच मुंच ॥

शुक्रवार या बुधवार को इस का नियम करै पहिले दिन कुछ रात गये पांच दुधारे बृक्ष पीपर, बरगद, गूलर, पकरिया, पलास इनके नीचे जाकर धूपदेवे और यह कहदे कि हम कल तुम्हारे पत्र लेजावेंगे फिर एक पहर रात्रि रहे जाकर थोड़े १ पत्ता सभों के तोड़ लावे तिन की पत्तल बनावे और नदी के दोनों किनारे की माटी मँगा रक्खे स्त्री पुरुष दोनों ब्रतकरैं साम को कढ़ी भात बनावैं जब अर्द्धरात्रि का समय आवे तब बालक को लेकर गावँ के बाहर चौराहे पर जावें मट्टी सवासेर से कमनहो उसका पुतला बनाकर उसी चौराहे के बीच में धरें काला बस्त्र पहिनाकर काजर सेंदुर आदिसे सब शृंगार कर देवें तत्पश्चात् उस पत्तल को उसके सन्मुख धर सात बार कढ़ीभात की बलि देवे और मंत्र पढ़ता जावे फिर मांस मदिरा मछली पांच तरह की मिठाई वह भात उसके सन्मुख धर कर एक मट्टी का दीपक तेलसे जलाकर छाती पर रख देवे पानी से आचमन कराकर चलाआवे लौट कर पीछे न देखे अवश्य पूतना की बाधा शांत होगी ॥

प्रेत या चुरैल निवारण मंत्र ॥

ओं ह्रीं क्लीं कंकालकपर्दिनी कूटम्बरीआडम्बरी हंकार बंकार धः धः

नीम की पत्ती की धूनी देकर इतवार मंगल को इस मंत्र से झारै बाधा शांत हो ॥

नेत्रबाधा निवारण मंत्र ॥

ओं अंगाली बंगाली अत्तालपत्तालगर्दमर्दअदार कदार फटफट उत्कट ओं हुंहुं ठः ठः

इतवार मंगल को कुशसे २१ बार पढ़कर झार देने से सर्व प्रकार की नेत्र बाधा दूरहो ॥

कर्णबाधा निवारण मन्त्र ॥

ओं कनकपहारधंधरधारप्रवेशकरडारडारपातपात झारझार मारमार हुंकार सवद सांचा ओं क्रीं क्रीं

सांपकी बांबीकी मृत्तिका से इकइसवार इस मंत्रसे पढ़कर झार देवै फिर वही मृत्तिका लगादेवै सब प्रकारकी कर्ण बाधा शांतहो॥

मुखबाधा निवारण मंत्र ॥

ओं अलकयक्षिणी खलकभक्षिणी तूँवर ताँवर त्रां त्रां आं ईं ऊं हूं फट् ॥

मोर पंख से इकइसबार मंत्र पढ़कर झारने से सब प्रकारकी मुखबाधा दूरहो ॥

कंठमाला निवारण मंत्र ॥

ओं ह्रीं नमो नारसिंहार आदेश गुरूका धाईकाराई का चक्रचलंता दहनकरंतावज्र छेदन भेदनओंठःठः

उत्तर मुख बैठकर एक पुरुष के एकही हाथके खोदेहुए कुशोंसे चन्द्रवार पुष्य नक्षत्र में इस मंत्र को पढ़कर झार देवै ॥

मस्तक पीड़ा निवारण मंत्र ॥

सहस्र घर घालै एकघर खाय आगे चलंता पीछे जाय मंत्रसांचा फुरोबाचा ॥

हाथ से पकड़कर मस्तक फूँक देवै पीड़ा बंद हो ॥

मन्त्र आधा सीसी का ॥

कोकर्ता कुड़कर्ता बाटका घाटका हाकदेता पवन बन्दता योगीराज अचल अचल ॥

इस मन्त्रको पढ़कर इक्कइसबार झार दे फिर एक नमककी कंकड़ी पानी में घोलकर घिसदे तत्काल बंद होजाय॥

नकसीर निवारण मंत्र॥

ओं आऊतोलाऊतो दशौदिशधावंता पर्वत कूटै खंड खंड करता मन्त्रसांचा फुरोबाचा॥

मन्त्रको पढ़कर पानी फूक दे वह पानी नाक में बारम्बार सुरकै नकसीर बन्द होजाय॥

उदर पीड़ा बायगोला पिलही आदि निवारण मंत्र॥

काली काली कंकाली नद्दी पार बसै इस्माइल योगी लोहका कछोटा काट काट लोह का गोला काट काट मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोबाचा॥

इस मंत्र को पढ़कर लोहे की छूरी से जमीन पर रेखा करै इतवार मंगल झारै शान्त होय॥

झुरहा निवारण मंत्र॥

ओं ह्रीं यक्षनायकी भयंकरी जंगल जैर सात नालाबहै मारमार फटकार कटकट स्वाहा

गांव के बाहर किसी डीहपर बैठकर इतवार मंगल के दिन झारै कोरे खपरा की गिटकरी पढ़कर बालक के ऊपर उतारता जाय इकइस बार ऐसा करै फिर गिटकरी किसी दुधारे बृक्ष के नीचे गाड़ दे बालक अच्छा हो॥

कटि पीड़ा निवारण मंत्र॥

चलता आवे चलता जाय भस्म करंता डह डह जाय सिद्ध सावरकी आन मंत्र सांचा फुरोबाचा॥

चन्द्र पर्व में कुमारी कन्याके काते हुए सूत्रको इस मन्त्र

से पढ़कर फूँकदे उसका डोरा एकसौ एक तार का बटकर कटि में बांध देवै पीड़ा शांतहो ॥

सर्वज्वर निवारण मंत्र ॥

ओं भैरवभूत नाथे विकराल काये अग्निवर्ण धाये सर्वज्वर बंध बंध मोचय मोचय त्र्यम्बकेति हुं ॥

सहदेई की जड़ इतवार मंगल को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर दाहिने भुजा पर बांध देवै तो सब प्रकार का ज्वर उतर जाय ॥

तिजारी निवारण मंत्र ॥

ओं नमो महाउच्छिष्ट योगिनी प्रकीर्ण दंष्ट्रा खादति चर्वति नाशति भक्षति ओं ठः ठः ठः

ऊँगा को फूल इतवार मंगल के दिन लाकर इस मंत्र से अभिमंत्रित कर दाहिने भुजा पर बांधने से तिजारी दूर हो ॥

चौथिया निवारण मंत्र ॥

ओं ऐं ऐं ओं महमह द्रावय द्रावय ओं ऐं ऐं ओं महमह ओं ह्रीं ॥

चन्द्र पर्व या सूर्य पर्वमें नदीमें खड़े होकर इसमंत्रको १०८बार जपनेसे चौथिया निवारणहो ॥

चलावा निवारण मंत्र ॥

ओं आं ईं ऊं थं थं थूत्कार फूत्कार जहँ से आवै तहँ कोजाय योगी जूट कलंदर खाय चल चल ओं आं ईं ऊं स्वाहा ॥

इस मंत्रको पढ़कर आकके पत्ते अग्निमें जलावे चलावा दूरहो॥

भूतोन्माद निवारण मंत्र ॥

ओं गंडा देई थर हर काँपै गौरी दीया ताला झँपैराख की थैली चूनेकी चोट ओं हुं शब्द साँचाफुरोवाचा॥

कसाई की छुरीकी कील बनवाकर इतवार मंगल को इस मंत्र से इकइसबार झारकर कील को अभिमंत्रित कर कबूर के नीचे गाड़ दे भूतोन्माद तुरंत दूर हो ॥

ब्रह्मराक्षस निवारणमंत्र ॥

ओं क्रां कनक की कपाल में बसै बीर कंकाल दूर धरंता आगीको पानीको झोरी में रहै बीर योगी वैताल पकड़ लाता भूत को प्रेत को डाकिनी को ब्रह्मराक्षस को बंध बंध मंत्र सांचा फुरोबाचा ॥

मंगल के दिन अर्द्धरात्रि में लाल लँगोट बांधकर पीपल के नीचे एक सौ आठ बार मंत्र को जपै दाहिना हाथ चीरकर बलिदेवै पश्चात् सात लौंग सातबार मंत्र से अभिमंत्रित कर खिला देने से भूत प्रेत डाकिनी ब्रह्मराक्षस दूर होजाय ॥

मूठि निवारण मंत्र ॥

ओं ह्रीं आई को लगाई को जट जट खट खट उलट पलट लूकाकोमूकाको नारनार सिद्धयतीकी दोहाई मन्त्र सांचा फुरो बाचा ॥

जिस ओर से मूठि आती दीखै उस ओर पढ़ पढ़ उर्द फेंकै मूठि लौटि जाय ॥

सर्वोपद्रव निवारण मन्त्र ॥

ओं नमो आदेश गुरुका धरती में बैठ्या लोहेका पिंडराख लगाता गुरुगोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा फुरोबाचा ॥

ब्रह्मचर्य हो मृगचर्म पर बैठकर मंत्र पढ़ पढ़ खीरकी आहुति दे सब प्रकार का उपद्रव शान्त होजाय ॥

शत्रु नाशन मंत्र ॥

ओं ऐं ह्रीं महामहा बिकराल भैरव ज्वलत्काय मम शत्रु दह दह हन हन पच पच उन्मूलय उन्मूलय ओं हां हीं हूं फट् ॥

स्मशान में भैंसा के चर्म पर बैठकर ऊनकी माला लेकर इस मंत्र को जपै पश्चात् सवासेर सरसों का हवन करै सात रात्रि ऐसा करने से निश्चय शत्रु को नाश हो ॥

शत्रु मोहन मंत्र ॥

ओं वानरुद्राभिमुखी श्वेत दामी पट्टिका कांचनी कोलंबिनी द्रव द्रव ओं वं वं वं ओं ठः ठः

इतवार मंगल को शत्रुके बाम पैर के नीचे की मृत्तिका लाकर उसका पुतला बनावे पृथ्वी मे धर कर काले बस्त्र से वेष्ठित कर उसपर शत्रुका नाम लेकर आवाहनकरै फिर व्याघ्रचर्म पर बैठकर स्फटिककी माला से इस मंत्रको जपकरै शत्रु मोहित होजाय ॥

शत्रु उच्चाटन मंत्र ॥

ओं तुंग स्फुलिंग वक्रिमचांचिक बिद्वहन मांधवनं स्फूं स्फूं ओं ठः ठः ॥

इतवार मंगल को जब अमावस पड़े तब अर्द्ध रात्रि के समय ऊँट चर्म पर बैठकर श्वेत गुंजाकी माला से शत्रुके नामसे एक सौ आठ माला जप करै अवश्य उच्चाटन होय ॥

शत्रु बशीकरण मंत्र ॥

ओं ज्रां भं संखाक्षन रयति बक्रिका आवेहि आवेहि आकर्षयति तं तं तं ओं धः धः ॥

शनिश्चर चतुर्दशी कृष्णपक्ष में स्मशान में जाकर शव की

छाती पर बैठ कर स्फटिक की माला से ११००० मंत्र जप करै काला वस्त्र पहिनै पश्चात पीले आकके पत्र और सरसों का हवन करै शत्रु तत्काल वश होय ॥ शत्रुविद्वेषण मंत्र ॥

ओं गां गीं गूं हासति मञ्जांक्ष द्रां द्रां द्रां ध्वां ध्वां ध्वा आहि आहि ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥

स्याही के चर्म पर बैठ कर इतवार मंगल की रात्रि में इस मंत्र को पढ़ पढ़ उर्द और स्याही के रोम मिला कर अग्नि में आहुति दे पश्चात् स्याही का कांटा अभिमंत्रित कर शत्रु की देहली के नीचे गाड़ देने से परस्पर विग्रह हो ॥

शत्रुगति स्तंभनमंत्र ॥

ओं क्रां क्रां क्रां ककुद्काय कांकिणि हठहठ बठवठ चंचत चर्किका ध्वांग ध्वांग स्तंभ स्तंभ ठः ठः ॥

शत्रुके सोने की जगह से मृत्तिका लाकर सवासेर का पुतला बनावे उसके हृदय मे लोहे का त्रिशूल गाड़े और उसी पर एक पैर रखकर मंत्र जपै शत्रु की गति स्तंभित होजाय मंगल अमावस की रात्रि में बबूर के नीचे यह कृत्य करै ॥

जिह्वा कीलन मंत्र ॥

ओं छां छीं छूं जोगजंति वाद्रावति भींकारस्त-जंतिमाभा आह्वायति कांकां कृत ओं ठः ठः ॥

मंगल अमावास्या में लाल शिरका गिरगिट मार कर उसके मुखमें लोहेकी कील गाड़कर कुशहरीकी मालासे जपै सिद्धहोय ॥

शत्रु उन्मादन मंत्र ॥

ओं त्रां त्रां त्रां त्रोटति नृकपालेकर्पूरकलाचमत्कार चां चां चां डह डह धिंग धिंग धः धः ॥

शनिश्चर अमावाश्या अर्द्ध रात्रि में श्वेत कनैरके नीचे जंगली

महिष चर्मपर बैठकर मनुष्य अस्थि की माला से जप करै काले धतूर के बीज और कडुये तेल की १०८ आहुति दे तत्काल शत्रु को उन्माद पैदा हो जाय ॥

शत्रु ज्वर उत्पन्न करन मंत्र ॥

ओं कुसाम्बकी कालोली धरती धरन गगन चारन जास्या मह्या द्रां द्रां द्रां ओं ठः ओं ठः ओं ठः ॥

मंगल के दिन नृकपालमें खीर पकाकर इस मंत्र से १०८ आहुति देवै तुरंत शत्रु ज्वर से पीड़ित हो ॥

शत्रु तन पीड़ाकारक मंत्र ॥

आयागौरी गोलाधाया मातन्वी उत्तरसे दक्षिणको जाया चर्मतिवर्मति हुंकार हुंकार फट फट फट ॥

इतवार मंगल की अर्द्धरात्रि में तेलीके शवकी छातीपर नग्न खड़े होकर काली ऊन की माला से जपकरै ॥

सर्वजन वशीकरण मंत्र ॥

ओं तालतुंवरी दहदहदौ भालभाल आंआं आं हुंहुं हुं हें हें हें काल कमानी कोटकारिया ओं ठःठः ः॥

राज हंस को पंख और कोवनी के फूलसुरह गौ के दूध में खीर पका कर मंत्र पढ़ पढ़ अग्नि में आहुति करै चित्त में बश करनेवाले का ध्यान करै तत्काल सिद्धि होय ॥

राज वशी करण मंत्र ॥

ओं धुं धुं बीन बीन धाधा लवजंता द्रवति दह्या जा जाल कहंता बह बह मातंगी मामान अमा अमा ओं क्षः क्षः क्षः

श्वेत रेशमी बस्त्र पहिनकर मोती की माला से जपकर श्वेत दूर्वा और रूपकामिनीके फूल अग्निमें आहुति करै राजावशहो ॥

वेश्या वशीकरण मंत्र ॥

ओं कनक कामिनी आठबाठ सूलसलाका पाजल पंचाल पंचाल ओं यं यं यं यं यः ॥

विल्व वृक्ष के नीचे काले मृगचर्मासनपर बैठकर श्वेत कांचनी के फूल और बिल्वपत्र मंत्र पढ़ २ अग्नि में आहुति करै जिस वेश्या का ध्यान मनमें करै तुरंत वशहो ॥

परस्पर द्वेष करण मंत्र ॥

ओं क्रीं क्रीं क्रीं क्रां क्रां क्रां स्फें स्फूं धां धां धां ठः ठः ॥

अमावास्या की रात्रि में स्मशान में जाकर मुर्दा की खोपड़ी में उर्द पकावै फिर इतवार मंगल को मंत्र पढ़२ जिसजिसके मकान पर फेंकै परस्पर लड़ाई होने लगै—

राजसन्मान दाता मंत्र ॥

ओं हंहंहं ओंलंलंलं क्रांक्रां ओं हूं

रात्रि में नदी के प्रवाहमें खड़ा हो एक स्फटिक की माला से ग्यारह सौ मंत्र जप करै सोमवार प्रतिपदा से आरंभकरै पूर्णमासी को खीर का हवन करै ग्यारहसौ आहुति दे राजसन्मान करै ॥

परस्पर प्रीति वर्द्धन मंत्र ॥

ओंशीसा वासा फूल विरौना छाल लंगूरा हल हल हलै क्रीं क्रीं क्रीं ठः ठः ॥

चन्द्र पर्व में नदीके किनारे दालभ्य की लकड़ी और श्वेत कादम्बरी के फूल तिलमिला कर मंत्रपढ़ अग्निमें आहुतिदे मित्रताबढ़े।

प्रेत वशीकरण मंत्र ॥

ओं साल सलीता सोसलवाई काग पढ़ंताधाई आई ओं लं लं लं ठः ठः ॥

शनिश्चर अर्द्ध रात्रि में नग्न हो बबूर के वृक्ष के नीचे आक की लकड़ी जलाकर मंत्र पढ़२ काले तिल उर्द की आहुति दे प्रेत सन्मुख आ बातैं करैं उस समय दृढ़ हो अपना हाथ काटकर सात बूंद रक्त के पृथ्वी पर टपकावै प्रेत सदा बश में रहै जब बुलाना हो रात्रि में झाड़े फिर आबदस्त ले शेष पानी बबूर पर चढ़ाता जाय मंत्र पढ़ता जाय तुरंत आजाय॥

स्त्री बशी करण मंत्र॥

ओं आं ईं ऊं ऋं लृं काम कामिनी कला कौतूहली ह्लांह्लां ह्लां ओं क्लीं॥

दिवाली या होली के दिन मध्याह्न में चंचिका पक्षी मारलावै और संध्या समय उसकी चोंच चावल भर कर सरोवर के किनारे गाड़ि आवै प्रातः काल उखाड़ लावै फिर यह मंत्र पढ़कर जिसस्त्री को चावल खिलादे तत्काल बश होय॥

अन्य बशीकरण मंत्र॥

ओं यंयंयं ओं रंरंरं लंलंलं ठः ठः ओं क्लीं॥

सोमबार को खटकुलीपक्षी को मारकर उसकी चोंच में सुपारी डालकर नदी के किनारे गाड़ि आवै मंगल को सबेरे उखाड़ि लावै सुपारी काढ़ि लेवै फिर वह सुपारी पान में डालकर मंत्र पढ़ जिसे खिला दे तत्काल बश होय॥

अन्य बशीकरण मंत्र॥

ओं हुं हुं हुं हां हां हां हं हं हं हैं हैं स्फूं स्फूं ठः ठः॥

इतवार मंगल को गुडहली पक्षीको मारकर उसका मांस केसर में रगड़ मंत्र पढ़ तिलक दे जो देखै तत्काल बश हो॥

भूत प्रेत बकुशने का मंत्र॥

ओं धीं धीं ध्यान करंता अलखयती हांक देत

हां करत धावै बोलबोलबोल शब्द सांचा फुरोवाचा॥
लहसुन के रसमें हींग मिला कर मंत्र पढ़ आंख में अंजन करै जिसके भूत प्रेत लगा हो वह तुरंत बकुरै ॥

अकाल गर्भ पतन निवारण मंत्र ॥

ओं धांग धांग बाज का कल्पई का पिण्ड का घलाई काराखंता भाखंता ओंहुंहुं शब्द सांचा फुरोवाचा ॥
इतवार मंगल को गार्गी पक्षी का मांस मंत्र पढ़कर गर्भिणी स्त्री को खिला दे समयपरही पुत्रहो ॥

पशुबाधा निवारण मंत्र ॥

ओं ज्वाला माले करतल काले लां लीं लूं हः हः ॥
इतवार मंगल को हुदहुद पक्षी मार कर उसका मांस मंत्र पढ़ पिसान में लपेट कर पशुको खिलादे सब प्रकार की बाधा दूरहो ॥

तथा अन्य मंत्र ॥

ओं कनक कलाई आई बाई लाग लगाई दूर दूर बलाई ओं ठः ठः ॥
इतवार मंगल को गुदहली पक्षी को मार कर उस का कलेजा निकाल मंत्र पढ़ पशुस्थान में गाड़ दे बाधा दूरहो ॥

कामना पूर्ण करन मंत्र ॥

ओं विद्युज्जिह्वे चंचल काये गंध गंध प्रसारिणि देहि देहि ओं हां हीं हूं हः ॥
अर्द्धरात्रि के समय नदी में खड़ा हो स्फटिक की माला से एक सौआठ माला जप करै पश्चात् एक माला से जलतंडुल की खीर बना कर अग्नि में आहुति करै कामना पूर्ण हो ॥

दाढ़ पीड़ा निवारण मंत्र ॥

ओं बनकी तोंबी जहर बलाई कीड़ा कूड़ा जड़ गड़ खाई आगन सेती लागन सेती ओं क्षः क्षः क्षः ॥

इतवार मंगलको मंत्र पढ़२ कोरीसींकसे झारै कीड़ा मरजायँ ॥

हू कथन कलखारीको मंत्र ॥

ओं हुसन कूकुर हसनु कूकुर सातौ बच्चा सातौ रकत के बूंद ओं हुँ हुँ हुँ फट् ॥

अँगोछा बट बट कर झारै पीड़ा निवारण हो ॥

ववासीर को मंत्र ॥

ओं छाई छूई छलक छलाई आहुम् आहुम् कं क्रांक्रींहूं

इस मंत्र से पानी फूँक कर इतवार मंगलको आबदस्त ले ववासीर रोग जाय ॥

विदेशी बुलानेका मन्त्र ॥

ओं ग्लां ग्लीं ग्लूं ओं श्रीं ह्रीं श्रींह्रीं हः हः ॥

पीपल के नीचे काले मृगचर्मासन पर बैठ कर रुद्रवंती और श्रीफल की खीर बनाकर मंत्र पढ़ आहुति दे विदेशी शीघ्र घर को लौटि आवै ॥

बर्राना निवारण मंत्र ॥

ओं कं कं कं कं कं ठः ठः ॥

इतवार मंगल को नीलकंठ का पंख मंत्र पढ़कर शिखा में बांध लेवे तो सोते में बर्राय नहीं ॥

सर्प विष निवारण मंत्र ॥

ओं झार झंखार काले कोठवार बाल पलीता दह दह छः कारी छः गोरी छः छीपी अठारह जाती जाग जाग शब्द सांचा फुरो वाचा ॥

मंत्र पढ़ गूमा को फूल अढ़ाई मिर्च डाल बांट कर पिला दे सर्प का विष उतर जाय॥

श्वान विष निवारण मंत्र॥

ओं हसन हसानी कूकुर पलानी खाट में लोटै बाट में भूकै आउआउसिद्धयती शब्द सांचा फुरोबाचा॥

इतवार मंगलको कोरी सींक से झारै और कुकरौंधा पुराना गुड़ करुआ तेल मलकर जखम परलगानेसे तत्काल विष उतर जाय॥

नाफ झारनेका मंत्र॥

ओं कंचन काया पिंड समाया लोहझरंतावाज बजाया ओंहुमशब्द साचा फुरोबाचा॥

जिस पुरुष की नाफ हटी हो उसको पृथ्वी पर सीधा पौढ़ा देवे और तोंदी के बीच कोरा घड़ा धरै ऊपरसे दूसरे घड़ा से भर कर खड़ा हो मंत्र पढ़ता जाय पानी एक धारसे घड़े में गिराता जाय घड़ा भरजाने पर उतार ले नाफ ठिकाने आजाय॥

शूल निवारण मंत्र॥

ओं वाहिवाहि गुरू लोलंवकशूल त्रिशूल त्रां त्रां त्रों॥

इतवार मंगल को मंत्र पढ़ मिर्चा गुड़ में लपेट कर खिला दे शूल बंद होजाय॥

बिस्फोटक नेवारण मंत्र॥

ओं घट घट बैठी शीतला फेरत आवै हाथ ओं श्रीं श्रीं श्रीं शब्द सांचा फुरोबाचा॥

मंत्र पढ़ हाथ फेरै शीतला निवारण होजाय॥

बीछी को मंत्र॥

ओं कारी बीछी करमतवाली हरीसोनकी नारी सांप केकाटे स्वावैबीछीकेकाटेरोवैशब्दसाचा फुरोबाचा।

मंत्र पढ़ नीम की पत्ती हाथ में दबावै बीछी उतर जाय ॥

जादू निवारण मंत्र ॥

ओं आहूता मंदरश्म यज्ञाज्वल्यं जम जम जम ओं गाहि गाहि गाहि ॥

काले धतूर के बीज मंत्र पढ़ अग्नि में डालै जादू दूरहो ॥

बाई दूरहोने का मंत्र ॥

ओं मूलनमः धुक्षतमः जाहि जाहि ध्वांक्षतमः प्रकीर्ण अंग प्रस्वार प्रस्तार मुंच मुंच ॥

इतवार मंगल में तिलोई पक्षी के पंख से झारै बाई दूरहो ॥

चिलक बाई दूरहोने का मंत्र ॥

ओं चिलंग स्फुलिंग शमः शमः ॥

चिचिका पक्षीके पंखमे इतवार मंगलमेंझारै चिलक बाईदूरहो॥

बलाई दूर होनेका मंत्र ॥

ओं खस खस गिरै काल कमान उलटापड़ै डामरू बान शब्द सांचा फुरो बाचा ॥

इतवार मंगल को मंत्र पढ़ गागीं पक्षीका कलेजा अलसी के तल में तल बांध दे बलाई दूर हो ॥

सर्वग्रह बाधा निवारण मंत्र ॥

ओं ऐं ह्रीं क्लीं दह दह ॥

प्रदोष के दिन से सात दिन बराबर मालपुआ और कस्तूरी की १०८ आहुति दे ग्रहबाधा दूर हो ॥

देवबाधा निवारण मंत्र ॥

ओं सर्वेश्वराय हुम् ॥

सोमबार से नौ दिन लगातार गरी और काले तिल की मंत्र पढ़ तीन माला की आहुति दे देव बाधा दूर हो ॥

सर्प कीलने का मंत्र ॥

बैठि समुंदर करी गोहार जहर बुझाया अचललो हार धुकधुकबरै पत्थर किलै शब्द सांचाफुरोबाचा ॥

सात बेर मंत्र पढ़ निगोही की जड़ फूँक सर्प को सुंघादे निर्विष होजाय ॥ सर्प खोलने का मंत्र ॥

आताका जाताका लाग लगाताका चलताका फिरताका खोलखोल अलखयती शब्दसांचा फुरोबाचा

मंत्र पढ़ तुनी की लकड़ी सुँघादे सांप खुल जाय ॥

पीनस निवारण मंत्र ॥

करू तोंबरी छप्पर चढ़ी बीस बिलाई बावन गढ़ी रोंक रोंक सिद्धयती शब्द सांचा फुरो बाचा ॥

मंत्र पढ़कर सात बेर झारै पीछे श्वेतपथरचटा पीस कर नाक के ऊपर बांध दे सब कीड़े जमीन में गिर पड़ैं ॥

भ्रमी निवारण मंत्र ॥

ओं अम्बुज्ज हां जालंधरी जोखुदरी जुहोम जुहोम

सातबेर मंत्र पढ़ चांचिका पक्षी का पंख शिखा में बाँध देवै घुमनी न आवैगी ॥

हेरुहा निवाण मंत्र ॥

ओं काही 'कालंदरी का लंकिनी डामी डिंगिति डिंगिति हां हां ॥

जिसके पेटसे हेरुहा गिरतेहों उसे इतवार मंगल को इस मंत्र से सातबेर अभिमंत्रित कर हुदहुद पक्षी का मांस खिलादे हेरुहा गिर पड़ैं ॥ अखाड़ाबांधने का मंत्र ॥

ओं गुंजान गुंजान गुंजान गुंधती बीर गूदरयती की आनशब्द सांचा फुरो बाचा ॥

सातबेर मंत्र पढ़ कनिका की लकड़ी अखाड़े के चारों कोन में गाड़ देवे अखाड़ा बँध जाय ॥

कुश्ती जीतने का मंत्र ॥

ओं मल्लां मल्लां बादर बासंता आहूम आहूम ॥

इतवार मंगल को मंत्र पढ़ कनिका की लकड़ी दाहिने भुजा पर बांध लेवे कुश्ती में हारै नहीं ॥

मिरगी निवारण मंत्र ॥

ओं आवेद्धि कामकपाली धिगां धिगां आह्रीं आह्रीं

इतवार मंगल को कुलीर पक्षी को मार कर उसका कलेजा काढ़ कर सातबेर मंत्र से अभिमंत्रित कर दाहिने भुजा पर बांध देवे मृगी निवारण हो ॥

जादू निवारण मंत्र ॥

ओं प्लीं ह्रीं प्लीं ह्रूँ ठः ठः ॥

जयंती की खड़ाऊं पहिन कर इसमंत्र को जपै जादू दूर हो

गर्भ मोचन मंत्र ॥

ओं क्लीं श्रीं ह्रीं हुं हुं हुं ठः ठः ॥

इसमंत्रको सातबेर पढ़कर पानी फूंक कर पिलादे बालकप्रसवहो ॥

दृष्टिबन्दकरन मंत्र ॥

ओं ह्रां धः ह्रां ठः ह्रां ठः ॥

इसमंत्र को पढ़ जयंती की लकड़ी विस जिसके नेत्रों से में लगा दे दृष्टिबंद होजावे ॥

स्वर बंधन मंत्र ॥

ओं क्रां क्रां क्रां ठः ठः ॥

इसमंत्र से आमूलिका के बीज अभिमंत्रित कर जिसे खिलादे उसका स्वर बंद होजाय ॥

सर्पभगानेका मंत्र ॥

ओं गुहार बुहार लाही कूं झार चलचल जालंधर यतीकी आन शब्द सांचा फुरोवाचा॥

इतवार मंगल को जमजमा के बीज लाकर मंत्र से अभिमंत्रित कर जिस२ स्थान में फेंक देवै सर्पभाग जाय॥

जुआं जीतने का मंत्र ॥

ओं ठुं ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं वानरो विजयति ॥

दिवाली की अर्द्ध रात्रमें पीपल के बृक्ष के नीचे लाल वस्त्र पहिन कर बैठे और इसमंत्र को पढ़कर कादम्बरी के फूल और गूगल मृगमद मिलाकर १०८ आहुति देकर पश्चात् एक फूल मंत्र से अभिमंत्रित कर दाहिनेभुजापर बांधकर जुआं खेलै अवश्यजीतै

व्यापार वर्द्धक मंत्र ॥

ओं श्रीं श्रीं श्रीं परमांसिद्धिं श्रीं श्रीं श्रीं ओं ॥

प्रदोष का व्रतकर संध्या समय नागेगी के फूल अष्टगंध मिश्रित कर तीन माला मंत्र जपै पश्चात् १०८ आहुति दे और फिर सात प्रदोष तक लगातार प्रति दिन करतार है व्यापार की बृद्धिहो ॥

लक्ष्मीदाता मंत्र ॥

ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्थिरांस्थिरां ओं ॥

कांचनी के बृक्षके नीचे काले मृगचर्मासन पर बैठकर स्फटिक की माला से ४१ दिन ११० मंत्र नित्त जपकरै लक्ष्मी प्राप्तहो ॥

अदृश्य धन देखने का मंत्र ॥

ओं कनकस्फुटिटि बिष्वक सेनाचीं आंजनी परमां दृष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

अष्टधात की कटोरी में मंत्र को लाल चंदन और कांचनी की लेखनी से लिखदे फिर कस्तूरी या हरण मार्गशीर्ष की पूर्णमासी के मारे हुए के चर्म के आसन पर बैठकर मूंगा की माला से मंत्र

जपकरै और अष्टगंधकी १०८ आहुति दे कटोरी को अभिमंत्रित करै जिस जगह धन गड़ा होगा कटोरी उसी जगह पर चलकर रुक जायगी ॥

चोर पकड़नेका मंत्र ॥

ओं धूम्रांजन हुंकार स्फटिति दह दह ओं ॥

इतवार मंगल को कर्पटिका बृक्ष के नीचे बारहसिंगा के चर्म पर बैठकर गांधूली की लकड़ी जलाकर मंत्र पढ़ै सरसों और गूगल का हवन करै सहित धन के चोर आप से आन आमिलैं ॥

अभियोग जीतने का मंत्र ॥

ओं क्रां क्रां क्रां धूम्रमारीवदाक्षविजयतिजयतिओंह्रूं

नदी के किनारे त्रयोदशी पुनर्बसुनक्षत्र में सुरह गौ के चर्म पर बैठकर प्रवालकी माला से जपै मुकद्दमा जीते ॥

स्वामी बशी करण मंत्र ॥

ओं छुं छुं छुं छां छां डः हः ॥

गांधोली के फलके फल की गुठली की माला से सूर्य पर्व में नदी के किनारे आंजनी बृक्ष के नीचे सोमावती अमावश्या के खोदे हुए कुशाओं के आसन पर बैठकर जपै स्वामी बश हो ॥

घरबैठे धन मिलने का मंत्र ॥

ओं ह्रीं श्रीं श्रीं ध्वः ध्वः ॥

मृगसिरानक्षत्र में मारेहुए काले मृग चर्मासनपरसरोवर तट कनकांगुदी बृक्ष के नीचे बैठकर स्फटिक की माला से जपै अनायास धन मिलै ॥

सर्वकष्ट निवारण मंत्र ॥

ओं ध्रीं श्रीं ह्रीं ब्रं ब्रः ॥

नदी के भीतर पैठकर गांधोली फल की गुठली की माला से तीन दिन लगातार ११०० मंत्र जपै सब प्रकार का कष्ट दूरहो ॥

महा मोहन मंत्र ॥

ओं श्रीं धुं धुं ठः ठः ॥

चिंचिका पक्षी का पंख परेवा को लाकर कस्तूरी में पीस मंत्र पढ़ तिलक करै जो देखे मोहित हो ॥

वंदीमोचन मंत्र ॥

ओं ध्रीं भ्रीं उत्कलां श्रृंखलां घः घः ॥

मृगसिरा नक्षत्र में मारेहुये श्याम कुरंग चर्मपर कस्तूरी और कचनार की लेखनी से बँधुआ का नाम लिख कर उसीपर आसन कर उत्तर ओर बैठकर कनकांगुदी की लकड़ी जलाकर कनक चंपा के फूल खीर में मिश्रित करि मंत्र पढ़२ सातदिन प्रतिदिन ११०० आहुति दे कैदी छूटजाय ॥

सिद्धांजन मंत्र ॥

ओं थ्रुं थ्रुं थ्रूं थ्रुं थ्रूः थ्रूः थ्रूः ॥

चतुर्दशी को चिंचिका पक्षी मारकर उसके नेत्र निकाल कर्पूर मिश्रित पीसकर मंत्र पढ़ आंखमें लगावै अदृश्य पदार्थ देखपड़ै ॥

युद्धविजय मंत्र ॥

ओं ध्रिंग ध्रिंग ध्रिग ध्रिगां धीं धीं ठः ॥

तिलोई पक्षीका पंख मंत्रपढ़ दाहिने हाथमें बांध अवश्यजीतै

दलविचलन मंत्र ॥

ओं धं धं धं ध्रीं ध्रीं ठः ॥

कुलीरापक्षी का पंख मंत्र पढ़ ध्वजा में बांध शत्रु की सेना को दिखावै सब भाग जाय ॥

अग्नि निवारण मंत्र ॥

ओं फः फः फः

मंत्र पढ़ कुलीरा पक्षी की चोंच अग्नि में डाल देवे अग्नि बुझ जाय ॥

जलस्तंभन मंत्र ॥

ओं थं थं थं थाहि थाहि ॥

मंत्र पढ़ कुलीरा पक्षीका पंजा जलमें डुबो दे जल रुकजाय

जलपर चलनेका मंत्र ॥

ओं ठं ठं ठः ठः ॥

अचली बृक्षकीखड़ाऊं पहिन मंत्र पढ़जलपरचला जायडुबैनहीं

आकर्षणमंत्र ॥

ओं यं यं यं लं लं लं क्रं क्रां क्रीं ठः ठः ॥

मंत्र पढ़ कुलीरापक्षी का मांसअग्नि में हवन करै जिसे बुलाना हो मन में ध्यान करै तुरंत आखड़ा हो॰

स्तंभन मंत्र ॥

ओं वं वं वं हं हं हं ध्रां ध्रां ठः ठः ॥

इतवार मंगल को मंत्र पढ़ निगोही के बीज जिस पर फूंक चलावे वहस्तंभित होजाय॰

यात्रा निवारण मंत्र ॥

ओं म्लः म्लः म्लः ध्रीं ध्रीं ॥

यात्राकरनेवाले का नाम पृथ्वी में लिख मृगचर्मासन उसपर बिछाकर बैठे और जंबूर बृक्षकी लकड़ी जलाकर मंत्र पढ़ गार्गी पक्षी का मांस आहुति करै यात्रा बंद होजाय॰

बनहाइनि बुलाने का मंत्र ॥

ओं खार की खबीसनी समुंदर पारते धाई आउ बैठी आउ गढ़ी आउ चलती आउ उछलती आउ जालंधर यती की आन शब्द साँचा फुरो बाचा ॥

इतवार मंगल को मंत्र पढ़ पढ़ निग्येही के बीज सब दिशा में चलावै वनहाइनि नंगी हो दौड़ी आवे—

नौका स्तंभन मंत्र ॥

मंत्र पढ़ कुलीरा पक्षी को मार जिस जगह नदी किनारे गाड़दे वहांसेआगे नाव न चलै —

परस्पर विरोध कराने का मंत्र ॥

ओं ग्लां ग्लां ग्लुं ग्लुं ग्लुं धर्षति मर्षति ठः ठः

मंत्रपढ़कुलीरा कोपंखाजिस २ केदुओरगाड़दे अापसमेंवैरलड़ाईहो

अग्नि में न जलन कामंत्र ॥

ओं चं चं चं छां छां छः ॥

अचली का फूल कमर में बांध मंत्र पढ़ आगीमें कूद पड़ैन जलै-

पति वशीकरण मंत्र ॥

ओं ह्रीं ध्रीं क्रीं थ्रीं ठः ठः ॥

परेवाके दिन परेवापक्षीको मार लावै फिर मंत्रपढ़ उसका मांस पान में डाल खिलादे पतिवश होजाय ॥

काराही बांधने का मंत्र ॥

ओं श्रीं श्रीं श्रीं श्रां श्रां जूां जः जः ॥

हुदहुद पक्षी को मारकर उसका मांस मंत्र पढ़ कराहीके नीचे डालदे कराही न तपै ॥

पत्थर बराइबे का मंत्र ॥

ओं भ्रीं भ्रीं भ्रीं भ्रां भ्रां भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रः भ्रः

निगोही के बीज मंत्र पढ़ जिस दिशा को फेंके उस दिशा में पत्थर गिरै ॥ दामिनी निवारणमंत्र ॥

ओं प्रज्वलति जोगर्जति त्रां त्रां त्रां त्रः

अरहर बृक्षकेबीज मंत्रपढ़जिसओर फेंकेउसदिशामें बिजुली न गिरै

चलता कोल्हू बंद करने का मंत्र ॥

ओं थ्रां थ्रां थ्रां थ्रां थ्रां थः थः स्तंभस्तंभ ॥

मंत्र पढ़ अचली बृक्षकी लकड़ी कोल्हू केनीचे गाड़दे कोल्हूनचलै

सिंह बांधने का मंत्र ॥

ओं नमो हक्काल बक्काल आखिल खिलकत खोलत बांधत जाय जाहूद जाहूद ॥

२१ बार मंत्र पढ़ अचली का फूल दौड़कर सिंह की ओर फेंकदे सिंह रुक जाय ॥

टीड़ी दूरकरने का मंत्र ॥

ओं आभीर आभीर जंगल का तीर उलटा आया सीधा जाय अम्हः अम्हः ॥

मंत्र पढ़ टीड़ी पकड़ पृथ्वी में गाड़ै उसपर खड़ाहो मंत्र पढ़ २ औंघी के बीज फेंके टीड़ी दूरहो ॥

जंगली जीव बराइबे का मंत्र ॥

ओं जंगलकी भीलनी जादूकी कीलनी दह्या दह्या मिदुष्टतम त्रां त्रां ॥

मंत्र पढ़ अचली की लकड़ी अपने चारो ओर घुमाकर अग्नि में डालदे कोई जीव पास न आवै ॥

पक्षियों की चोंच बंद करनेका मंत्र ॥

जहर भरा काठका पूतला उड़ता जाय अकास अक्लीम अक्लीम ॥

परेवा के दिन गार्गी पक्षी को मारकर उसकी चौंच में पीले सरसो भरकर नदी के किनारे गाड़ि आवै प्रातः काल खोदि लावै सरसो निकाल ले मंत्र पढ़ सरसो फूंक जिस पक्षी की ओर चलावे उसकी चोंच बंद होजाय और फिर उड़ने न पावै ॥

एक मंत्रसे तीन काम ॥

ओं कलमुल आमिया वादिहोम अहबुल मस्सावी स्फूं स्फूं स्फूं ॥

नरक चतुर्दशी के दिन नरगा पक्षी मारकर उसकी चोंच में धान भरदे और नदी के किनारे गाड़ि आवै सबेरे उखाड़कर धान निकालकर ऐसी जगह बोवे जहां स्त्री की छाया न पड़े उनमें जब बाली पकैं तब धान निकालकर हाथ से चाउर निकाले खूँदैं नहीं वह चांवल मंत्र पढ़ बाजीगर के खेलपर मारै खेल बिगड़ जाय नटकी ओर फूँककर मारै नट कलासे चूक जाय और उन्हीं चावलों को मंत्र पढ़ २ जल में डारै तो दूसरे का किया हुआ यंत्र मंत्र जादू न चलै॥

पशु के बहुत दूध उतारने का मंत्र॥

ओंजलहल जहहल थामीथामी उज्जिहालबः बः

मंत्र पढ़ अचली की लकड़ी की आग में गूगलधर पशु के थन सेंक दे दूध बढ़ जाय॥

आयुर्दायबढ़ानेकामंत्र॥

ओं आरीमेंड हरा राई में पहरा काली का पूतला बंह वह स्थीं स्थीं स्थीं॥

मंत्र पढ़ चिचिका का पंखा शिखा में बांधै आयुर्दाय बढ़ै॥

बाचा सिद्धहोनेकामंत्र॥

ओं उद्दह उद्दह देववाणी आभीं आभीं॥

अक्षय तीज को कुंलीरा पक्षी को मारकर उसके मुखमें चांवल भर तालकिनारे गाड़ि आवे प्रातःकाल उखाड़ि लावे चांवल निकाल प्रथम बियाई श्वेत गऊ के दूध में खीर पकावे कुशासनपर बैठकर मंत्र पढ़ १०८ आहुति अग्नि में डालै ११ दिन मौन रहै जो कहै सत्य होय॥

फोड़ा झारने का मंत्र॥

ओं सहतिलहल्ल मियाँ आविर्भूता प्रदहत् ओं ठः ठः

इतवार मंगल को चौराहे की बिना नांघी हुई माटी से मंत्र पढ़

सात बेर और मट्टी फोड़ा पर लगा देवै अच्छा होजावे ॥

चोरगति स्तंभन मंत्र ॥

ओंकाजू बियाबान लाजुहाला आसमां उस्सा-
कीकूं कूं ओं ॥

दिवाली के दिन स्वाती नक्षत्र में संध्या समय चिंचिना बृक्ष के नीचे बैठ अष्टगंधादि से धूप दीप करै पश्चात् सवा हाथ की लकड़ी उसमें से काटि लावै और अपने पास रख छोड़ै जब कभी चोर पकड़नाहो मंत्र पढ़ उस लकड़ी को चला दो लकड़ी उड़ कर चोर के चिपक जायगी और आगे न चलने देगी ॥

एक मंत्र से तीन काम ॥

ओं गाजुहल हलाली अबदत प्रत्याही साल्मली
सं सं सं ओं ॥

सोमवार अमावस अनुराधा नक्षत्रमें पडुकुली पक्षी को मारलावै और उसके मुख में उर्द भर कर ताल किनारे गाड़ि आवै गेरहें दिन प्रातः काल उखाड़ि लावै और वे उर्द निकासि लेवै फिर मंत्र पढ़ कर वे उर्द कुम्हारके आवा में डालने से आवा न पकै बर्तनों के ढेरपर ढालने से बर्त्तन आपस में लड़भिड़ कर फूट जाय चाक पर डाल देवै तो चाक बंद होजाय ॥

बेरी खुलने का मंत्र ॥

ओं अजुहत हुस्साल आदि होम प्रतिमथ माम
थाली ओं हं हं ओं ॥

चन्द्र पर्व की रात्रि में अत्रली की जड़ लावै फिर मंत्र पढ़ उसे बेरी हथकरी जंजीर ताला जिस में छुआदे आप से आप खुलजाय॥

दूध को पानी और पानी को दूध करने कामंत्र ॥

ओं विरहत सादियामा मिहाल अह अह ओं ॥

सोमवार पुनर्बसु नक्षत्र में हिंगुवार के बीज लाकर मंत्र पढ़

दूध में डालै तो पानी होजाय और पानीमें डालै तोदूध होजाय॥

तेल को पानी और पानी को तेल करने कामंत्र ॥

ओं ताब हीर हरदिया हुलहुल आक्रां आक्रां ॥

इतवार मंगल को हिंगुवार की जड़ लाकर मंत्र पढ़ डाल देने से उपरोक्त ठीकहो ॥

आंख की फूली काटने कामंत्र ॥

ओं हज्जार ज्वाला उज्जहार धः धः ॥

इतवार मंगलके सबेरे मंत्र पढ़ छुरीसे जमीन में रेखाकरै फूली कटजाय ॥ बहुत भोजन करने का मंत्र ॥

ओं प्रतिगत आमसाली आगस्त्या द्रांभीद्रांभीद्रांभी

परेवा के दिन हिंगुवार के फूल लाकर मंत्र पढ़ कमर में बांध ले चाहे जितना भोजन करता चला जाय ॥

क्षुधानिवारण मंत्र ॥

ओं गाजुहद्दरव्यां उन्मुख सुखमांसरधिलताली आहूम आहूम ॥

इतवार हस्त नक्षत्र में चर्चिका के बीज लाकर मंत्र पढ़ खा लेवे फिर भूख न लगै ॥

पानीबरसाने का मंत्र ॥

ओं सामह सामह आजुझाता गुलवहानी उकरसार द्रव द्रव द्रव ॥

हिंगुवार की लकड़ी पैर के नीचे दबाकर नदी में खड़ा हो मंत्र जपै पानी बरसै ॥

पानी रोकने का मंत्र ॥

ओं आस्फोटयतिधार धारा उलमल्लका क्रांक्रांकां

इतवार मंगल को षटकुली पक्षी का पंख लावै फिर मंत्र पढ़

पंख कांख में दबाकर पानी मे खड़ा होजाय पानी बंद होजाय ॥

विषदूरकरनेका मंत्र ॥

ओं तमहानी उर्दमहानी बासुन्धरी विष्वक् हालाहलोनाप्यायति ठःठः॥

इस मंत्र को पढ़ गोधूमा की जड़ पानी में बांट कर पिलादे विष दूर हो ॥

मार्ग चलने से न थकने का मंत्र ॥

ओं कमठ आकर्षयति माहूत मारुता बिज्जुता चल चल उत्कर्ष उत्कर्ष ओं ऐं ॥

जबकभी सोमवार अनुराधा नक्षत्र में सूर्यपर्व हो उसदिन संध्या समय अचली बृक्षके नीचे जाकर एक हाथ से शुद्ध लोटा में जल भर कर मंत्र पढ़ चढ़ावे फिर अष्टगंध की धूप कर उपरांत सवा बीता की जड़ खोदलावे फिर जब कभी मार्ग चलना हो मंत्रपढ़ कर उस जड़ को अपने पास लेलेवै चाहे जितना चलाजाय थकै नहीं ॥

बंध्याके पुत्र होने का मंत्र ॥

ओं अकसल विज्जहीता क्रांदव क्रांदव खण्डां खण्डां त्वरत्वर प्रासाबितमाग्रहीता ओंह्रीं क्रीं ठःठः

कुलीरा पक्षी जोकि अण्डा देती हो उसको शनिश्चर चतुर्दशी के सायंकाल मार लावे और चिर्चिरा के बीज उसके मुखमें भर कर ताल के किनारे ऐसी जगह गाड़े जहां किसी की छाया न पड़े फिर प्रातःकाल स्नान कर ऊर्णवस्त्र पहिन उसको उखाड़ लावे बीज मुखसे निकाल धो डाले सवापाव चावल उसमें मिला कर गौके दूधमें खीर पकावै मंत्र पढ़ ११ आहुति अग्नि में देकर ऋतुवती स्त्री को शेष खीर खिलादे अवश्य गर्भ धारण करै और पुत्र चिरायु हो ॥

मृतवत्सा के पुत्र जीने का मंत्र ॥

ओं अदितेदिते दिव्यां गतिं मासूति सूरि रश्मय गर्भां ठह ठह ठह ॥

सोम प्रदोषमें एक पहर रात्रि रहे स्नानकर कांचनी वृक्ष के नीचे जावे मार्ग में मंत्र पढ़ता जावे फिर वहां अष्टगंध की धूप दे उसकी पकी फली तोड़ लावे उनके बीज निकाल गौ के दूध में खीर पकावै स्त्री को स्नान कराकर सफेद मृत्तिका के चौके में बैठाले और कहै कि अदिती का ध्यान कर इस खीर के सात ग्रास खालो फिर जब तक बालक न हो एक बार भोजन करै सायंकाल शुद्ध हो कुशा की आसनी पर सोवे किसी अन्य स्त्री की छाया न पड़ने पावै तो अवश्य बालक चिरायुहो

दशक्रियाकरन मंत्र ॥

ओं सार्पे सार्पे उनमूलितांगुलीयके आवेहि आवेहि कायिका दोहद वः वः ॥

दिवाली के एक दिन पहले स्मशान में जाकर खोपड़ी को उठाकर औंधी कर गेरू से सात रेखाकर मंत्र पढ़ जलमें औंधा कर चलाआवे फिर दिवाली की अर्द्ध रात्रि में उसी स्थान में जाकर नग्न हो उसखोपड़ी को निकाल लावे स्मशान की लकड़ी की आगी जलाकर उस खोपड़ी में उर्द और चांवल खड़े चुरावे तब तक मंत्र पढ़ता खड़ारहै पश्चात् उनको निकाल शुद्ध जल से साफ कर घरले आवै मार्गमें किसी से बोलै नहीं फिर इतवार मंगल को मंत्र पढ़ जिसका नाम ले उर्द चावल फेंकै उस पर मूठि चलै गोली आती देखे मंत्र पढ़ फेंकै गोली रुक जाय तलवार की धारपर पढ़ मौर धार कुण्ठित होजाय बाजीगरकी तोंबीपरपढ़ फेंकै तो तोंबी बंद होजाय जहां बहुत बाजा बजतेहों वहां मंत्र पढ़ फेंकै बाजा बंद हो जाय जिसको खिलादे वह मूक होजाय घरमें पढ़

फेंके मूस न रहैं खेतमें पढ़ फेंके हराखेत सूखजाय वृक्षपर पढ़फेंके वृक्ष सूख जाय जिसजगह मच्छर बहुत लगतेहों वहां पर फेंके मच्छर न लगैं ॥ मुर्दा जिलाने का मंत्र ॥

ओं आह बाई बिहद बलाई जाग्रत जाहूद अक्कबूद कुड्मल चक्कां सज्जत सां सां सां ओं ठः ठः ठः

रविवार प्रातःकाल स्नान कर मौन हो गुहांजन वृक्षके नीचे जाकर कुशासन पर खड़े हो मंत्र का जप करै सायंकाल दही भात खा उसी वृक्ष के नीचे पृथ्वी में शयन करै तीन दिनयही क्रिया कर सायं काल एक सवाहाथका सोंटा काटै मंत्र पढ़ता जाय मौन हो घर ले आवे उसलकड़ी पर किसी की छाया न पड़ने पावै फिर मंत्र पढ़ कर मुर्दे के छुवादेवे तो अवश्य जी उठै ॥

नपुंसक करने का मंत्र ॥

ओं माहिष्मती का कुंदनी सुधिया अजवह लहवा माहूय माहूय ॥

परेवा के दिन हुदहुद पक्षी को मारकर उसका कलेजा काढ़ करमंत्र पढ़ पान में रख जिसे खिला दे वह नपुंसक होजाय ॥

सभा मोहनी तिलक ॥

ओं धर्षण मार्तण्डा कुहरमानाशयति आधूयति तज्ज तज्ज तज्ज तमहार हां हां हां ॥

कांचनी वृक्षके नीचे की मृत्तिका उस स्थान की जहां किसी की छाहीं न पड़ी हो लावे स्नान कर मंत्र पढ़ तिलककर जिस सभामें जाय वह सभा देखकर मोहित होय ॥

शास्त्रार्थ जीतने का मंत्र ॥

ओं जीव जीव जीव उद्भट मेधा महप्रसारयमुष्म आत्तोल रसना ठः ठः ठः ॥

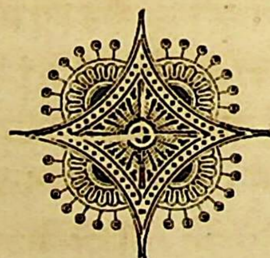
त्रयोदशी के दिन प्रातः काल एक हाथ से हुदहुद पक्षी को गोली से मार लावै फिर उसका पंख श्वेत चंदन कस्तूरी में घिस कर माथे में त्रिपुण्ड्र लगा कर जिस वाद में जाय अवश्य जीतै॥

आकाश में चलने का मंत्र ॥

ओं कनकाचल गुहांधकार विवर विभ्राटवाला दवायूवहान उग्रहान सुंद सुंध पठ पठ पठ चल चल चल ओं ठः ठः ॥

चन्द्र पर्व में अचली वृक्षकी लकड़ी लाकर बिना काष्ठ लगेहुए शस्त्रसे खड़ाऊँ बनावे फिर मंत्र पढ़कर खड़ाऊँ पहिन आकाश में उड़ता चला जाय खड़ाऊं पैरसे हटा लेवै तो पृथ्वी पर आजावै और जिस जगह जाने की इच्छा करै तो मंत्र पढ़कर खड़ाऊँ पहिन कर चलै तुरंत पहुँच जाय ॥

इतिश्री महा सिद्धसाबर तंत्रे तृतीयो मंत्रवर्गः॥



श्रीगणेशायनमः ॥

अथ

महासिद्धसाबरतंत्रः

चतुर्थो तंत्र वर्गः ॥

गर्भ धारण पर फल घृत ॥

त्रिफला, महुरेठी, कूट, दोनौंहरदी, कुटकी, बायविडंग पीपरि, मोथा, कायफर मेदा, महामेदा, काकोली, असगंध सरिवन, पिथवन, मकरा, सौंफ, हींग, रासन, दोनों चंदन चमेली के फूल वंशलोचन कमल शक्कर अजमोद दतून ये दवा सब तोला तोला भर ले और एक रंग के गऊ व बछवा तिसका घी दवाओं का चौगुना और उसका चौगुना दूध त्रिनुवां कंडाकी आंच में मंद मंद काढ़ा करि पचावे फिर मट्टी या तांबे के पात्र में रख छोड़ै सुंदर तिथि महूर्त देख कर जो स्त्री इसको सेवन करै इसके प्रभाव से बन्ध्या के पुत्र हो और मृतवत्सा का पुत्र चिरायु हो ॥

सूतिका गृह रक्षा की यत्न ॥

इतवार मंगल के मरे हुए बानर की खोपड़ी सूती घर में रखने से कोई बाधा नहीं आती ॥ अन्य॥

साम सवेरे अष्ट गंध गूगल का धुआँ करने से किसी प्रकार की बाधा नहीं आती ॥

बालक रोवे नहीं ॥

इतवार मंगल को नीलकंठ पक्षी का पंख लाकर जिस चार-

पाई में बालक सोताहो उसमें खोंस देवै तो बालक रोवै नहीं ॥

जमोगा का यत्न ॥

सफेद कबूतर का जोड़ा घर में रखने से जमोगा की बाधा नहीं आती ॥

अन्य ॥

देशी साबुन मटर भर बँगला पान के रसमें घोटकर पिलादे ॥

अन्य ॥

जायफर और कस्तूरी एक रत्ती प्रमाण बँगला पानमें घोट कर पियावे ॥

बालक की सर्दी दूरहो ॥

सेहुड़ का पत्ता गुन गुना कर उसका अरक एकसूती पिलावे ॥

अन्य ॥

व्याघ्र का मांस२ रत्ती खिलावे अथवा माताके दुग्ध में पीस कर दोरत्ती प्रमाण जायफल पिलावे अथवा समुद्र फेन घिस कर पिलावे ॥

बालक की नजर बाधा दूरहो ॥

इतवार मंगल को भिलावें के फल सात या पांच बालक के ऊपर उतार कर चूल्हे में फूंक दे ॥

अन्य ॥

अर्द्धरात्रमें चौराहे में बालकको लेजा कर गर्म पानी से नहलावे अथवा सात अन्न या सात प्रकार की मिठाई सवा सेर बालक के ऊपर उतारा कर चौराहेमें धरदे ॥

गंजा की यत्न ॥

सरीफा और कैथाकी पत्ती बराबर बांटकर शिरमें लेप करै अथवा चमेली के तेल में हांथी दांत की भस्म मिलाकर मलै अथवा कपास बीजका तेल खाली लगानेसे शिरकी झाई व गंजा आदि सबदूरहो.

शिर दूखना बंदहो ॥

मुचकुंद के फूल पीस कर मस्तक में लगावे अथवा हींग और अफीम घिसकर लगाना सर्दी की शिर पीड़ा को गुणकारक है या ईसबगोल का लुआब खतमी के फूलों में मिलाकर लगावे ॥

आधासीसी का यत्न ॥

शीतल चीनी और कपूर छः छः मासे बारीक पीस एक छटांक गऊ के ताजे घी में भूनकर घी मलें अथवा तिल की पत्ती सिरका या पानी में पीसकर लगाने से गुण कारक है ॥

नेत्ररोग की यत्न ॥

मुण्डी का अरक मुनक्का पीसछान एक गिलास प्रातःकाल पीवै तो नेत्र उठै नहीं ॥

मेहँदी की पत्ती पीसकर पैर के नीचे तलुओं में लगावे तो दुखना बंद हो अथवा घिगुवार का पट्ठा से बीच फाड़कर आंबाहर्दी पीस कर ऊपर छोड़कर तलुओं में बांधले ॥

तमाकू के अर्कमें फिटकरी गेरू अफीम और हर्र बड़ी रगड़ कर नेत्र के ऊपर लगावे तो दर्द दूर हों और लाली जाती रहै अथवा गेहूं के आटे का हलुवा अथवा ताजा खोवा गरम कर नेत्र के ऊपर बांधे अथवा कुशकी जर आवांहरदी अफीम गेहूँ के आटा एकमें पीस घी में तलकर उसकी टिकिया नेत्र के उपर बांधे ॥

वड़ालौंगा फिटकरी बतासा बकरी के दूध में पीस कर लगावे तो पलकों का मोटा होना और नेत्र से पानी बहना आदि बंदहो ॥

रतौंधी का यत्न ॥

केलाका पानी लगावे अथवा गदहा की लेड़ी की रस आंखमें लगावे अथवा इलाची का तेल लगाने से रतौंधी

दूरहो— प्याज का जल या अदरक का रस लगाना भी रतौंधी को गुणकारक है ॥

पीनस का यत्न ॥

नींबकी पाती, प्योंदी बेर की पाती दोनों बराबर पीस कपड़े पर लपेटकर नाकपर रखना चाहिये, अथवा पथरचटा मय जड़पत्ती के पीसकर नाकमें थांपै तो कीड़ा गिरपड़ैं अथवा कुत्तेकी जीभ जलाकर थूकमें मिलाकर जखमपर लगाना श्रेष्ठहै-- गुर्च और हलदी कूटकर मीठे तेल में पकाकर नाकमें टपकाना चाहिये अथवा छिली हुई मसूर और अनार का छिलका कूटछान कर लगाना उत्तमहै ॥

कर्ण शूल की यत्न ॥

मदार के पीले पत्तों का रस गर्म करके कान में टपकाना चाहिये अथवा भाँग के पत्तों का रस निचोड़ छान गर्म कर कान में टपकावे अथवा नीम की अढ़ाई पत्ती, अजवायन, हल्दी चने बराबर लड़के के मूत्र में पीसकर गर्म करके दो तीन बूंद कान में टपकावे अथवा लहसुन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में औटाकर कुछ गर्म कान में टपकाना उत्तम है— साँप की बाँबी की माटी गेरू अफीम धतूर के रस में या मकोय के रस में पीस कर गुनगुना कर कान की जड़ पर लेप कर ऊपर से मदार के पीले पत्ते गरम करके बाँधे तो कर्ण शोथ दूरहो ॥

मुख के रोगों की यत्न

दवा जोकि जीभ के मुहासों को गुण करे- फिटकरी, शीतल चीनी छः छः मासे लेकर खूब महीन पीस कर गर्म पानी में डाल कर सुहाता २ कुल्ला करे अथवा गूलर के दूध में पापरी कत्था सुपारी और घिसकर जीभ पर लगावे--अथवा शीतल चीनी, बंश लोचन, रूमीमस्तगी, गुजराती इलायची गुर्चकासत पीपरि छोटी,

मिसिरी ये सब दवायें छः छः मासे ले कूट कपड़ छान कर एक तोला माखन के साथ खावे ॥

दवा जोकि दांत की पीड़ा को गुण करे—फिटकरी बड़ी हर्र खट्टे अनार का छिकला, सेंधानिमक बराबर सब एक में मिलाकर कूट कपड़ छान कर दांतों में मले. अथवा भूंजी लाल फिटकरी व भूंजी अफीम नमक हुलास काली मिर्च भूनी सोंठ चूल्हे का पूता बकरा की हड्डी की भस्म बराबर ले कूट छान कर दांतों पर मले अथवा मौलसिरी की छाल की राख दांतों पर मलै अथवा बबूर के पंचांग के काढ़ा की कुल्ली करना दांत पीड़ा को श्रेष्ठ है- थोड़ा सा कपूर और हींग दाढ़ के अंदर भर दे तो कीड़े मरजावें--तंबाकू और काली मिर्च पीस कर दाढ़ पर मले ऊपर से कडुये तेल की कुल्ली करे अथवा भूनी फिटकरी एक तोला भूना तूतिया ३ माशे पापरी कत्था २ तोला कूट छानकर मंजन दांतों पर मलना पीड़ा को नाशक है और दन्त पुष्ट कारक है-

कण्ठ के रोगों की यत्न ॥

सूखा करेला सिरकामें पीस गुनगुना लेपकरे अथवा तोंबे के बीज गेरू लाल चंदन कालाजीरा, सिरसकी छाल, मसूर, कालीमिर्च कालीजीरी, सूखाकरेला, सोये के बीज ये सब दवायें बराबर सिरके में पीसकर गुनगुनाकर कण्ठमें लेपकरना शोथ तथा पीड़ा को गुण दायक है सेमर की छाल जलाकर तिलों के तेलमें मिलाकर लेपकरे--मेथी और जव का आटा बराबर सिर के में पीस कर कुछ गर्म लेपकरे ॥

वह औषधि जोकि कण्ठके नासूर और कण्ठमाला को गुण करे— छिपकली मारकर करुये तेलमें जलाकर उसका मलहम जखम पर लगावे— नीमकी गूदी कंजा की छाल और पोस्ते का दाना अलसी के तेलमें चुराकर जखमपर लगाना चाहिये ॥

खांसी का यत्न ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, लोहरस, कुटकी, हर्र अफीम, शोधाहुआ धतूर का बीज, गुजराती इलायची, चिरायता, कपूर, लौंग, जायफल इन सब की बराबर मात्रा ले कूट कपड़छानकर सहिंजन के रस में चार पहर घोट कर चना प्रमान गोलीबना कर मुखमें राखे तो खांसी जाय ॥

बासा के पंचांग का काढ़ा प्रातःकाल पिये तो खांसी श्वास दूरहो- अथवा बहेरे का छिलका, महुरेठी, मिसरी बराबर कूट छान कर सहत में सुबह साम चाटै- शंख की खाक छः मासे पानके बीरे में खाय तो खांसी दूरहो अथवा कंटकारिके फूल खावे तो खांसी को गुण करै ॥

श्वास का यत्न ॥

बारहसिंगे का सींग जला कर तीन बार प्याजके रसमें बुझावे फिर उसकी भस्म एकरत्ती प्रमाण बँगलापान में खाये तो श्वास दूरहो अथवा सोंठ मिर्च पीपरि अतीस लौंग जायफर जावित्री अकरकरहा अजवायन ये सबदवायें धेला २ भरले कूटकर खट्टे अनार को कोलकर उसमें भर मुँह बंद कर ऊपरसे कपड़मिट्टी कर कंडा के अहरा में पकावे पकजाने पर निकाल कर सहित अनार के कूटकर उसकी गोली चना से दूनी बनावे एक गोली सुबह और एक शामको खाय तो श्वास दूरहो अथवा प्रातःकाल कुछ गुनगुना पानी एकलोटा पीकर कय करे पीछेसे मुहँ साफकर के अदरक का रस सहत मिलाकर चाटै तो लाभहो ॥

कँखरवारीका यत्न ॥

घीगुवार के पट्ठापर आंबाहरदी सूखीपीस कर डालकर कुछ गुनगुना करके बाँध अथवा पीपल के मुलायम पत्ते घी चुपड़ कर गुनगुने करके बाँधे अथवा प्याज को पीस के उसमें मुर्गी के अँडा केलुआब और आंबाहरदी मेथी अजवाइन पीस मिलाकर घी में तल

कर बांधे अथवा पुरानी ईंट बारू पीस छान कर सिरके में मिलाकर गर्मकर बांधे अथवा कुंदुरु पीस कर नमक मिलाकर कुछ गर्म सोहाता हुआ बांधै॥

उदररोग का यत्न॥

औषधि जो कि वातोदर को गुणकरै पीपरि छोटी, सेंधा नमक २मासे पीसकर गऊके माठा में फाँके अथवा कूटजयपाल जवाखार सोंठि मिर्च पीपरि छोटी सेंधा नमक खारी नमक कालानमक बच जीरा अजमान हींग सज्जी खार चीत चाब इनका चूर्ण गर्म पानी के संग खाने से हितहै अथवा आदमी बराबर चौड़ा गढ़ा खोद कर उसमें जंगली कंडा भरकर फूँक देवे फिर उसकी आग निकालकर कुछ गर्म रहै तब रोगी को उसीमें बैठावे और कपड़े से सब अंगढकदे पसीना आवे तो उसे पोंछै पीछे सोवा बारू सिरका में पीसकर पेट पर गुनगुना लेपकरै तोलाभहो-

अथ पित्तोदर का यत्न॥

निसोत का काढ़ा अंडी का तेल दध में मिला कर पीवे अथवा निसोत त्रिफला के काढ़ा में घी डाल कर पीवै अथवा प्रातःकाल त्रिफला की फंकी फांक कर ऊपर से गो मूत्र एक छटांक पीवे।

अथ कफोदर का यत्न॥

सोंठ मिर्च पीपर छोटी नागर मोथा इनका काढ़ा गोमूत्र और अंडी का तेल मिला कर पीवे—अथवा लोहचून अंडी के तेल और दूध मे पीवे॥

अथ अतीसारका यत्न॥

धवके फूल एक तोला पीस कपरछान कर गोदही का तोड़ दूरकर उसमें मिलाकर खिलावे अथवा चीनियां गोंद पापरीकत्था, चाकमिट्टी और अफीम बराबर पीसकर चना प्रमाण गोली दोघंटे पर देवै तो अतीसार दूरहो अथवा हाऊबेर

धवफूल, लोध, लजालू, कुरैया, धनियां, अतीस, मोथा, गुर्च बेल, सोंठि इनका काढ़ा बना कर पीवै तो अतीसार दूरहोय॥

अथ संग्रहणी की यत्न॥

छोहारे की गुठली निकाल कर उसमें दो चने की बराबर अफीम धर कपरोटी कर मंद आंच से अग्नि में पकालेवे फिर पीस कर उसकी गोली जंगली बेरके समान बांध लेवे तीन घंटपर एक गोली खिलावे तो दस्त बंद हों और वायु शुद्ध हो अथवा पक्का कैथा आठ भाग शक्कर छः भाग अनार अमिली बेल धवके फूल अजमोद पीपरि ये सब तीन२ भाग मिर्चे, सफेद जीरा, धनियाँ, पिपरामूल, सुगंधवाला, अजवायन, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसरि, चीता सोंठि ये सब एक२ भाग इन सब काम हीन चूर्ण करि छः मासे गऊके मठामें खाय तो दस्त बंद होवें अथवा हींग, जहरमोहरा, खटाई, मिरची, अफीम ये सब दवा बराबर ले खलकरि चना बराबर गोली नींबू के रस के साथ खाय तो संग्रहणी दूरहो अथवा अफीम साढ़े तीन मासे, अकाकिया सात मासे भाऊके फूल चौदहमासे, सामक चौदहमासे, हुबुलास चौदह मासे बबूर के गोंद के रसमें गोली दोमासे की बांधै एक गोली खाय तोदस्त एक घंटेमें बंद हो॥

पेट की पीड़ा और अरुचि की यत्न॥

यदि पेटमें अफरा और भारीपन हो तो नमक मिलाकर गर्म पानी पी कर के करना चाहिये— अथवा पानीगर्म कर के साफ़ बोतलमें भरकर डाटबंदकर पेटपर फेरै तो पीड़ा बंदहो अथवा घी में खड़ा लाल मिर्चा जलाकर एकछटांक के अंदाज घी पिलावे अथवा लाल मिर्चा गुड़ में लपेट कर खिलावे॥

चूर्ण जोकि बायुको शुद्धकर के अग्नि को दीप्तकरै सनायकी पत्ती, हर्र, बहेरा, आंवला, कालानमक सब बराबर

ले कूट कपर छानकर नींबू के रसमें गोली बांधकर एकगोली शाम औरएक सबेरेखाय तो भूखलागैअथवा गंधकसुधा,आरासुधा,अजमोदा त्रिफला, जवाखार, चीत, सेंधानोन, जीरा,सोंचरनोन, बायविडंग, सांभरनोन,सोंठि, मिर्च, पीपरि सब बराबर ले सब के तुल्य बकायन को बकला ले प्रथम पारा गंधक कै कजली करै तब सब एक में मिलाकर जँभीरी के रस में सात दिन घोटै फिरि एक रत्ती की गोली बांधि खाय तो अजीर्ण जाय और भूख लगै और यदि सोंठि, हर्र और गुड़ के काढ़ा से लेवै तो सब प्रकार की उदर व्याधि दूर हो अथवा सोंठि १ भाग मिर्च २ भाग पीपरि ३ भाग सेंधा नोन ४ भाग सुधा गंधक आवरासार ५ भाग नींबू के रस में खरल करि १ रत्ती प्रमाण गोली सुबह साम खाय तो अग्नि दीप्त हो क्षुधा लगै ॥

सिंगिया २ टंक सुहागा २ टंक सेंधानमक २ टंक सब को पीस पाव भर अदरक के रस में सुखावै फिर पाव भर दही के तोर में सुखावै फिर पाव भर नींबू के रस में सुखाकर दो रत्ती प्रमाण की गोली बंधै दो गोली रोज खाय तो अजीर्ण, बिशूचिका, पेटका फूलना, बायगोला, पिलही, गुल्म शूल आदि सब शांत होय और क्षुधा लगै ॥

प्लीहा और बायगोला की यत्न ॥

प्रातःकाल गोमूत्र का सेवन करै तो दूरहो अथवा घीगुवारका गाभा एक तोला हरदी के चूर्ण के साथ खाय तो पिलही और बायगोला का नाश हो ॥

कृमि रोग की यत्न

शोधापारा १ टंक, गंधक २ टंक, अजवायन ३टंक बकायन का बकला ४ टंक पलास पापड़ा ५ टंक बकायन के बीज २ टंक ये सब दवा पीसकर अढ़ाई टंक रोज पांच टंक शहद में चाटै अथवा

बायबिडंग सेंधानमक, जवाखार, कसीला हर्र सब बराबर ले कपड़ छान कर गाय के छांछ में दो टंक खाय अथवा बायबिडंग का चूर्ण शहद में चाटै ॥

अथ पाण्डु रोग की यत्न ॥

लोहासार सातदिन तक गोमूत्र में पकावै फिर पीस कर १ टंक रोज गुड़ के साथ खाय अथवा पुनर्नवा, कचूर त्रिफला त्रिकुटा, चाब पिपरामूल चीत देवदारु सोनामाखी, दारुहरदी नागरमोथा मजीठ कचूर निसोत कुठदंती इन्द्रयव कुटकी काकरासिंगी कायफर अजवायन सब टंक २ भर ले सबसे दूना मंडूर लेकर अठगुने गोमूत्र में पकावै गोली एक टंक प्रमाण माठा में खाय तो असाध्य पाण्डुरोगभी अच्छा हो अथवा त्रिकुटा तज, मारी हुई लोहेकी कीटी बेर की गुठली मिर्च सोनामाखी ये सब दवा बराबर ले कूट कपड़छानकर शहद में गोली बांधै ४ टंक की एक गोली प्रातः काल माठा के साथ खाय तो पाण्डु रोग का नाश हो ॥

अथ पेंचिस की यत्न ॥

गऊके दहीमें राह, आमकी गुठली, बेलकी गूदी पीसकर मिलावै पियै अथवा गन्ने को भूनकर उसको चूसै तो सब प्रकार की पेंचिस दूरहो ॥

अथ हिचकी को यत्न ॥

पिपरी बंसलोचन गुजरातीइलाची तज मिसरी यह सितोपलादि नामकचूर्ण शहद में चाटै तो सब प्रकार की हिचकी दूरहो अथवा भटकटैया को पंचांग चारसेर चौगुने जलमें औटावे जब चौथाई रहै तब उसमें ये दवायें डालै गुर्च चाब, चीता, मोथा, काकरासिंगी, त्रिकुटा, जवासा, भारंगी कचूर प्रत्येक पल पल और शकर बीसपल घृत आठपल तेल

आठपल काढ़े में छोड़कर औटै ठंढा होने पर आठपल शहद चारिपल बंसलोचन पिपरी चारिपल मिलाइ उत्तमपात्र में रख छोड़ै फिरएक तोला सुबह शाम खाय तो हिचकी श्वास कासको नाश करै ॥

अथ स्वरभेद की यत्न ॥

काली मिर्च डालकर घृतएक छटाँक पीवै अथवा जायफल जावित्री कस्तूरी लौंग अकरकरहा मिर्च केसर ये सब बराबर ले बँगलापान के रसमें घोटकर मटर भरे कै गोली सुबह शाम खाय तो स्वरभेद जाय अथवा गेहूँ के आंटे का हलुआ तिसमें सरी गरी और आँबाहरदी पीसकर मिलादेवै फिर थोड़ा गर्म कण्ठ के ऊपर बँगला पानपर धर कर बाँधलेवै तो स्वरभंग जाय अथवा कासनी मुलहठी कालीमिर्च बड़ी इलाची मुनक्का गुर्च मिसरी प्रत्येक छः छः मासे ले कूटकर एक पाव पानी में जोश दे कर कुछ गुनगुना पिये ॥

अथतृष्णाकीयत्न ॥

गर्म पानी के पीनेसे सब प्रकार की तृष्णा दूर होतीहै अथवा खस श्वेतचंदन धनियाँ धान की खील मुलहठी छः छः मासे ले पीसछानकर पैसाभर शहद डाल कुछ गुनगुना पीवै—अथवा नारियर का जटा मुनक्का गुजराती इलायची इनको भूनकर पीसकर दो अँगुली शहद में चाटै ॥

मूर्च्छा की यत्न ॥

शोधा मैनसिल बच लहसुन इन्हें गोमूत्र में पीसकर अंजन करै अथवा मैनसिल महुआ सेंधानोन बच मिर्च सब बराबर ले जलमें पीसि अंजन करै अथवा नीलाथोथा मैनफल फिट-करी बराबर ले मैनफल के क्वाथ में घोटकर गर्म जल से लेवै तो बिषकी मूर्च्छा दूरहोय अथवा श्वेतमिर्च श्वेतबेर की मींगी खस नागकेसरि ये सब बराबर ले रात में भिगो दे सबेरे

पीसि शर्बत कर शहद मिसरी मिलाय पिये तो मूर्च्छा दूर हो ॥

अथ तन्द्रा की यत्न ॥

सेंधानोन कपूर सरसों मैनसिल पीपरि महुआ कायफर ये सब घोड़े की लार से घोट बटी करि फिरि घोड़े की लार से अंजन करै तो तन्द्रा दूर हो ॥

अथ दाह की यत्न ॥

पारा शोधा गंधक शोधा कपूर चंदन खस नागरमोथा सम भाग ले पारा गंधक की कजली करि सब दवा मिलाकर जल से गोली बांधै वे गोली मुँह में डारि चूसै तो लोहूकी दाह जाय अथवा बेरीकी कोंपल बकरी के दूधमें बांटि पेटपर लेप करै अथवा यवके सत्तू या मखाना के सत्त मिश्री मिलाकर खाय तो दाह दूरहो अथवा हजार बेर का धोवा घी लेपकरै अथवा एक छटांक धनियां एक पाव पानीमें रातको भिगोदे सवेरे मिसरी डारि पिये अथवा खस रक्तचंदन एक में बांटि लेप करै अंडी के तेल में छूही मट्टी का ढेला डाल देवै भीग जाने पर निकाल पानी में पीसलेपकरै।

अथ मिरगी की यत्न ॥

कूट सोंठ कथाचा देवदारु तीन २ टंक भाँगरा काला काली मिर्च अकरकरा गजबेलि सनई के बीज प्रत्येक६ टंक सब के बरा बर कर गूगल कूट छान कर शहद में २टंक की गोली बनावे सुबह शाम एक२ गोली गर्म पानीसे खावे अथवा सरीफे के बीजों की गरी पीसकर कपड़े की बत्ती में रखकर मिरगी आने के समय बत्ती जला कर उसका धुआं नाक में पहुँचावे अथवा ढांक की जड़ जल में रगड़ कर नाक में टपकावे अथवा छोटी कटाई का दूध दौरे के समय नाकमें टपकावे अथवा रोगी के गले में जायफर छेद कर लटकाना हित है अथवा जिस मिट्टी पर सुवर ने मूताहो उसको अपने पास रक्खे ॥

अधिकनिद्रा की यत्न ॥

काली मिर्चे घोड़े की लार में पीस कर आंख में लगावे सुरमे की बट्टी नींब के दरख्त में गाड़ देवे बरसात के बाद निकाल कर उसमें कपूर और शीतलचीनी डालकर पीस कर आंखमें लगावे ॥

पसली की पीड़ा की यत्न ॥

सेंहुड़ का गूदा निकाल पीसकर उसमें आंबाहरदी मिलाकर घी मे तलकर उसकी पोटली बनाकर आग में गुनगुनी कर सोहाता २ सेंके अथवा बारहसिंगे का सींग सोंठि बड़ीहड़ पानी में रगड़ कर गुनगुना लेपकर ऊपर से गरमकर आक के पत्तेबांधै ॥

उन्माद की यत्न ॥

जहरमोहरा घिसकर एक टंक गुलाब के फूल सूखी धनियां छिलाहुआ खुरफा चन्दन गुलाब में पीस कर फिर उसमें गाव-जवां बंशलोचन एक २ टंक मुश्क आधा टंक सब की दूनी शकर शहद बराबर मिला कर दो टंक गऊ के दूध में खावे अथवा लौकी को कोलकर उसमें ऽ।। गुलकंद भर ऊपर से कपड़मट्टी कर भार में भून कर मलकर शर्बत बनाकर पिलावे अथवा सूखे अवँरा पीस कर तालू में थोपना उत्तम है ॥

अथ छर्दि की यत्न ॥

केशर १ मासा गुजराती २ मासा ईंगुर ३ मासा सब घोटि मधु में चाटै अथवा इलायची नागरमोथा नागकेसर चाँवल के लाई गोरीभर चन्दन बहुफली बेर के बीज लौंग पीपरि सब बराबर ले पीस चूर्ण कर शहद से चाटै तो त्रिदोष की छर्दि जाय अथवा तज तेजपात डोड़ा इलायची सोंठि मिर्च पीपरि लौंग भूना जीरा नागकेशरि पिपरामूल सबका चूर्ण शहद से चाटै तो छर्दि दूर हो ॥

अथ बद्ध कोष्ठ की यत्न ॥

सनाय, पीड़े हड़ की छाल, काली मिर्च एक २ टंक मुनक्का १२ टंक पानी में कूट छान कर गोलियाँ बनावे और नौ मासे खूराक सबेरे साम खावें अथवा सुहागा १ टंक अजवायन साढ़े दश टंक काली मिर्च १२ टंक एलवा १६ टंक कूट कपड़ छान कर घीकुवार के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियाँ बनावे २ गोली सुबह और २ गोली शाम को खावे अथवा सोंठ २ भाग भुना सुहागा पीलीहड़ की छाल सेंधानोन हींग १ भाग सहिजन की जड़ के रस में या पत्तों के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियाँ बनाकर प्रति दिन एक गोली खावे अथवा पीलीहड़ की छाल बेहेरे की छाल आँवला सफेद जीरा सौंफ कालानमक सनाय एक २ तोला सोंठ छः मासे चूर्ण बनाकर छः मासे सोने के समय गर्म जल से फाँक लेवै ॥

अथ विशूचिका की यत्न ॥

मदार की जड़ अदरक के रसमें खरल करके काली मिर्च के समान गोली बनाकर १ गोली खिलावे अथवा सौंफ तीन टंक पोदीना २ टंक लौंग ४ टंक गुलकंद २ तोले औटा कर पिये अथवा पेठे के फूल छः मासे पीसकर पिलावे अथवा सिरफू की जड़ २ मासे पानी में घिसकर पिये अथवा आँव के सूखे पत्ते चिलम में धरकर पिये अथवा पुदीना शक्कर में मिला कर चावै ॥

कामलाकी यत्न ॥

मलया गिरि चन्दन, आँबाहरदी गुलाब में पीसकर शहद मिला कर सात मासे खावे अथवा बबूल की फली शंखाहुली आँवला दोदो टंक कुचल कर एक सेर शक्कर में औटावे जब चतुर्थांश शेषरहे थोड़ी शक्कर मिलाकर साफ करके

पिये अथवा कडुई तोंबी पानी में पीसकर नाक में टपकावे अथवा नींबूका पानी आँखमें टपकावे अथवा मेहँदी की पत्ती एक छटाँक एक पाव जलमें कुचल कर रातमें भिगो दे सवेरे छानकर साफ जल उसका पिये॥

अथवातज्वरकीयत्न॥

सोंठ सोहागाशोधा, सैंधानोन, गंधक आँवरासार समभाग ले चूर्ण करै फिरि सहिंजन के रसमें ७ पुटदे गोली बाँधे १ गोली सवेरे १ शाम को खावे तो बहुत शीघ्र बातज्वर का नाशहो— त्रिफला, त्रिकुटा, सिंगियासुधा पारासुधा गंधक सुधा धतूरे के बीज शोधे धमिश के रसमें चौबिस पहर घोटि अदरक में गोली चना प्रमाण बाँधि एक गोली सवेरे एक शाम को खावे अथवा गुर्च पिपरामूल सोंठि छः मासे प्रत्येक ले कुचल कर आध सेर जल में चढ़ावे अष्टमांश रहै तब छानकर पिलावे अथवा खँभारी मिर्च दाष त्रायमाण गुर्च इनका काढ़ा गुड़ डाल कर पिये॥ पित्तज्वर की यत्न॥

नागर मोथा जवासा पित्तपापरा सुगंध वाला चिरायता नीम की छाल ये सब दवा छदाम २ भरले काढ़ा बना कर पीवे अथवा खैर का चूर्ण छः मासे कुटकी २ मासा मिश्री टका भरि इनका चूर्ण१ तोला फाँकै अथवा गंधक बिष सोंठि पीपरि मिर्च मछरी का पित्ता पैसा पैसा भरि जँभीरी या कागजी नींबू के रसमें घोटै मूँग बरा बर गोली जीरा खांड़ में देवे अथवा चन्दन अमिलतास कुटकी नागर मोथा हर्र पित्तपापरा सब दवा बराबर ले कूटकर काढ़ा बना कर पीवै अथवा गुर्च धनियां लालचंदन पदम की लकड़ी नींबी का गाभ धेला धेला भर कूटकर काढ़ा बना कर पीवै॥

कफज्वर की यत्न॥

त्रिफला, पीपरि का चूर्ण शहद में २ मासे चाटै अथवा नींब

सोंठि गुर्च शतावरि धमासा चिरायता पुष्करमूल पिपरामूलकटैली इनकाकाढ़ा पीवे अथवा हरताल १। तूतिया १। सोहागा १। मिर्च २समुद्रफल १।चूना की कली येसब एकत्र करि कुम्हड़ा के रसमें २१ पहर खरल करै फिर संपुट में धरकर फूँकदे दोरत्ती प्रमाण खांड़में खाय तो कफ ज्वर का नाश हो अथवा काकरासिंगी कायफर पिपरी पुष्करमूल सम भाग ले चूर्ण करि तीन मासे मधुमें चाटै ॥

अथ बात पित्तज्वर की यत्न ॥

पंच मूल गुर्च नागरमोथा सोंठि चिरायता इनका काढ़ा पीवे अथवा हरिण की सींग चूर्ण कर जैत के रसमें खरल करै फिर माटी के बासन में धरि मुँह मूंदि दो पहर की आंच दे उतारि अष्टमांश त्रिकुटा पीस मिला कर चाररत्ती पान में खवावे अथवा बरियारी की जड़ गुर्च अंडकी जड़ नागरमोथा पदमाक भारंगी पिपरी खस लाल चंदन सम भाग ले काढ़ा करि पियावै अथवा रूसा की जड़ गुर्च पित्तपापरा सोंठि नागरमोथा सम भाग ले काढ़ा करि पियै अथवा जेठी मधु महुआ चन्दन कमल कमल की जड़ फालसा लोध संभारी नागकेशरि त्रिफला सरिवन दाख लावा सब सम भाग ले कूट कर गर्म पानी में डालकर मिश्री शहद मिला कर पिलावे ॥

अथ बात कफज्वर की यत्न ॥

चूनी की कली १० टंक हरताल तबकी १० टंक घिकुवार के रस में चारि पहर घोटि टिकिया बाँधि झुरावै फिरि सराब संपुट में कपरौटी करि गजपुट आँच दे शीतल होने पर छः मासे गर्म पानी से खावे अथवा कायफर देवदारु भारंगी नागरमोथा धनियां पित्तपापरा हड़ सोंठि पिपरामूल सब दवा बराबर ले कूटि काढ़ा करि पीवेअथवा बनउर्दी बनमूँग, दोनो भटकटैया,गुखुरू बेल की

जड़ अग्निमंथ सोहनपत्ता खँभारी पाढ़ा इन दशों की जड़ का काढ़ा पीपरि के चूर्ण के साथ पिये ॥

अथ पित्त कफज्वर की यत्न ॥

शोधा हुआ पारा ५ टंक शोधा गंधक ५ टंक काली मिर्च ५ टंक सुहागा शोधा ५ टंक अदरक के रस में खरल करि सात पुट दे चार रत्ती की गोली दोनों समय खावे अथवा पारा शोधा १। गंधक शोधा १। अभ्रक शोधा १। धतूरे के बीज १। सोंठि २। पीपरि २। मिर्च । चोप १। पारा गंधक को प्रथम घोट कर पीछे सब दवा मिलाय अदरक के रस में घोटि गोली बाँधै दोरत्ती की गोली जँभीरी के गोझा में देवै अथवा लाल चंदन २५। कुटकी २५। मिश्री १। चूरण करि गर्म जल से फाँके तो पित्त कफज्वर दूर होय ॥

अथजूड़ीको यत्न ॥

जूड़ी आने के पहले हुरहुरा की पत्ती पीस कर दाहिने हाथ में अँगूठा के नीचे नस पर बाँधै अथवा लखोहरी की माटी गुड़ में लपेट कर खवावे अथवा काले धतूरे के बीज गोमूत्र में शुद्ध करके बिनुआँ कंडा में फूक कर उसकी भस्म एक रत्ती पान में देवै अथवा मदार की कली जो कि खिली न हो गुड़ में लपेट कर जूड़ी आने से पहिले खावे अथवा मदार की जड़ २ भाग काली मिर्च एक भाग दोनों को बकरी के दूध में पीस कर चने की बराबर गोली बनाकर एक गोली जूड़ी आने से पहिले खावे॥

अथ तिजारी व चौथिया की यत्न ॥

हींग नोन दो २ मासे एक सेर जल में औटावै जब एक छटाँक से कम रहे पीजावै अथवा नौसादर ३ रत्ती काली मिर्चें २ कूटछानकर बारी के दिन खिलावै--अथवा कलौंजी चारदाम महीन पीसकर शहद में मिलाकर चारदिन बराबर खावे अथवा

काले धतूरे के पत्ते पान के पते काली मिर्चे अढाई महीन कर काली मिर्च की बराबर गोलियां बनावे एक गोली सुबह शाम गर्म पानी से निगल जाय ॥

अथ सन्निपात की यत्न ॥

तिरकूट ३। नोन ५। सौंफ १। जीरा दोनों ३। पारा १। गंधक १। अभ्रक रस १। सबको कजरी करै फेर अदरक के रसमें घोटै आदी के रस सैंधव और चितावरि में देवै तो सबप्रकारस के सन्निपात दूरहोयँ अथवा शोधा पारा शोधा गंधक शोधा विष २५ टंक जायफल ६२ टंक पीपल १० टंक पारा गंधक की कजली करै तब दवा डालकर अदरक के रसमें घोट कर १ रत्ती की गोली देवै—अथवा जमालगोटा छीलि जीभी दूरि करि ४० मासे सोंठि मिर्च पीपरि चारि २ मासे लेकर जँभीरी के रसमें सात दिन घोटि अंजन करै अथवा शोधा पारा १२ शोधा गंधक १२ शोधा मैनसिल १२ शोधा सोहागा १२ सोंठि २५। पीपरि ३। मिर्च ३। पारा गंधक की कजरी करि फिरि सब दवा मिलाकर दो रत्ती प्रमाण अदरक के रसमें देवै--अथवा ब्राह्मी त्रिकुटा बंगरस केशर तज चिरायता अकरकरहा सोंचरनोन जीरा सब बराबर ले सबसे दूने दाख ले घोटकर एक टंक की गोली बाँधि प्रातः काल खाय अथवा बीरबहूटी सदाप सफेद लोबान त्रिया पारक शिलाजीत को लेके घोटै और अदरक के रसमें ७ पुट देकर मूंग बराबर गोली बाँधै १ गोली अदरक वा पान के साथ दे तो सन्निपात दरहोय ॥

अथ बवासीर की यत्न ॥

चिर्चिरा के बीज चांवल के धोवन में पीसि के पीने से खूनी बवासीर जाय अथवा बिधारा मिलावां सोंठि पीसि गुड़में गोली

बांधि खाय अथवा सूखे सूरन का चूर्ण ३२ भाग चीता १६ भाग सोंठि ४ भाग मिर्च २ भाग सबका चूर्ण करि गुड़में गोली बांधि खिलावे तो दोनों बवासीर दूरहों अथवा सूरन बिधारा सोलह२भाग मुशली८ भाग चीता८ भाग त्रिफला विडंग सोंठि पीपरि भिलावां पिपरा मूल तालीस चारि२ भाग तज इलाची मिर्च दो दो भाग इन सबका चूर्ण करि दुगुने गुड़में गोली बांधि छः मासे प्रमाण सबेरे साम खाय अथवा सौंफ पीले हड़ की छाल बहेरेकी छाल आमला दो दो टंक गूगल रसौत चार टंक गोंदनी के बीज१ टंक अंजीर४भाग किसमिस २ भाग कूटकर एक में मिलाकर गोलियां बनावेछःमासे के प्रमाण खाकर ऊपर से आधसेर गऊका दूध पीवे जब दूध का प्याला मुहँ में लगावे ऊपर से कागजी नींबू निचोर दे अथवा कुकरौंधे का रस एकसेर मधुर आंच में औटावे गाढ़ा होने पर एक टंक काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर गोली जंगली बेर की बराबर बना कर खावे अथवा कंघी की पत्तियां२१ काली मिर्च२१ पानी में पीस कर सात गोलियां बना कर सुबह शाम खावे अथवा घोड़े का नाखून और भांग एक२ तोला चूर्ण कर सेंक ले ऊपरसेभंग महीन पीसकर उसकी टिकिया गर्मकरकेबांधे ॥

पेट के कीड़ों की यत्न ॥

हींग, पोदीना, बायविडंग, देशी नोन पीली हड़ की छाल बराबर कूट छान कर गोलियाँ बनाकर जंगली बेर के प्रमाण खावे अथवा पीले हड़ की छाल बायबिडंग लाहैरीनोन कमीला कूट छान कर आधा दाम गऊ के दही के साथ खावे अथवा कालाजीरा ३ मासे बायबिडंग दरमना तुर्की दो दो मासे खोखली तुरबुद अफ्तैती सोंठ कतीरा एलवा एक २ मासा कूट छानकर गोलियाँ बनाकर खावे अथवा खट्टे अनार की छाल तूत की छाल दो दो तोले कुचल कर पानी में औटा कर साफ करके पिये अथवा बकायन की छाल २ तोले आठ सिकोरे पानी में

औटावें जब एक सकोरा भर पानी रहजावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खावे अथवा कँजुये के बीज पलासपापड़ा अजवायन कमीला बायबिडंग गुड बराबर ले कर गोलियाँ बनावे आधा टंक प्रमाण सुबह शाम खावे ॥

अथ बालकों की कांचानिकलआने की यत्न ॥

पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर उसकी राख गुदा पर छिड़कें अथवा पहिले गुदा पर तेलमलें फिर लसौढ़ा जलाकर पीस कर उस पर छिड़कें अथवा बबूल की फली पान धवई के फूल औटा कर उसके काढ़े में बैठे अथवा आँब की पत्तियाँ जामुन की पत्तियाँ और उसकी छाल दोनों जब कुट कर औटा कर उस जल से शौच करे अथवा अण्डे की सफेदी गुदा के बाहर भीतर लगावे अथवा जौ का आटा मसूर अण्डे की सफेदी गुल रोगन में मिला कर लेप करे अथवा सोंठ अँवरा एक २ टंक धनियाँ लहौरी नोन काला नोन दो दो टंक काली मिर्च चार टंक पिपला मूल बारह टंक कूट छान कर चूर्ण बना कर दो टंक खावे ॥

अथ भगंदर की यत्न ॥

हलदी आक का दूध सेंधानोन चीता शरपुंखी मजीठ कूड़ा ये सब दवायें कूटकर तेल में जला कर उसीका मलहम लगावे अथवा कूट निसोत तिल जमालगोटे की जड़ पीपल सेंधा नोन सहत हलदी त्रिफला तूतिया इनका लेप करे अथवा हर बहेरा आंवरा पीपल गुग्गुल शोधा ले कूट कपड़छान कर दो टंक प्रमाण सबेरे शाम खावे अथवा पारा२ भाग तामे का मैल४ भाग इनदोनों को पीसिकागलहरी के रसमें ५ दिन खरल करे तब तांबे के सम्पुट में धरै बालुका यंत्र में आठ पहर आंचदे जब स्वांग शीतलहो तब निकाल कर घृत शहदमें डुबावे तब पक्की मूली में धर उसकी

अंधमसी कर धौंकनी से धौंकै जब वह चक्कर खाके फिरै तब जल से काढ़ ले तब रस सिद्ध हुआ जान तीन रत्ती शहद में खाय तो निश्चय भगंदर दूर हो ॥

पथरी की यत्न ॥

गुलदावदी की पँखुरी साफ करके कूटछानकर बराबर शकर मिलाकर खावे या औटाकर पिये अथवा जवाखार सोहागा दो दो मासे पीसकर गुखरूके सीरा में पिये अथवा नींबके पत्ते जलाकर उसका खार निकालकर दो मासे खाया करे अथवा अंगूरकी लकड़ी की राख छः मासे गुखुरू के सीरा के साथ खाय अथवा करँजुवे की कोंपल जलाकर उसकी भस्म दो टंक १ तोला सिरके के साथ खाय अथवा जंगली कबूतर की बीट दो टंक बराबर शकर मिलाकर पानी के साथ फांके अथवा कबूतर की बीट सोये के बीज करँजुवा सौंफ की जड़ गुखुरू खरबूजे की छाल मेथी खतमी के बीज छीला ये सब दवा छः छः मासे ले कूटकर आधसेर पानी में काढ़ा करके पिये ॥

सूजाक की यत्न ॥

खुरफे के बीज सफेद खसखस के बीज खीरे ककड़ी के बीज खरबूजे के बीज तरबूज के बीजोंकी गरी पांच २ टंक छोटा गुखुरू समगअरबी कतीरा दो २ टंक ईसबगोल के लुआब में गोली ३ मासे की बनाकर खावे अथवा संगजराहत रार मिसरी दो दो तोले तालमखाना गुखुरू सरिवाली एक २ तोला कूट छानकर चौदह भागकर प्रतिदिन एक भाग बकरी के दूध की लस्सी के साथ फांके (पिचकारी की आजमाई हुई दवा) आँवरा हर्र की छाल बहेरेकी छाल आध आध पाव लेकर कोरी हंडी में भिगो दे एक सेर पानी में और धेलाभर फिटकरी सफेद पीसकर और दो रत्ती तूतिया पीसकर उसी मे छोड़कर एक

रात दिन भीगने के बाद हाथ से मलकर मट्टी के सिकोरे में थोड़ासा छानलेवे और कांच की पिचकारी से लिंग के छिद्र से दवा भीतर पहुँचावे पुराना से पुराना सूजाक तीन दिन में अच्छा होगा (खाने की अजमाई हुई दवा) ईसबगोल की भूसी और मिसरी एक २ तोला मिलाकर चारबूंद गंधाविरोजा का तेल उसी फंकी पर डालकर फांक ले ऊपर से गऊ का एकपाव दूध पीजावे या छः मासे जीरा आधसेर पानी में भिगोकर शामको रखदेवे सवेरे हाथ से मलकर छानकर फंकी के ऊपर पीजावे-अथवा ढाक की कोंपल मुलाकर ढाक का गोंद ढाक की छाल ढाक के फूल कूटछानकर उसके बराबर शकर मिलाकर छःमासे फंकी पावभर गऊके दूध के साथ खावे ॥

बहुमूत्र की यत्न ॥

तिल२ भाग अजवायन१ भाग लेकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर फांके अथवा लसोढ़ा के नर्म पत्तों का रस एक तोला शकर मिलाकर पिये अथवा इमिली के बीज की गरी सांहिंजन के पत्ते पीस कर नाभि के नीचे लगावे अथवा बबूर की कच्ची कली छाया में सुखाकर कूटछान कर घी में भूनकर शक्कर मिलाकर धेला भर सुबह शाम खावे ॥

मूत्र बन्द होजाने की यत्न ॥

राई कल्मी शोरा एक२ मासे बराबर शकर मिलाकर सुबह शाम एक२ मासा खावे अथवा गेंदे की पत्ती पानी में पीस रस निकाल कर थोड़ी शकर मिलाकर पीवे अथवा चूहे की मेंगनी छः मासे पानी में पीस कर नाभि के नीचे लेपकरै अथवा कनूचा पांच रत्ती पीस कर पानी के साथ फाँके अथवा गुखरू खीरा ककरी के बीज सौंफ खरबूजे के बीज पानी में पीस कर पिये अथवा शहतूत के रसमें कल्मी शोरा पीस कर नाभि के नीचे लगावे ॥

मूत्रमें रुधिर के आने की यत्न ॥

भिंडी की जर बांट छानकर मिश्री डालकर एक गिलास पीवे अथवा जवासा की जर बांट कर पिये अथवा अनार की छाल छिले मसूर पक्की बबूर फली, अलसी बाजरा चन्दन एक एक तोला डाल कर एक सेर पानी में औटाकर कुछ सोहाते हुए गुनगुने में इन्द्रिय को डाल कर बैठे ॥

धातु पुष्ट की यत्न ॥

तज मैदालकरी ढांक का गोंद तालमखाना समुद्रशोष सफ़ेद मूसरी बड़ी गुखुरू बराबर लेकर कूट पीस कर सबकी बराबर लाल शकर मिलाकर छः मासे एक पाव गऊ के दुग्ध में खाय अथवा कबाबचीनी लौंग अकरकरा सोंठ उर्द ईसबंद मिसिरी बराबर कूट छान कर पुराने गुड़सों गोली बांधि दो मासे रोज खाय तथा धोई उर्द की दाल का आटा सेमर का गोंद लाल शकर एक एक तोला लौंग३ मासे गोघृत१० मासे मिलाकर एक तोला प्रति दिन खाय अथवा असगंध कूट गँगेरुआ की जर अजमोद हर्र बहेरा आंवरा सोंठ विदारीकंद कचूर सेमर की छाल दोनों मूसरी मोथा धनियां मोचरस गजपीपरि तज पत्रज इलायची बड़ी बीजसार अनारदाना दोनों जीरा चीता भारंगी कमलगट्टा की मींगी करेछके बीज मुलहठी सौंफ सिंघारा कुरथी काकरासिंगी तानेसुर पोहकर मूल एक २ तोला लौंग छः मासे जायफर एक तोला छुहारा ऽ। दाख ऽ॥ छोटी इलायची के बीज १२। जाविन्त्री १२। ये सब दवा कूट कर कपरछान करै गाय के पांच सेर दूध में आधसेर धोई भांग पोटरी बांधि कै चुरवै जिसके पीछे सब दवा मिला कर एकसेर मिसरी डालकर गोलीः छटांक प्रमाण खावे ऊपर आधसेर गऊ का दूध पीवे अथवा कपास बीज की गरी खरबूजे के बीज चिरौंजी. तिल खसखस

अर्थात पोश्ता के दाना सेमरका मुसरा मूसरि सफेद शतावर असगंध सिंघारे का आटा छिले हुये इमिली के बीज लसोढ़ा एक २ तोला केवड़े के बीज पियाज के बीज शलगम के बीज मूलीके बीज बहुफली तालमखाना भुनाहुआ समुद्रशोष मैदा लकड़ी नौ २ मासे कुलींजन चीनियाँ गोंद नागर मोथा तज केवाच के बीच छोटागुखरू इन्द्रयव मीठे बबूरकी फली कमल की गरी धवके फूल सेमर का गोंद बीजबंद मोचरस छः छः मासे भुनी इस्पंद गुजराती उटंगनके बीज अकरकरा सोंठि पीपल खुरासानी अजवायन तीन २ मासे कूट कपरछान कर तिगुना शक्कर के जलाव में डाल कर बादाम की गरी पिस्ता चिलगोजा अखरोट की गरी एक २ तोला भंग २ तोला डालकर एक तोला खा कर ऊपर से दूध पिये अथवा एक सेर पीपरि छोटी दो सेर दूध में औटावे जब दूध सूख जावे पीपल को छाया में सुखा कर पीस कर ३मासा चूर्ण छः मासे मिश्री मिलाकर खावे ऊपर से आध सेर दूध पीवे अथवा चीनियाँ गोंद बहु फली बराबर पीस कर एक तोला प्रति दिन दूध के साथ चालीस दिन खावे अथवा गुखरू तीन टंक स्याह तिल तीन टंक इनको कूटकपरछान कर एक सेर दूध में मिला कर खोवा बनावे तब एक छटांक प्रति दिन इक्कीस तथा बयालीस दिन तक खावे अथवा तालम खाना ४ तोले नगदबवची ४ तोले ईसबगोल ४ तोले इमली बीज ४ तोले बीजबंध ४ तोले केवांच बीज ४ तोले नागरमोथा ४ तोले बबूरकी गोंद ४ तोले ये सब दवा कूट कपर छान कर घी ३६ तोले पुराना गुड़ ३६ तोले मिला कर प्रति दिन एक तोला खाय संयम से रहै अथवा छोहारा १० टंक पिस्ता ४ टंक जटामासी २५ टंक केवांचकेबीज २५ टंक तेजपत्र २५ टंक नागकेशर २५ टंक बादाम की गरी ४ टंक जायफर २५ टंक दालचीनी २५ टंक केसर २५ टंक बच २५ टंक सोंठि २५ टंक कमलगट्टा २५ टंक चिरौंजी २५ टंक जावित्री २५

टंक सब दवा कूट कपरछान कर पांचसेर दूधका खोवाकरके ढ ईसेर मिश्री और१६तोले घी मिलाकर फिर अभ्ररवरस लोहारस बंगरस एक एक तोला मिलाकर लड्डू बांधि आधी छटांक मात्रा खावे ऊपरसे दूध आधसेर पीवै अथवा सत सिलाजीत सतगंधापिरोजा सतगुर्च सालममिश्री रूमीमस्तगी केवाँच के बीज उटंगन बीज बंसलोचन गुजराती इलाची शतावर मूसर दक्खिनी सेमर मुसरा बिदारीकंद चीनियां गोंद बबूर की कच्चीफली बीजबंध व हमन सुर्ख व हमन सफेद तालमखाना ये सब दवा बराबर कूट कपर छान कर आधी मिश्री मिलाकर एक तोला प्रतिदिन फांक कर ऊपर से एक पाव गाय का दूध पीवे॥

इन्द्री की निर्बलता की यत्न॥

महीन कपड़ा तीन बेर थूहर के दूध में भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रसमें भिगोकर सुखावे फिर एक दिन रात अलसी के तेल में भिगोकर लिंगका शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपरसे यह पट्टी चारघड़ी बाँधकर फिर निकाल डाले यदि आवश्यकता हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे अथवा महीन कपड़ा आँबा हल्दी में रँगकर सुखावे फिर धतूरे के रसमें तीन बेर फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया मे सुखावे फिर भैंस के घृत में मधुरी आँचपर भूनकर आवश्यकता पर पट्टी पर शहद लगाकर हीराहींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उसपर छिड़क कर तीन दिन बाँधे अथवा मदार का दूध आधपाव साफ़ शहद अढ़ाई पाव कढ़ाही में डाल कर लोहे के दस्ते से इतना घोटै की लसआजावे और लसके कारण कड़ाही दस्ते से उठाने लगै फिर चारमासे अफ़ीम डाल कर घोट कर चीनी के बर्तनमें रखकर आवश्यकता के समय लिंगका शिरछोड़ कर यह तेल मलै फिर उसपर बँगलापान लपेट गज्जी की पट्टी से लपेट कर एक पहर बांधै

उपरान्त इक्कीस वेर का धोयाहुआ गऊ का घी लिंगपर मलै तीन दिनतक लगातार यही क्रियाकरै अथवा जमाल गोटा १७ दाने पिश्ता १७ दाने छिलका निकाल कर चमेली के तेलमें इतना खलकरै की मिलजावे तब उस इन्द्री की जड़ पर नीचे ऊपर लगाकर दोनों किनारों में बादाम का तेलमलै सात दिन यही क्रिया करै यदि छालापड़जावे तो मक्खनलगावे सुस्ती दूरहो अथवा मारुबैंगन जो दरख्त में पककर पीला होगयाहो लेकर उसमें सातपीपलें छोड़ कर लटकावे जब बैगन सूखजावे आधसेर मीठे तेलमें उसे औटावे जब तेल औटजावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में मिलावे जब केंचुवे जलजावे लहसुन छील कर उसमें डालें फिर खरलकर के एक शीशे में रक्खें और प्रतिदिन पर्य्यन्त हररोज एक मासा भर लिंगपर मलकर बरगद या लसोढ़े के पत्ते उसपर बाँधे अथवा सफेद घुँघची अकरकरा बीरबहूटी सवातीन २ मासे संखिया एक मासे दो आतशेशराब में तीन दिन खरल करके रात्रिको लिंगपर लगाकर उसपर बँगलापान कच्चे तागे से बाँध कर सो रहैं इसी प्रकार सात दिन पर्यन्त बाँधे इतने बीच में स्त्री प्रसंग कदापि न करै ॥

बँधेज की यत्न ॥

अकरकरा एक टंक केसर २ टंक जायफर ३ टंक लौंग तीनटंक सिंगरफ छः टंक अफीम ५ टंक ये सब चीजें एक में मिला खरल कर मधु में गोली बांधै चना भर शाम को एक गोली खाय ऊपर से एक सेर अधौटा दूध पीवे तो बंधेज हो अथवा केशर लौंग जांवित्री जायफल खपरिया अजमोदा माजूफल समुद्र शोष मोट की जड़ मस्तंगी कुलींजन अफीम सिंगरफ बत्सनाग कस्तूरी कपूर सब बराबर ले कूट छान कर शहद में गोली बांध कर मटर सम छोटी गोली बनावे एक गोली शामको खाय ऊपर से एक

सेर अधौटा दूध पीवे थूहर का दूध गऊका दूध दोनों बराबर लेकर सारे दिन धूपमें रक्खे रात को तेल में मलें जब सूख जावे दो घड़ी पीछे मैथुन करे अथवा काले धतूर की पत्तियों का रस निकाल कर दोनों टखनों पर लगावें जब सूख जावे भोग करे अथवा कपूर कटाई जीरे के साथ शहद में पीस कर छोटे जीरे की बराबर शाफा बना कर लिंग के छिद्र में रक्खें एक साइत के पीछे मैथुन करे अथवा हींग खाली शहद में पीस कर जीरे के सदृश बत्तियां बना कर एक बत्ती लिंग के छिद्र में रक्खे अथवा कौंचकी जड़ उँगलीके पोरकी बराबर भोग के समय मुखमें रक्खे ॥

अथ अण्ड वृद्धि की यत्न ॥

दारू के जड़की छाल छाया में सुखा कर महीन पीस छान कर सात मासे ताजे पानी से फांके अथवा ऊंट की मेगनी और थोड़ी हलदी औटावे जब गाढ़ी होजाय पीस कर गुनगुनी फोते पर लेप करे अथवा आध पाव भंग आध पाव जल में औटावे जब आधा शेष रहे उस जल में फोते को धोवै अथवा बकरी की मेंगनी जला कर अजवायन खुरासानी बराबर लेकर पानी में पीस कर गुनगुनी लगावे अथवा अरंड की जड़ सिरके में पीस गुनगुनी लगावै अथवा छिले मसूर अनार की छाल बराबर पानी में पकावे जब गलजावे पीस कर गर्म लेप करै अथवा टेसूके फूल जोश देकर बफारा ले पीछे वही फूल गुनगुने बांधै अथवा जिस तर्फ के फोते में सूजन हो उस ओर की ऊपर नस जो इन्द्री के बगल में बराबर पर है उसको सुबह शाम पाखाने जानेकेसमय दबावे और अंडी का तेल अँगूठे में लेकर आग में दिखा २ कर उस नस को खूब मलै पीछे से अंडा के पत्ता उसी का तेल लगाकर गर्मकर बांधै अथवा केला के फूल की लाल पँखुरी घी लगाकर आग में सेंक २ कर बाँधै अथवा अंडी का गूदा पीस

कर गर्म करके दो तीन बार लगावे अथवा माजूफल असगंध पानी में पीस कर गुनगुना लेप करै ॥

स्त्री के बांझ होने की यत्न ॥

हाथी का ताजा लेंड़ निचोड़ कर एक तोला शहद में मिला कर ऋतु होने के पीछे तीन दिन पिये अथवा नौसादर फिटकरी पानी में पीस कर ऋतु के पीछे भग में रख ले अथवा प्रतिदिन सुबह एक समूची लौंग निगले अथवा चमेली की जड़ और गुले-चीनियाँ का जीरा बराबर पीस कर छाया में सुखाकर ऋतु के प्रारंभ में तीन दिन खावे अथवा काली जीरी काबली हड़ के बीज नागेसर नरकचूर कलौंजी कायफर हर एक पांच टंक कूट छान कर गोलियाँ बनावें ऋतु के समय से स्त्री सात दिन पर्य्यन्त एक२ गोली खावे अथवा सोहागा भून कर छः मासे रोज फाँके॥

गर्भ गिराने की यत्न ॥

इन्द्रायण निचोड़ कर उसमें रुई डुबोकर भग में रक्खे अथवा बथुआ के बीज डेढ़ तोला आधसेर जलमें औटावे जब आधापानी शेष रहे छानकर पिये अथवा सहिंजने की छाल गुड़ के साथ औ-टाकर पिये अथवा ऊंटकटारे की जड़ पानी में पीसकर स्त्री के पेट पर लेप करै अथवा घोड़े की लीद अपने आगे जलावे और बफा रा ले अथवा शोरा छः मासे निहारमुहँ खावे अथवा गाजर के बीज सोये के बीज मेथी छः टंक दो सेर जल में औटावे जब एक सेर रहै मलकर छानकर सात दिन लगातार पिये ॥

भग के संकीर्ण करने की यत्न ॥

बैंगन सुखाकर पीस कर भग में रक्खे अथवा ढाँक की कली छाया में सुखा कर बराबर शकर मिला कर तीन टंक रोज खावे अथवा केंचुआ सुखाकर भग में मलै अथवा बबूल की छाल झलबेरी की छाल मौनसिरी की छाल कचनार की छाल अनार

की छाल बराबर लेकर थोड़े जल में औटाकर उस जलसे शौच करै औटने के समय एक सफेद कपड़ा उसमें डालदे जब रंगीन हो जावे थोड़ा कपड़ा भगमें रक्खे अथवा ढाक की कोंपल छाया में सुखावे और कूट छान कर उसके बराबर मिसिरी मिला कर छः मासे रोज खावे अथवा इमिली के बीज की गरी कूटछान कर सुबह और शाम भगमें मला करै अथवा समंदर झाग हड़ के बीज की गरी बराबर पीस कर भगमें रक्खे॥

स्त्री के प्रदर रोग की यत्न॥

सोंचरनोन जीरा सुफेद जेठी मधु कमल गट्टा बराबर ले चूर्ण कर एक तोला शहद में खावे—अथवा मुलहटी ढाई टंक चौराई की जड़ का रस दो टंक शहद में मिलाकर खावे—अथवा कुश की जड़ बाँट कर चाँवल के धोवन में पिये अथवा गंदेपिरोजे का सत जावित्री बराबर पीस कर एक तोला या छः मासे फाँक कर ऊपर से एक पाव गाय का दूध पीवे॥

स्त्री के ऋतु के रुधिरके अधिक बहने की यत्न॥

बकायन की कोंपल एक तोला भंगकी तरह घोटकर रस निकाल कर पिये अथवा कपास के फूल जलाकर उस की राख एक हथेली भर पानी के साथ फांके अथवा मसूर अरहर उड़द दो तोले सांठी के चावल एक तोला सबको जला कर महीन पीस कर एक हथेली भर खावे॥

ऋतु के रुधिर के बंद हो जाने की यत्न॥

तोंबा सुर्ख मजीठ मेथी गाजर के बीज सोये के बीज मूली के बीज अजवायन सौंफ तितिली की पत्तियां गुड़ बराबर मिला कर औटाकर पिये अथवा कपास के पत्ते और फूल आधपाव एक सेर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे चार तोले गुड़ मिला कर पिये अथवा अध कुचली नींबकी छाल दो तोले अध कुचली

सोंठ चारमासे गुड़ दो तोले डेढ़पाव जल में औटावे जब आध पाव जल शेषरहै छान कर पिये अथवा कालेतिल गुखुरू एक२तोला रातको जल में भिगोदे सुबह को रस निकाल कर थोड़ी शकर मिलाकर पिये अथवा मजीठ पीसकर एक हथेलीभर फांके ॥

गर्मी की यत्न ॥

रसकपूर नौमासे काली मिर्च इकइस दाने कूट छानकर चूर्ण बनाकर सातभाग कर एक भाग निकाल कर छः भाग एक सुबह एक शाम बकरी या गाय के दूध के साथ खावे भोजन सात दिन पर्यन्त फीके दूध चावल फिर कचनार की छाल माजू-फल चमेली की पत्तियां औटकर उसी पानी से कुल्ली करै अथवा पीले हड़की छाल काली हड़की छाल सुनातूतिया जली हुई पीली कौड़ी बराबर लेकर नीबू के रसके साथ लोहे के बर्तन में १८ पहरखरल करके कालीमिर्च की बराबर गोलियां बनाकर हररोज एक गोली पानमें पन्द्रह दिन पर्यन्त खावे और थोड़ी गोलीको पीसकर कागज पर रखकर घावपर लगावे जो मुंह आवे कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करै अथवा हरी तुलसीकी पत्तियां चार टंक सब्ज तूतिया एक दाम पीसकर बेरकी बराबर गोलियां बनावें खूराक एक गोली सुबह को और भोजन बिना घीकी खिचड़ी खावे अथवा कत्था संखिया इलायची के दाने खड़िया मिट्टी बराबर ले गुलाब या पानी में खूब पीसकर जुवारके बराबर गोलियां बनाकर बारह दिनतक रोजएक गोलीखावें जो निर्बलता सूचितहो एक दिन बीचदेकर खावें गरुई और बादी चीज चौपाये का मांस और खटाई से बिलकुल पथ्य करै-गेहूं की रोटी गाय का घी मूंगकी दाल खाना चाहिये अथवा मदार की जड़ पांच टंक काली मिर्च अढ़ाई दाम कूट छानकर गुड़में मिला कर जुवाँर की बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावें खटाई और बादी से पथ्य करैं अथवा काली हड़ चार दाम काली मिर्च एक दाम

सब्ज तूतिया चौथाई दाम कागजी नीबूके रस में खरल करके जंगली बेरके बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम कागजी नींबू के रस के साथ चालीस दिन तक निगल जाया करैं अथवा पाग अकरकरा अजवायन मोचरस छः छःमासे सात मासे गुड़ ७मासे सबकी बराबर तिल मिला कर गुड़में चौदह गोलियां बनावें एक गोली सुबह और एक शामको दही के साथ खावें ॥

कुष्ठ की यत्न ॥

काली हड़ चीता दश २ टंक काली मिर्च ५ टंक बच्छ नाग अढ़ाई टंक कूट छान कर गायके घीमें भूनकर दुगुना शहद मिला कर एक तोला खावे अथवा हरताल की भस्म चालीस दिन लगातार खावे अथवा (वैद्यों की अजमाई हुई दवा) पुरानी नींब के फूल फल पत्ती छाल जड़ आध२ सेर काली मिर्च पीले हड़ की छाल बहेरे की छाल आमला बावची पाव २ भर कूट छान कर चूर्ण बनावे खूराक एक तोला सुबह एक तोला शाम मजीठ के काढ़े के साथ चार महीना सेवन करै मांस नमक और गर्म पदार्थ से पथ्यकरै अथवा नींब का पानी जो कि अक्सर नींब से निकलता है छानकर प्रतिदिन दो तोला शहद से खावे ऊपर से एक छटांक घी खावे यह न होसकै तो नींब के फूल घी में तलकर नमक मिर्च मिलाकर प्रतिदिन एक छटांक खावे या नींब की कोंपल एक मुह सबेरे निहारमुह खावे।

गठिया की यत्न ॥

उसवामगरबी ७ तोले सनायकी पत्ती अढ़ाई तोले संपू २॥ तोले बिसपैज २ तो० सहदरा २ तो० लाल चंदन का चूर्ण१ तो० मिश्री ७ तो० शहद ७ तो० पहले उसवा को एक सेर पानी में चुरावे आधा रहे तब मिश्री शहद डालकर चासनी

करै तब दवा कूट कपड़छानकर चासनी में मिलाकर ६ मासे से एक तोला तक खावे· अथवा अंडी के दाना छीलकर एक दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाना इसीतरह सात दिन बढ़ाकर फिर एक २ घटाता जाय १४ दिन खावे तो गठिया दूरहो ॥

मालिश का तेल ॥

अंलसी का तेल ऽ। तिली का तेल ऽ= करू तेल ऽ=धतूरे का बृक्ष सहित जड़ फल फूल के कूट कर तेलमें चुरवै जब दवा जल जाय तेल रह जाय बदन में लगावे अथवा आध सेर ताड़पीन का तेल चौड़े मुह के शीशा में रख कर एक छटाँक कपूर के टुकड़े डाल कर डाट से मुहँ बन्द कर दे जब कपूर गल जाय मालिश करै गठिया दूर हो ॥

सफेद दाग की यत्न ॥

असगंध बायबिडंग चीता भिलावां जमाल गोटे की जड़ अमलतास निंबोली इनको कांजी में पीसि कै लेप करै अथवा हरताल ४ मासे बावची १६ मासे गोमूत्र मे पीसि लेप करै अजमाई हुई अकसीर दवा काला भंगरा पीसि रस निकारि तिस में लाल चंदन घिस लेप करै अथवा बनाई हुई छिली बावची कठूमर की जड़ की छाल नींब की जड़ की छाल तथा डाली की छाल बराबर लेकर कूटछान कर रक्खे और कत्थे की लकड़ी के दो टुकड़े करके एक हिस्सा अठगुने जल में औटावे जब आधा शेषरहे साफकर के उक्त औषधैं मिलाकर गोलियाँ बनावे और एक टंक से डेढ़ टंक पर्यन्त खावे ॥

बावची बनाने की बिधि ॥

लाल रंग की बिन व्याई गऊ के मूत्रमें २१ दिन भिगोकर बाद छिलका निकाल कर छायामें सुखावे ॥

नाहरू की यत्न ॥

नाहरू और सूजन में गुनगुना तेल मलकर मदार की पत्ती से सेंक करै फिर वही गुनगुने पत्ते सूजन पर बाँधै अथवा सफेद बिसखपरे की जड़ उसके पत्तों के रस में पीसकर नाहरूपर बाँधै अथवा जमालगोटा पीस कर लेप करै अथवा कलौंजी दही में पकाकर लेप करै अथवा सात दाने बकायन के हर रोज निगल जावै ॥

अथ शीत पित्तकी यत्न ॥

सज्जी खार और सेंधानमक करुये तेल में मिलाकर शरीर मे एक घंटा मालिश करै फिर गर्म पानी का सेंक अर्थात बफारा लेवे अथवा गेरू तेल में मिलाकर मालिश करै और कोई ऊनी कपड़ा पहिनै या ओढ़ै अथवा रसौत काली मिर्च अफीम नींब की पत्तियां चाकसू की गरी पेठे के बीज बराबर कूट छानकर बाजरे के बराबर गोलियां बनाकर देवे यदि बालक के हो तो माता के दूध में पीसकर खिलावे ॥

दाद की यत्न ॥

राल गंधक सुहागा खुरासानी अजवायन कूट छानकर पानी से गोलियां बनाकर दाद को खुजलाकर लगावे--अथवा मुर्दासंख गंधक नौसादर सुहागा माजूफल कालीमिर्च सफेद कत्था अफीम चीनियां गोंद कूट छानकर गोलियां बनावे और नींब के रस में पीसकर लेप करै अथवा मदार के फूल पवाँर के बीज कूट छान कर खट्टे दही में मिलाकर लेप करै अथवा इमिली के बीज नींब के रस में पीसकर मलै अथवा सूखा सिंघारा नींबू के रसमें पीसकर लगावै अथवा हरसिंगार की पत्तियां पीसकर लगावे अथवा हल्दी जलाकर पीसकर चूने और पानी में मिलावे और दाद को खुजलाकर लगावै ॥

खुजली की यत्न ॥

नींब की पत्ती २ तोले पानीमें पीसकर एक छटांक के अंदाज पीवे अथवा कडुवा चिरायता शहतरा जंगीहड़तीनों औषधि तोला भरले रात को पानी में भिगोदे सुबह पीसकर साफ करके पीवे [तेल] पवाँर के बीज एक सेर गंधक एक दाम एक सेर गाय का दूध और घी ऽ। सब मिलाकर औटावे जब घी शेष रह जाय लेकर मलै अथवा घुँघची आँवला काली मिर्च एक२ तोला तूतिया नौमासे हड़की छाल १ तोला तेल करुआ एक पाव पहले घुंघची को तेल में जलावे फिर हड़ आमला तूतिया जुदा२ जलाकर काली मिर्च पीस कपरछानकर तेल में मिलाकर मले [सूखी खुजली को] चमेली का तेल नींबू का रस बराबर मिला कर मालिश करै ॥

बगल की दुर्गन्धि की यत्न ॥

चूना पानीमें पीसकर लगावे अथवा जामुनकी छाल और पत्ती पानी में औटाकरउससे बगल धोवै अथवा झाडू की पत्ती पीसकर मलै फिर गर्म पानी से धोवै ॥

हाथ पांव में अधिक पसीना निकल ने की यत्न ॥

मूंग जला कर पीसकर मलै अथवा कुरथी, पीली कौड़ी जलाकरमलै अथवा बबूल की सूखीपत्तियांपीसकरहाथपाँवपर मलै

फोड़ापकाने की यत्न ॥

नैनियां की पत्ती पानी में पीस कर गर्म कर के टिकिया बांधै अथवा मेथी बांट कर थोड़ासा नमक मिलाकर गर्म करके बांधै अथवा अलसी पीस कर जरासा नमक मिलाकर गर्म कर बांधै (बैठ.ने की यत्न) पीपलके मुलायम पत्ते घी चुपड़ कर गर्म कर के बांधै अथवा बँगला पान शहद चुपर कर गर्म करके बांधै अथवा मैनफर घिसकर गुनगुना लेपकरै ॥

घावके पूरने की यत्न ॥

सेमकी पत्ती पीस कर तेल में जलाकर मलहम कर लगावे अथवा नींब की कोंपल पीसकर तेलमें जलाकर अढ़ाई मिर्च डाल कर लगावे अथवा कनैर की सूखी पत्तियां पीसकर घाव पर छिरके अथवा संगजराहत पीसकर छिरके अथवा भुनी फिट-करी महीन पीस कर छिरके ॥

आतशक नासूर और घाव को हितकारकमरहम॥

राल, हिरमिंजीपट्टी छः२ मासे तूतिया सब्ज दो रत्ती मीठे तेल में खरल करके जखम पर लगावे अथवा सरसों का तेल जंगार चार मासे संगजराहत एक दाम मोम एक दाम आधी छटांक तेल में पकाकर जखम पर लगावै ॥

बरसाती दानों की यत्न ॥

मसूर के छिलके जलाकर आंवला जलाकर उसके बराबर मेंहदी कमीला थोड़ा तूतिया भुना थोड़े तेल में मिलाकर दोनों पर मलै अथवा सफेद सज्जी फिटकरी पीसकर चूनेमें मिलाकर दानों पर मलै ॥

उकौत की यत्न ॥

जली हुई सुपारी जली हुई हलदी जली हुई बावची एक२ दाम मेंहदी कत्था भुना सुहागा भुनी फिटकरी आधा२ दाम मसूर की दाल भुनी पोश्ते का दाना भुना तीन२ दाम काली मिर्च चौथाई दाम सब कूट छान कर सरसों के तेल में मिलावे पहिले तीनदिन ढांकके पत्ते गर्म करके बांधे फिर यह तेल लगावे अथवा महुवे के पत्ते मीठे तेल से चुपरकर गुनगुने करके बांधै ॥

नासूर की यत्न ॥

पुराना कम्मल जलाकर सब्ज तूतिया कूट छान कर नासूर पर छिरके अथवा सांपकी केंचुली जलाकर बर्गद के दूधमें

मिलाकर बत्ती भिगोकर या रुई भिगोकर नासूरपर रक्खे अथवा गूलर के दूध का फाहा नासूरपर रक्खे ॥

आगसे जलजाने की यत्न ॥

इमिली की छाल पीसकर गायके घीमें मिलाकर मले अथवा बरगद की कोंपल दही में पीस कर मले अथवा अनार की पत्तियां पीस कर लगावे अथवा जव जलाकर तिल्ली के तेलमें मिला कर लगावे ॥

लकवा की यत्न ॥

सनके बीज सवा तीन तोले शहद में मिलाकर १५ दिन खावे अथवा बच ३ तोले काली मिर्च पोदीना स्याह जीरा कलौंजी दश २ मासे कूट कपड़छानकर पाव भर शहद में मिलाकर ७ मासे प्रतिदिन खावे—(लेप) काली मिर्च महीन पीसकर तेल में मिला कर गर्म कर पतला लेपकरै ॥

(तेल) कनेर की जड़ का छिलका सफ़ेद चिमिर्टी की दाल काले धतूरका पत्ता फ़ीदवा दो तोले चार मासे ले कूटकर टिकिया बनाकर एक पाव तेल में घोंटै फिर अग्नि पर पकाय ठंढा करके लगावे ॥

मुहासों की यत्न ॥

बेरकी गुठली की गरी मुलहठी कठ बराबर पानी में पीसकर मुँहपर मलै अथवा जवासा पानी में औटा कर उस से मुहँ धोवे—अथवा नरकचूर पानी में पीसकर लगावे ॥

मुख का रंग उत्तम हो ॥

पीली सरसों आध पाव दूधमें औटावे जब दूध सूखजावे सरसों सुखा कर पीसकर उबटन लगावे अथवा झरबेरी के बेर जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर लेपकरे ॥

झाईं की यत्न ॥

आँव की बिजली जामुन की गुठली पानीमें पीसकर लगावे-अथवा कुलींजन पानी में पीसकर कई दिन लगावे अथवा मसूर नींबूके रसमें पीसकर लगावे ॥

मसे और तिल की यत्न ॥

चूना सज्जी पानी में घोलकर मस्से को जंगली कंडेसे खुजला कर मले अथवा धनियां पीसकर लगावे अथवा सीपी जलाकर सिरके में मिला कर लेप करै ॥

बद की यत्न ॥

केले की जड़ मनुष्य के मूत्रमें पीसकर गुनगुना करके पर रखकर लगावे-अथवा पीपल के पत्ते सीधी ओर गर्म कर बांधे अथवा लसौढ़े के पत्ते गुनगुने बांधे अथवा घीकुवार का पाठा बीच से फाड़ कर थोड़ा रसौत और हल्दी पीसकर उसपर रखकर गुन-गुना करके बाँधे ॥

शोथ की यत्न॥

हल्दी गेरू सोंठ बिसमार बराबर कूटछानकर गोलियाँ बनाकर मकोय के पत्तों के रसमें लेप करै—अजवायन महीन कूटछानकर नींबूके रसमें पका करलेप करै अथवा बकरी की लेंड़ी पानी में पीसकर गुनगुनाकर लेप करै ॥

फुंसी की यत्न ॥

गेरू माजू कत्था सिरके में पीसकर लेपकरै अथवा सफेद जीरा सोंठ पानी में पीसकर लेपकरै ॥

मकरीकेदानोंकीयत्न ॥

महुआ पानीमें पीसकर लगावे अथवा केचुवा की मट्टी का लेप करै अथवा चूना नींबू के रस में मिलाकर लगावे ॥

हाथ पावं के फट जाने की यत्न ॥

मेंहदी पानी में पीस कर लगावे चार घड़ी के बादगर्म पानी से धोकर अंडी का तेल मले अथवा साबुन लाहौरीनमक पानी में पीस कर लगावै ॥

छंजन की यत्न ॥

बबूल की छाल आंब की छाल आधर सेर हांड़ी में दो सेर पानी डालकर औटावै हांड़ी का मुख बंद रक्खे चुरने के बाद बफारा ले फिर उसके बाद घी या मक्खन मलै ॥

जुवां की यत्न ॥

पारा मूली की पत्तियों के रस में या पान के रस में खरलकर के उसमें तागा भिगोकर शिर में रक्खे अथवा नींब का तेल बालों में लगावे ॥

बाल बढ़ाने की यत्न ॥

नींब के पत्ते और बेर के पत्ते पीस कर नहाने के समय शिर में लगावै चार घड़ी पीछे धोडाले अथवा आँवला नींबू के रस मे पीस कर बालों की जड़ में मले अथवा करीठ की जड़ पीस कर बालों में मलै ॥

बाल न निकलने की यत्न ॥

जोंक को नोन में लथेड़ कर सुखाकर बकरी के मूत्र में पीसकर बाल उखाड़ कर लगावे फिर न जमैं अथवा ईसबगोल का लुआब सिरके में मिलाकर लगावे-बाल उखाड़ कर पीछे चींटी के अंडे लेप करै ॥

बाल गिरकर फिर न निकलने की यत्न ॥

चूहे की मेंगनियां सिरके में मिलाकर लेप करै अथवा लसोढ़ा पानी में औटाकर गाढ़ा होनेपर बाल गिरने की जगह पर मले अथवा बिच्छू मीठे तेल में जला कर लेप करै ॥

